प्रेमदीप



चमन सिंगला

प्रेमदीप
(उपन्यास)



दीपक पब्लिशर्ज, माई हीरां गेट, जालन्धर-144 008

प्रेमदीप



चमन सिंगला



प्रथम संस्करण : जनवरी, 1986

PREMDEEP
(NOVEL)
CHAMAN SINGLA

First Edition :
January, 1986
Price : Rs 35

DEEPAK PUBLISHERS
Mai Hiran Gate
JALANDHAR-144 008

प्रेमदीप
(उपन्यास)
चमन सिंगला

प्रकाशक :
दीपक पब्लिशर्ज़,
माई हीरां गेट,
जालन्धर-144 008

मुद्रक :
सैनी कम्पोजिंग हाऊस द्वारा
कम्पोजिंग और सैंटो प्रिंटर्ज़
द्वारा मुद्रित ।

आवरण :
सुखवन्त



भाषा विभाग, पंजाब के सहयोग द्वारा प्रकाशित

लेखक की अन्य रचनाएं

सिसकते सपने
मैला आंचल
गांव की गलियां
प्यासी लहरें
बेगम शमीम
प्रतीक्षा
विभिन्न समाचार पत्रों पत्रिकाओं में पचास से अधिक कहानियां

प्रेमदीप

(उपन्यास)



चमन सिंगला

"शामू!"

कोई उत्तर न पाकर वह रसोई के निकट चली आई। उसने फिर आवाज़ दी, शामू s s!

"जी, मिस साहिब।" रसोइया लपक कर उधर आया।

"किधर था तू?"

"स्टोर में था। हुक्म कीजिए।"

"चाय का कप चाहिए।"

"अभी लाया।" शामू रसोई में गया। वह स्टोव को पम्प मारने लगा। सू-सू-सर्र-सर्र की आवाज़ होने लगी। उर्मिला अपने कमरे में चली आई थी। मैगज़ीन उठा कर वह उसके पन्ने पलटने लगी। पढ़ने में उसका मन नहीं लग रहा था। वह तो कहीं और भटक रहा था।

"चाय लीजिए, मिस साहिब।"

"इधर रख दो।" उर्मिला ने मेज़ की ओर इशारा किया।

"कुछ और चाहिए?"

"पानी का गिलास भी लाना।"

"जी बहुत अच्छा।"

शीघ्र ही शामू पानी का गिलास ले आया। उर्मिला के हाथ में गिलास देने के पश्चात् वह जाने को ही था कि उसकी आवाज़ से नौकर के कदम रुक गए।

"ज़रा सुनना!"

शामू हुक्म बजा लाने की मुद्रा में खड़ा हो गया। पानी का घूंट भरते हुए उसने पूछा, "कौन था वह?"

"कौन जी?"

"वही जो थोड़ी देर पहले डैडी के कमरे में खड़ा था।"

शामू क्षण भर के लिए सोच में पड़ गया। अपनी स्मरण शक्ति पर बल डालते हुए उसने कहा, "आप उस ड्राईवर के बारे में तो नहीं पूछ रहीं?"

"वह खाकी पैंट वाला ड्राईवर है?"

"जी हां, आज ही आया है वह।"

"कहां से आया है वह?"

"यह तो ठीक से पता नहीं। सुना है साहिब के एक दोस्त ने भेजा है।"

"अच्छा जाओ अब।"

वह कमरे से बाहर कदम रखने ही लगा था कि उर्मिला ने उसे पुनः बुला लिया। उत्सुक दृष्टि से वह अपनी मिस साहिब की ओर देखने लगा।

"उसे ठहराया कहां गया है?"

"वहीं ड्राईवर वाले क्वार्टर में जो इधर सामने है।" शामू ने क्वार्टर की ओर इशारा किया।

"वह क्वार्टर तो बड़ी खराब हालत में है।"

"ड्राईवर को तो वहीं ठहराया जाता है। साहिब का भी यही हुक्म है।"

"देखना, उसे कोई कष्ट न हो।"

"जी! वह इस वाक्य को समझ नहीं पा रहा था। उसने उर्मिला की ओर यूं निहारा जैसे वह पूछ रहा हो, "आपको उसका इतना ख्याल क्यों?"

उर्मिला अपनी गलती को महसूस कर गई थी। झेंप मिटाते हुए वह बोली, "जो कोई यहां आता है टिकता नहीं। शीघ्र भाग जाता है। ड्राईवर न होने की हालत में डैडी को असुविधा होती है। किसी न किसी तरह यह नया ड्राईवर टिक जाए तो अच्छा है।"

"आप ठीक कह रही हैं। मैं ख्याल रखूंगा उसका।"

शामू चला गया। उर्मिला अपने कमरे में तनहा थी। उसके हृदय में हलचल मची हुई थी। जैसे शांत झील के पानी में किसी ने पत्थर मार दिया हो। मैगज़ीन खोल कर वह बिस्तर में बैठ गई। लगता था यह मैगज़ीन न होकर पर्दा हो। उस पर्दे पर या तो कुछ नहीं दीखता या उस नवागन्तुक की धूमिल सी छवि। उसने उसे दूर से ही देखा था। उसकी शक्ल-सूरत के बारे में वह तरह-तरह की कल्पनाएं करने लगी। बेताब सी हुई वह कमरे से उठ कर गैलरी में चली आई। ड्राईवर का क्वार्टर उसके कमरे के सामने था। उसकी दृष्टि इधर-उधर भटक कर ड्राईवर के क्वार्टर के द्वार पर ठहर जाती थी। देर तक वह वहां खड़ी रही। क्वार्टर का द्वार उसी तरह बन्द रहा। न कोई अन्दर गया न बाहर आया। मायूस होकर वह पुनः कमरे में चली आई।

आज कोई उसके ख्यालों पर इतना छा गया था कि ख्याल, ख्याल नहीं रहे थे, बस ख्वाब बन गए थे। उसके कालिज में सहशिक्षा थी। सुन्दर से सुन्दर और एक से एक बढ़ कर अमीराना ठाठ-बाठ वाले युवक उसके सम्पर्क में आते रहते थे। पर आज जो अनुभूति उसे हो रही थी वह अभूतपूर्व थी। उस पर जादू सा चल गया था।

दूर एक पहाड़ी के पीछे सूर्य अपनी स्वर्णिम किरणें समेटता हुआ गरूब हो रहा था। वातावरण शान्त और पुरस्कृत था। प्रांगण में खड़े वृक्ष खामोशी में डूबे हुए थे। वायु के झोंके उनमें सरसराहट सी पैदा कर जाते थे। कुछ ही क्षणों में झोंका गुज़र जाता था तो वातावरण मौनता की चादर पुनः ओढ़ लेता था। कमरे में वह अकेली थी। पत्रिका के पत्रों में उसने अपना दिल लगाना चाहा था पर

उसकी निगाहें उन पृष्ठों पर न टिक पाती थीं। उसकी अस्थिर दृष्टि इधर-उधर भटक रही थी। नज़रें बार-बार सामने की ओर उठ रही थीं।

सूर्य डूब गया। संध्या समय ही रात हुई प्रतीत हो रही थी। अन्धकार दीपों के प्रकाश को दबोचने का यत्न कर रहा था। उर्मिला के डैडी की यह आदत थी कि वह जल्दी खाना खा लेते थे। खाना खाने का समय जब हो गया तो नौकर उसको बुलाने के लिए आया। उर्मिला को आज भूख नहीं लगी थी। ऐसा उसने कुछ खाया भी नहीं था फिर भी उसका मन कुछ खाने को नहीं कर रहा था। डैडी उसकी प्रतीक्षा में थे। उनके पास वह चली गई।

नौकर टेबल पर खाना लगाने लगा। उर्मिला समाचार पत्र उठा कर सरसरी तौर से सुर्खियों पर नज़र दौड़ाने लगी। अलसाये ढंग से सोफे पर वह आधी लेटी सी बैठी थी।

"तुम कब जा रही हो, बेटी ?"

"कहां, डैडी ?"

"अपने कालेज।"

"जल्दी जाना ज़रूरी है क्या !"

"अरे ! तू ही तो कल खुद कह रही थी कि 'इन जंगलों को देख-देख कर मन भर गया है। ऊब गई हूं इस एकाकीपन से अब तो। यह शक होने लगा है कि बाहरी दुनिया से हमारा कोई सम्बन्ध है या नहीं।' सक्सैना साहिब ने बेटी के ही शब्द दोहरा दिए थे।"

"कहती थी, पर अब सोचती हूं कि कुछ दिन और रुक जाऊं। मैदानी इलाकों में इन दिनों शिद्दत की गर्मी पड़ रही होगी। जिस्म को झुलसा देने वाली लू चल रही होगी। इन दिनों तो लोग वहां से इधर को भागते हैं। अपने डैडी से बातें करते हुए उर्मिला सुर्खियों पर अपनी नज़र भी दौड़ा रही थी। सहसा वह चौंक सी उठी,

"अरे, यह खबर पढ़ी है आपने, डैडी !"

"कौन सी ?"

"लिखा है इस वर्ष मानसून फेल हो जाने के कारण दिल्ली में गर्मी ने पिछले कई सालों का रिकार्ड तोड़ दिया है। इसलिए वहां के विश्वविद्यालय तथा महा-विद्यालयों में छुट्टियां बढ़ा दी गई हैं।"

"तुम्हारा विचार सही निकला।"

"आपको कैसी लगी यह सूचना ?"

"तुम्हारे मन की बात पूरी हो गई। मेरे लिए तो यह और भी अच्छा हो गया। जितना ज्यादा समय तुम इधर रह सकोगी, मेरा मन लगा रहेगा। तेरे बिना मेरा है ही कौन ! तुम्हीं तो इस घर की रौनक हो। तुम चली जाती हो तो इस घर की रुह जैसे चली जाती है। उदासी और सूनापन सा छा जाता है यहां। यह घर

काटने को दौड़ता है। स्नेहार्द्र स्वर में बोलते हुए सक्सैना साहिब भावुक से हो उठे थे।

कुछ क्षणों के लिए उनके बीच गहरी खामोशी सी छा गई थी। वातावरण की निस्तब्धता को तोड़ते हुए वह बोले "अब तो नया ड्राईवर भी आ गया है। तुम इधर-उधर की सैर भी कर सकोगी।

"यह तो अच्छा हो गया। आपको अपने दोस्तों के पास जाते समय असुविधा होती थी," उर्मिला ने अचकचाते हुए कहा।

खाना खत्म हो गया। उर्मिला पढ़ने का बहाना करके आज अपने कमरे में चली गई थी।

सक्सैना साहिब अवकाश प्राप्त मिलट्री इंजीनियर थे। विवाह हुए 20 वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी सन्तान रूपी पुष्प उनकी जीवन रूपी बगिया में खिल नहीं पाया था। उनकी पत्नी ने बहुत सी मनौतियां मानीं। उनकी यह आशा जब पूर्ण हुई तो दूसरी ओर से भगवान् ने उन पर वज्रपात कर दिया। उनके जीवन की तमाम खुशियां उनसे रूठ गईं। बेटी को जन्म देने के कुछ महीने पश्चात् ही उनकी पत्नी इस दीन दुनियां से कूच कर गई। पत्नी सही मानों में उनकी अर्धांगिनी थी। उन्हें उससे बेपनाह प्यार था। दूसरी शादी करवाने से उन्होंने साफ इन्कार कर दिया था। नवजात शिशु उनकी पत्नी का लघु रूप थी। बेटी के लिए वह बाप ही नहीं अब 'मां' भी थे। प्यारी पत्नी की जुदाई का गम वह बेटी के पालन-पोषण में जुट कर कम करने की कोशिश में लगे रहे। अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् वह अपने पैतृक गांव में ही रह कर जिन्दगी के बाकी दिन गुजारने लगे। रिटायरमेंट के समय जो उन्हें ग्रेचुटी और पेंशन मिली थी वह इतनी प्रर्याप्त धन राशि थी कि उनका जीवन निर्वाह बड़े सुन्दर ढंग से हो रहा था।

अगले दिन सक्सैना साहिब ने अपने एक दोस्त के घर जाना था। जन्म दिन पर पार्टी का प्रोग्राम था। उर्मिला भी अपने डैडी के साथ जाने को तैयार हो गई। गाड़ी की बैक सीट पर बैठ कर वह ड्राईवर को कनखियों से देखने का यत्न कर रही थी। जितना ही सुकुमार उतना ही वह सुन्दर था। कुछ दुबला-पतला सा, शायद लम्बा कद था इसलिए। पर रंग तपते सोने सा। आंखें, चेहरा, भवें और चौड़े कपाल की बनावट जैसी चाहिए थी वैसी ही थी। उर्मिला ने जिस युवक की कल्पना की थी और जो उसके ख्वाबों का राजकुमार था, उससे भी बढ़ कर वह उसे सुन्दर और आकर्षक लगा।

विश्वविद्यालय में वह रोज नये से नये चेहरे और सूरतें देखती थी पर किसी युवक में उसने वह बात देखी हो, जो उसे इस युवक में दिखाई दे रही थी, उसे याद नहीं था। उसमें कोई ऐसी विशेष बात भी नहीं थी फिर भी उर्मिला की आंखों में वह विशेष था। उसकी वेश भूषा में सादगी और चेहरे पर संजीदगी थी। चारों ओर प्रकृति के सुन्दर और आकर्षक दृश्य थे। पर उन दृश्यों में आज उसे कोई रुचि

नहीं थी। वह युवक उसके ध्यान का केन्द्रबिन्दु बना हुआ था। उस पर से उसकी नज़र हट ही नहीं रही थी। कहीं और देखने की आज उर्मिला को ज़रूरत ही नहीं महसूस हो रही थी। उसके दिल की धड़कन आज कुछ अत्याधिक तेज़ थी। उसकी सांस भी फूल रही थी। गहरे उच्छवास छोड़ते हुए वह अपनी स्थिति को सामान्य बनाने का यत्न कर रही थी। सक्सैना साहिब ने दो एक दफा किसी विषय पर बेटी से बात करनी चाही तो उर्मिला 'हां-हूँ' में संक्षिप्त सा उत्तर देकर बातचीत के सिलसिले को आगे बढ़ने से रोक देती थी। सामने एक दर्पण था जिसमें उस युवक का चेहरा और चेहरे का प्रत्येक कोण उर्मिला भलि-भान्ति देख सकती थी। वह उसका नाम भी जान गई थी क्योंकि सक्सैना साहिब उसका नाम ले कर उसे कई दफा पुकार चुके थे। उसे दिशा संकेत दे रहे थे। इस साक्षात्कार में वह अपने सपनों के राजकुमार को देख तो सकी थी पर उससे कोई बात करने का उसे मौका नहीं मिला था। जितनी देर वह गाड़ी में थी उसके डैडी उसके साथ थे। गंतव्यस्थल पर पहुंच कर जब वह गाड़ी में से उतरे तो रतन गाड़ी को एक ओर पार्क करके उसी में बैठा रहा। बे मतलब की बातें करना और फिज़ूल की गप्पें हांकना उसकी आदत नहीं थी। वह या तो तनहाई के हुस्न को निहारता रहता या कोई पुस्तक ले कर उसे पढ़ने बैठ जाता।

पार्टी के इस मौके पर एक अच्छा जशन मनाया जा रहा था। मेहमानों की खूब रौनक थी। गीत संगीत का प्रोग्राम था। रमणियों की संगीतमय और उल्लास-पूर्ण खिलखिलाहट थी। मर्दों की हंसी और कहकहे थे। अतिथि आनन्द सागर में गोते लगाते बुलबुल से चहक रहे थे। घने बालों के जूड़ों में लगे फूल, रंगीन रेशमी आंचल, सरसराते परिधान, बेश कीमती साड़ियां और गर्म शालें अपनी इन्द्रधनुषी छटा से आंखों को सुशीतल कर रही थीं। पर उर्मिला को महफिल की इस रंगीनी में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसका दिल और दिमाग जो उसके अपने नहीं रहे थे, कहीं और घूम भटक रहे थे। इस महफिल में उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। चहल-पहल और रौनक से वह कतराती थी। वह चाहती थी कि उसे एकान्त मिले। लोगों की तेज़ नज़रों से बच कर वह बाहर निकल जाए। उस अजनबी के संग वृक्षों की ओट में बैठ कर वह खूब बातें करे। या उसका हाथ अपने हाथ में ले कर पर्वतों की इन चोटियों पर जी भर कर घूमे। महफिल के हंगामे और शोर शराबे से वह ऊब गई थी। वह तो इस इन्तज़ार में थी कि यह प्रोग्राम शीघ्र समाप्त हो जाए और वह घर जा सके। पार्टी को बीच में छोड़ कर वहां से चले जाने का भी उसे कोई बहाना नहीं सूझ रहा था। अव्यवस्थित सी हुई वह इधर-उधर फिर रही थी। कभी घड़ी को देखती और कभी महफिल की रौनक को।

प्रोग्राम समाप्त होने पर जब वह लोग कोठी से बाहर आए तो सांझ का धुंधलका गाढ़ा हो कर अन्धकार का रूप धारण कर रहा था। उर्मिला के दिल में अनोखी तड़प और चाहत पैदा गई थी। वह स्वयं रूप लवण्य की प्रतिमा थी।

यौवन की दहलीज़ पर कदम रखते ही सौन्दय की किरणें उसके अंग-अंग से फूटने लगी थीं। यौवन का निखार जो उसके मुख पर था वह देखते ही बनता था। सौन्दर्य की इस मोहक मूर्ति ने जाने कितने युवकों को अपनी ओर आकृष्ट किया था। जाने कितने थे जो उसे देखकर, दिल थाम कर और सर्द आह भर कर रह गए थे। उसकी सहेलियों ने तो उसके एक सहपाठी को उसके आशिक का दर्जा दे रखा था। उसके आशिक का नाम उसके नाम के साथ जोड़ना शुरू कर दिया था। उसका नाम ले ले कर उर्मिला के साथ उन्माद भरी छेड़-छाड़ करनी शुरू कर दी थी। पर यह सब उर्मिला के लिए शुगल था। मोहब्बत किस बला का नाम है, प्यार क्या होता है, इश्क कैसी बीमारी होती है, चाहत में कैसी तड़प होती है, किसी के इन्तज़ार में कितना बेताब होना पड़ता है, ऐसी तमाम बातों से वह अनभिज्ञ थी। इन अनुभवों से वह परिचित थी। जो कसक और तड़प उसे आज महसूस हो रही थी, उसके दिल की दशा जो आज हो रही थी वह पहले कभी नहीं हुई थी। मोहब्बत का पहला पाठ उसने सीख लिया था।

पत्र-पत्रिका, या कोई उपन्यास इत्यादि पढ़ते समय उसकी दृष्टि किसी ऐसी पंक्ति पर रुक जाती थी जो प्रेम-प्रियतम या सौन्दर्य का बोध कराती थी। मेज़ पर पड़ी पुस्तक दूरदर्शन की स्क्रीन बन जाती थी जिसमें हर पृष्ठ पर उस अजनबी की छवि उभर आती थी। उर्मिला प्यार की चोट खा चुकी थी। पहली दृष्टि में कहीं से प्रेम की एक चिनगारी उसके दिल में आ पड़ी और वह सुलगने लगी। उसका सुप्त यौवन जाग उठा। कौमार्य कहीं जा कर मुंह छुपा कर बैठ गया। एक तरह का नशा उसकी नस-नस में समा गया। वह बात-बात में भूलें करने लगी। अपने-आप को भुलने लगी। उस युवक की छवि, उसकी सूरत, सभी कुछ मूर्त-अमूर्त होकर सोते जागते, उठते-बैठते उसके आगे-पीछे नाचने लगे। उसकी याद उसे आती रहती थी। उसके नयनों में निद्रा जब आ समाती थी तो उसका महबूब अकस्मात प्रकट हो जाता था। स्वप्न में उसे पा कर उर्मिला पर एक उन्माद सा छा जाता था। इस हालत में उसकी नींद जब उड़ जाती थी तो अपने प्रियतम की छवि से बतियाते अक्सर सुबह हो जाती थी। वह उसकी याद में और तड़प उठती थी। उसके प्यासे नयन उसे देखने के लिए इधर-उधर भटकने लग जाते थे। इस स्थिति में वह कई दिनों से गुज़र रही थी। एक दूसरे के पास होते हुए भी वह कितने दूर थे। वह कोई बहाना ढूंढ रही थी ताकि रतन को अपने पास बुला सके या उसके पास जा सके। दोपहर ढल रही थी। रतन अपने क्वार्टर में बैठा हुआ आज कोई पुस्तक पढ़ रहा था। एकाकीपन को दूर करने के लिए उसने पुस्तकों से दोस्ती बना रखी थी। ऐसे में पुस्तकें ही उसके लिए एक मात्र सहारा होती थीं। यह इलाका उसके लिए नितान्त नया था। उसे यहां प्रकृति के मनोरम दृश्य देखने को मिले थे। पहाड़ी इलाके के समूचे रंग-बिरंगे पन को उसने पहले नहीं देखा था। सूर्य को उसने जंगलों और पहाड़ों से उठते और नदी तट पर ताड़ के वृक्षों के पीछे छुपते देखा। रात को

उसने बिखरे मोतियों से जगमगाते तारों और नीले आकाश के समुद्र में चांदी की नाव की तरह तैरते हुए चांद को देखा। उसने बादल, इन्द्रधनुष, चट्टानें और दूर-दूर तक फैली पर्वत श्रृंखलाओं को देखा था। गाते पक्षियों, गुनगुनाते झरनों और धान के खेतों में सरगम छेड़ती पवन को सुना था। सक्सैना साहिब कुछ दिनों के लिए कहीं बाहिर गए थे। गेंद की तरह फुदकती हुई एक बालिका द्वार पर आई। पुस्तक से नज़र उठा कर रतन कौतुहलवश उसे देखने लगा।

"आपको दीदी ने बुलाया है।" बालिका रतन से सम्बोधित हुई।

"दीदी कौन ?" उसने जिज्ञासा की।

"आप दीदी को नहीं जानते हैं" चकित सी होती हुई उस लड़की ने पूछा।

"अपनी दीदी का नाम बताओ तब पता चलेगा।"

"नाम ! नाम तो मैं भी नहीं जानती।"

"अरे ! तुम अपनी दीदी का नाम भूल गईं।"

"दीदी को मैं दीदी कह कर ही पुकारती हूँ। नाम कभी नहीं लेती। न ही पूछा है। वे यहां कम आती हैं। आती हैं तो जल्दी चली जाती हैं।"

"शीघ्र चली जाती हैं। कहां ?"

"वह किसी बड़े शहर में पढ़ती है।'

उस भोली बालिका की बातें रतन के लिए पहेली बन गई थीं। असमंजस में पड़े हुए उसने पूछा, कहां है तुम्हारी दीदी इस वक्त ?"

"अपने कमरे में। वहां, सामने।"

रतन को कुछ बात समझ आ गई थी।

तो आओगे न ?"

"तुम्हारा कहना तो मानना ही पड़ेगा।"

"मेरा नहीं दीदी का, उसने जल्दी आने के लिए कहा है।" फुदकती हुई वह वहां से भाग निकली। रतन सोच में पड़ गया। उसे क्यों बुलाया गया है। हो सकता है गाड़ी द्वारा उर्मिला ने कहीं जाना हो। एक दो दफा जब उसका उससे सामना हुआ था तो उसके बदलते हुए हाव भाव और चेहरे के रंगों ने रतन के मन में संदेह सा उत्पन्न कर दिया था। काम कोई और भी हो सकता है। उसका फर्ज़ था कि वह जाए। उठकर रतन वस्त्र बदलने लगा।

"आप ने मुझे बुलाया है ?" रतन ने पूछा। द्वार पर झूमते हुए पर्दे के पास वह खड़ा था।

"हां।"

"आज्ञा दीजिए।"

"अन्दर चले आओ न।"

रतन द्वार के अन्दर चला गया। सिकुड़ता-सिमटता सा वह एक ओर खड़ा हो गया।

"मुझे तुम से एक काम है।" दिल की धड़कनों पर काबू पाने का यत्न करते हुए वह बोली।

"हुकम कीजिए।"

"मैं ड्राईविंग सीखना चाहती हूँ। सिखा दोगे?"

"क्यों नहीं। जो हुकम दें आप। आपका नौकर हूँ।"

"ऐसा मत कहिए।" उसकी बोझिल पलकें उठीं और पुन: झुक गईं।

"ड्राईवर तो नौकर ही होता है।"

"इस वक्त तो तुम मेरे लिए गुरु समान हो। कोई गुण ग्रहण करना हो तो गुरु धारण करके ही किया जा सकता है। और गुरु हमेशा पूजनीय और आदरणीय होता है।"

"इतनी ऊंची पदवी के मैं योग्य नहीं। हां, आपकी हर कोई सेवा करना और आज्ञापालन करना मेरा कर्तव्य है।"

उर्मिला एक अलमारी की ओर बढ़ी। वहां से प्लेट उठा लाई।

"लीजिए।" श्रद्धा भाव से उसने मिठाई की वह प्लेट रतन को प्रस्तुत की।

"यह क्या।" उर्मिला के इस अनोखे व्यवहार ने रतन को हैरत में डाल दिया था।

"एक परम्परा निभा रही हूं।"

"कैसी परम्परा।"

"जब कोई पहली दफा पाठशाला में प्रवेश पाता है तो वह अपने गुरु का मुंह मीठा करवाता है। यह हमारी संस्कृति का एक लक्षण है। मैं भी आज पहले दिन ड्राईविंग सीखने लगूंगी। यह कोई साधारण बात नहीं है। खास कर लड़कियों के लिए। और इन पहाड़ी मार्गों पर ड्राईविंग सीखना-सीखाना खतरे से खाली नहीं होता। मुंह मीठा कीजिए, "अन्तिम वाक्य को उर्मिला ने श्रद्धा भाव से और जोर देते हुए कहा। अजीब स्थिति में पड़ गया था रतन। इस आग्रह को टाल पाने में वह असमर्थ था। उसने हाथ आगे फैला दिया। उर्मिला ने प्लेट उसके फैले हुए हाथ के पास कर दी, खुद लीजिए।"

झिझकते हुए रतन ने एक टुकड़ा बर्फी का उठा लिया।

"और लीजिए न।" प्लेट को हाथ में थामें हुए वह एक दो कदम और बढ़ गई जैसे सारी की सारी प्लेट वह रतन को खिला देना चाहती हो।

ऐसी सुस्वाद मिठाई उसे पहली दफा खाने का मौका मिला था।

"सारी की सारी प्लेट खत्म करनी होगी।"

"यह तो बहुत ज्यादा है।"

"सारी ही समाप्त करनी होगी। यह मेरा आदेश है।"

"देखिए, आप मर्यादा का उलंघन कर रही हैं।"

"कैसे?" उर्मिला ने चकित सी होते हुए पूछा।"

"शिष्या गुरु को आदेश दे यह क्या ठीक है।"

"अरे ! यह तो मैं भूल ही गई थी।"

"आपको आधी बर्फी खानी पड़ेगी। गुरु का अपनी शिष्या को यह आदेश है।"

"इस आदेश की मैं पालना करती हूँ।" उर्मिला रतन के साथ बर्फी खाने लगी।

रतन झेंप सा रहा था। उसे डर था कि यदि इस स्थिति में उन्हें किसी ने देख लिया तो क्या सोचेगा।

"कब चलोगे मुझे डाईविंग सिखाने।"

"जब भी आप चाहें।"

"बर्फी कुछ ज्यादा खा गई हूं। चाय पी लूं।" कलाई घड़ी पर नज़र दौड़ाते हुए उसने कहा, चलेंगे, चार बजे के करीब।" रतन अपनी कोठरी में चला गया था।

चाय पीने के पश्चात वह बाहर जाने की तैयारी करने लगी। आधुनिक और शोख वस्त्र पहन कर वह टैरेस के पास कर आ आकाश को देखने लगी। उर्मिला हताश सी रह गई। आकाश का स्वरूप ही बदल गया था। घने काले बादल भीमकाय हाथियों के झुण्ड जैसे सारी दिशाओं में फैल गए थे। और मानों यह धमकी दे रहे हों कि किसी भी क्षण वह पर्वतों से टकरा कर उन पर टूट पड़ेगे। एक काली घटा छतरी की तरह छा गई थी। समस्त सूर्य और पर्वत श्रृङ्खलाओं को उन बादलों ने ढक लिया था। देखते ही देखते घटाएँ घनघोर हो कर झुक आई थीं। छोटी-छोटी बूंदें बरसने लगी थीं। फिर जल की धाराएं पृथ्वी और आकाश का मिलाप करवाने लगीं। लता-बल्लरियां प्रकृति मां के स्वागत में हाथ हिलाती हुई उससे कह रही थीं कि धरती का हृदय गद्-गद् हो उठा है। फूलों के पौधों की झूमती हुई टहनियां अपना मूक सार्थक प्रेम संदेश दे रही थीं। ऐसे भीगे और मस्ताने मौसम में उर्मिला का मन मयूर नाच उठता था। आनन्दोदय की हिलोरें उसके अंग-अंग में उठने लग जाती थीं। पर आज इस मौसम को देखकर उसका मूड खराब हो गया था। हृदयोल्लास काफूर हो गया था। मन में झुंझलाहट घुमड़ने लगी थी।

इन पर्वतीय क्षेत्रों में मौसम कितना अनिश्चित होता है। आशिक के मिजाज की तरह बदलता रहता है। कुछ ही समय पहले आकाश दर्पण की तरह चमक रहा था वह अब स्याह चादर ओढ़े हुए था। यह बेमौसम की बरखा थी जिस पर उसे रह रह कर क्रोध आ रहा था। कभी वह गैलरी में आ कर आकाश को देखती और कभी रतन के क्वार्टर की ओर। द्वार पर खड़ा रतन भी वर्षा के थम जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे इस तरह खड़े देखकर उर्मिला का मन मचल उठा। वह और उतावली हो उठी। उसके मन में उमंग मचलने लगी कि वह वर्षा में भीगती हुई

और भागती हुई अपने प्रियतम के पास जा पहुंचे। और उसके गले का हार बन कर उसकी बाहों में झूम जाए।

घटा बरस कर हल्की होने लगी। वायु के तीव्र झोंके उसे रूई के समान उड़ा कर ले जाने लगे। आकाश फिर से निर्मल होने लगा। उसके निर्मल हो जाने पर भी सामने वाली चोटियों पर बादल रूपी बच्चे रेंगते खेलते नज़र आ रहे थे। सूर्य धरती को अपना अरुण संगीत सुनाने लगा। उसे देखते हुए उर्मिला की आशा/लता जो मुरझा गई थी, फिर से हरी हो गई।

उसने देखा कि रतन गैरेज से गाड़ी निकाल रहा है। हर्षातिरेक में बहते हुए वह सीढ़ियां उतरने लगी। गाड़ी उसके पास आ कर रुक गई। मधुर स्मित मुस्कान से उसने रतन की ओर देखा। दुपट्टा या तो खुद बखुद सिर से सरक कर उसके कन्धों पर बार-बार गिर रहा था या अभूतपूर्व कौशल से गिराया जा रहा था। गाड़ी में बैठने से पहले वह एक सोच में पड़ गई। आगे बैठे अथवा बैक सीट पर। उसका मन आगे बैठने को कर रहा था। पर शिष्टाचार का तकाजा था कि वह बैक सीट पर ही बैठे। वह अभी फ़ैसला कर ही नहीं पाई थी कि रतन ने पिछली सीट का द्वार खोल दिया। उर्मिला का नया तुला कदम उठा और वह गाड़ी में सवार हो गई। पिछला द्वार खोल कर रतन ने ठीक ही किया था। वह जानता था कि गाड़ी जब ड्राईवर चला रहा हो तो मालिक को पिछली सीट पर बैठना ही शोभा देता है।

मेन रोड पर ट्रैफिक था। रतन गाड़ी को एक ऐसी लिंक रोड पर ले गया जो पूर्णतया शान्त थी। सड़क के साथ-साथ नीचे की ओर जंगली झाड़ियां थीं जो ढलान पर से होती हुई उस जगह तक फैली हुई थीं जहां एक बरसाती नाला सुन्दर हरी भरी चरागाह में से टेढ़ा-मेढ़ा बह रहा था। लम्बी-लम्बी घास में से सिर उठाए जंगली फूल झूम रहे थे। पेड़ों की पत्तियां सावन के धुले हुए कपड़ों की भान्ति निखरी हुई थीं। उर्मिला के मन में उमंग उमड़ रही थी। जिस ओर भी कार मोड़ खाती रंग-बिरंगे फूलों की डालियां सांझ सुहावने मौसम में नाचती हुई मुस्करा रही थीं। इस सड़क पर उर्मिला पहले भी आई थी। पर यह फिजा, यह फूल, यह पगडंडियां और यह रूई के समान बिखरे बादलों के टुकड़े उसे आज जितने सुन्दर और आकर्षक कभी नहीं लगे थे। सामने प्याली नुमां निचली वादी थी जिसमें पत्थरों से टकराता हुआ चांदी जैसा चमकता पानी संगीतमय ध्वनि पैदा कर रहा था। फूलों के सौरभ से वातावरण महक रहा था। प्रकृति आज अत्याधिक सुन्दर और लुभावनी लग रही थी। कुदरती दृश्यों का आनन्द लेते हुए उर्मिला दर्पण में रतन की मुख छवि को निहार रही थी। पवन के झोंकों से वृक्षों के ऊपरी सिरों की पत्तियां सरसरा रही थीं। लगता था वह गीत की कोई कड़ी गुनगुना रही हो। देवदार और चीड़ के गगन चुम्बी वृक्ष जैसे आकाश को धरती का कोई गुप्त सन्देश दे रहे थे।

कार जब एक समतल और स्पाट सड़क पर आ गई तो उर्मिला के इशारे से वह रोक दी गई।

"सिखाओ न मुझे भी कुछ ।"

"आप अगली सीट पर आ जाएं ।"

पिछली सीट से उठ कर वह रतन के साथ वाली सीट पर आ बैठी । यह उसकी मन पसन्द जगह थी । उसकी युवा देह में एक कम्पित हृदय था जो लयबद्ध रूप से अब स्पन्दित हो रहा था । उसका वक्ष श्वास की गति के साथ उठ और बैठ रहा था ।

रतन भी उसे एक नजर से देखे बिना रह न सका । उर्मिला के ललाट के बीच से निकलती हुई मांग केश राशि को स्पष्टता दो भागों में बांट रही थी । उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में खुमार और चेहरे पर यौवन का निखार था ।

"आप ध्यान से देखती रहना कि गाड़ी किस तरह स्टार्ट की जाती है ।"

"एक एतराज है मुझे ।" वह बीच में ही बोल पड़ी ।

"एतराज ।"

"हां, एक बात कहनी है मुझे ।"

"फरमाइए ?"

"अब से तुम मुझे आप' 'नहीं कहोगे ।"

"क्यों भला ! आप तो आप ही हैं ।"

"एक गुरु के मुखाबिन्द से अपनी शिष्या को 'आप' कह कर सम्बोधन करना अटपटा सा लगता है ।"

"मेरा आप से और भी सम्बन्ध है ।"

"कौन सा ?" उर्मिला ने रतन के चेहरे पर अपनी नजर टिकाते हुए पूछा ।

"जिनका मैं नौकर हूं, उनकी आप बेटी हैं । आप की सेवा करना मेरा पहला कर्त्तव्य है । ड्राईविंग ही तो मेरा पेशा है । इस की मैं तनखाह पाता हूं । आप मुझे गुरु कहें यह भी उचित नहीं लगता ।"

"तुम चाहते हो कि गुरु के प्रति मेरे हृदय में जो सम्मान है उसे मैं बाहर निकाल फेंकू ?"

"आप मुझे गुरु न कहें, बस ।"

"तुम्हारी बात एक शर्त पर मानी जा सकती है ।"

"बताइए ?"

"तुम भी यह ख्याल अपने दिल से निकाल दो कि मैं तुम्हारे लिए मिस साहिबा हूं । मालिक और नौकर का अहसास जो तुम्हारे दिल में है उसे मिटा दो ।"

"रतन एक छोटी सी उलझन में पड़ गया लगता था ।"

"मान जाओ न मेरी बात । मुझे नाम से पुकारा करो । उर्मिला कह कर तुम मुझे बुलाओगे तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा ।" स्नेह विभोर सी हुई उर्मिला रतन को देख रही थी । वह एक दूसरे में खो से गए थे । क्षण भर के लिए उनकी नजरें परस्पर टकरा गईं । उन आंखों में प्यार का सन्देश था । खामोशी में डूबा एक समझौता

हो गया। दोनों ने एक दूसरे की बात मान ली। मालिक और नौकर के बीच जो खाई थी वह भर दी गई। उनके बीच एक तरह से ऐसा सम्बन्ध स्थापित हो गया जो हम उम्र के युवाओं के बीच हो जाता है।

रतन उसे गाड़ी स्टार्ट करने, गियर बदलने इत्यादि के टैक्नीक समझा रहा था। अबोध बालिका और स्कूली छात्रा सी बनी उर्मिला उसकी बातों को तन्मयता से सुन रही थी। गाड़ी को रतन नियूनतम स्पीड पर चला रहा था। उर्मिला स्टेयरिंग सम्भालने का यत्न कर रही थी। ऐसे में कभी-कभी वह रतन की आंखों में झांक लेती। कार जब कोई नाजुक मोड़ मुड़ती तो अपने आप को बेलेन्स में रखने का वह यत्न करते। फिर भी एक दूसरे पर झुक जाना और अंग स्पर्श हो जाना कुदरती बात थी। उनकी आंखें जब परस्पर टकरा जातीं तो उर्मिला का हृदय सम्पदित हो उठता। वायु के तीव्र झोंके खिड़की में से होते हुए अन्दर आ रहे थे। उर्मिला के बिखरे हुए बाल उसके गालों, उसकी ठोढ़ी और कपोलों पर छा जाते। उसके आंचल का छोर उड़ कर रतन के चेहरे पर फहराने लग जाता था।

अपना हाथ स्टेयरिंग पर रखते हुए उर्मिला ने कहा," मैं अब देखूं चला कर ?"

"नहीं, अभी नहीं।"

"क्यों ?"

' इन टेढ़े-मेढ़े मार्गों और खतरनाक मोड़ों पर एक माहिर और तजरुबेकार ड्राईवर ही गाड़ी को नियन्त्रण में रख सकता है।"

"ट्राई तो करने दो।"

"यह बच्चों का खेल नहीं।"

"जरा छोड़ तो दो।"

"ऐसा करना खतरे से खेलना होगा।"

"तुम चिन्ता न करो। मैंने सब सीख लिया है। एक दफा देख लेना ही मेरे लिए काफी है, उर्मिला ने आत्मविश्वास के साथ कहा। उसके स्वर में आग्रह था और जिद्द भी।

रतन को उसकी इस जिद्द के सामने झुकना पड़ा। थोड़ा सा एक ओर सरक कर उसने स्टेयरिंग उर्मिला को सौंप दिया। उसका अपना एक हाथ भी अभी स्टेयरिंग पर था। उर्मिला के हाथों में कम्पन सा हो रहा था। सावधानी के साथ और बड़ा सतर्क हो कर रतन बैठा हुआ था। उसका ख्याल था कि उर्मिला डर कर स्टेयरिंग ह्वील उसके हवाले कर देगी। हिचकोलों और झटकों के साथ कार आगे बढ़ने लगी। कार चलाने की वह अपनी जिद्द पर अड़ी हुई थी। रतन को लगा कि उर्मिला को गाड़ी सौंप कर उसने भारी भूल की है। गाड़ी बेढंगी चाल से जा रही थी। उसने स्टेयरिंग छीनना चाहा पर वह जिद्द पर अड़ी हुई थी। रतन को डर लग रहा था किसी भी क्षण किसी गहरी खाई में गिर कर उनके साथ यह पाताल में पहुँच सकती

है। उर्मिला गाड़ी को धीमी गति से चला रही थी। फिर भी सामने पड़ने वाले विकट कोहनी दार मोड़ों और उतार चढ़ावों का मार्ग रतन को भयभीत कर रहा था। जिन्दगी और मौत के बीच उस समय उसे कुछ ही क्षणों का फासला दिखाई दे रहा था। ऐसी नाज़ुक हालत में वह मनौतियां मानने लगा और अपने इष्ट देवों की स्तुति करने लगा। मन ही मन वह झुंझला रहा था और उर्मिला के दुस्साहस पर वह हैरान था। सहसा कार की गति में परिवर्तन आया। उसकी स्पीड तेज़ हो गई और वह गजगामिनी सी जाने लगी। जिस सधे ढंग से उर्मिला उसे चला रही थी वह आश्चर्यजनक था। सड़क पर कार अब ऐसे जा रही थी जैसे झील में राजहंस तैर रहा हो। उर्मिला के मुख पर शरारती और चंचल मुस्कान थी। रतन उसकी शरारत को भांप गया था कि उर्मिला गाड़ी चलाना ही नहीं जानती वह इस काम में दक्ष है। उसने गाड़ी एक ऐसे मनोरम स्थान पर रोक दी जहां कल-कल करता हुआ एक नाला बह रहा था। वह दोनों उस नाले के किनारे जा खड़े हुए। बहते पानी की धाराओं को वह देखने लगे। उसका रंग पारदर्शी हरी आभा लिए हुए था। तैर कर ऊपर आ रहे बुलबुले मोतियों की तरह चमक रहे थे। मन्द-मन्द बह रही पवन के नशे में मदमाती शाम धीरे-धीरे गाफिल पड़ रही थी। पुष्पों की फैल रही सुगन्ध मानव हृदयों में मादकता भर रही थी। पेड़ों पौधों के झुरमटों में रात के लिए आश्रय की तालाश करते हुए पक्षियों के झुण्ड अपने कलरव से दिशाओं को मुखरित कर रहे थे। अपनी टोली से बिछुड़ी हुई कोयल करुण आतुर आवाज में उलहाना देती हुई इधर-उधर उड़ रही थी। इस मनोहारी दृश्य में रतन खो सा गया था। जिधर से यह नाला आ रहा था उधर सामने समतल भूमि के एक टुकड़े पर छोटा सा उद्यान था। वह उस उद्यान की ओर चल पड़े। वह दोनों एक पगडंडी पर जाने लगे जो घने साल के पेड़ों से भरे जंगल से हो कर जा रही थी। पेड़ों की शाखाओं पर बैठी सारिकाएं और अन्य पक्षी सूर्य की किरणें की मादकता में तन्मय हो कर मधुर गीत गा रहे थे। कुदरती दृश्य अनूठा सौन्दर्य प्रस्तुत कर रहे थे।

पगडंडी उद्यान के निकट जा कर समाप्त हो गई। उसके चारों ओर पक्की दीवार थी। वह दीवार पुराने समय की दिखाई देती थी। उस पर चूने का पलस्तर किया हुआ था जो कहीं-कहीं उखड़ा जा रहा था। बन्दरों के झुण्ड पेड़ों की फुनगियों तक उछल रहे थे। वह किलकारियां मार रहे थे। एक नर भेड़ मादा भेड़ का पीछा करते हुए उससे मैथुन रत हो गया। भीतर का दृश्य नयन न्यभिराम था। स्वर्गिक सुषमा और नैसर्गिकता के कारण उसमें ऐसा आकर्षण था कि मन वहीं बस रहने को चाहता था। प्रकृति विहंसती सी दिखाई दे रही थी। सौन्दर्य निखर रहा था। उर्मिला के सपने फूल बन कर खिलने लगे थे। उल्लास क्रीड़ा करने लगा था।

मनमोहक सज्जित फुलवाड़ियां, फव्वारों की रंगीन और हसीन पिचकारियां, शीतल छाया प्रदान करने वाले वृक्ष समूह, मखमली हरी-हरी बिछौनी घास के क्रीड़ा स्थल, रंगीन फुहार के साथ सुरभित भीगी-भीगी समीर वातावरण में मादकता

संचरित करते फूलदार पेड़-पौधे, सारस, तोते और अन्य पक्षियों की संगीतमय कलरव, स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति होती थी। यह सब देख कर रतन आनन्दातिरेक में बहने लगा। ऐसे दृश्यों को पहले देखने का मौका रतन को कभी नहीं मिला था। इन्हें देखते हुए उसका मन नहीं भर रहा था। कुछ पुराने भवन थे। उनकी मुरम्मत करवा कर आधुनिक रूप दिया गया था।

"कैसी लगी यह जगह ?" उर्मिला ने मोहक मुद्रा में पूछा। "बहुत खूब ! नगरों के पार्कों और बागों को देखने का मौका तो मिलता रहता है। पर यहां का नैसर्गिक सौन्दर्य अवर्णनीय है। किसने बनवाया था यह ?"

"पहले तो यह किसी नवाब की बेगमों का क्रीड़ा स्थल था। अब इस इलाके में एक संस्था इसकी देख भाल करती है।"

उर्मिला यहां पहले भी आई थी। सारी दृश्यवलि उसके लिए सुपरिचित थी। पर आज नये साथी के संग उसका हृदय अद्‌भुत आनन्द से विभोर हो रहा था। उसकी दिलचस्पी आज इन दृश्यों में कम और अपने साथी में ज्यादा थी।

"उधर चलते हैं। मैं कुछ आराम करना चाहती हूँ।"

घास के मैदान के एक एकान्त कोने में वह चले गए थे। नन्दन कानन सा उपवन खिला हुआ। शेफाली, मन्दार और पलाश के गाछ मदिरा जैसा प्रभाव छोड़ रहे थे। सरिता उद्यान के बीच में बह रही थी। उसकी तरंगों में नारदीय वीणा बज रही थी। हवा की छुअन ऐसी, जैसे उर्वशी का रेशमी आंचल ही उनके अंगों से लिपट रहा हो। घास का स्पर्श ऐसा सुखद जैसे अप्सराओं ने अपने जूड़े खोलकर लम्बे-लम्बे सुवासित केशों का आस्तरण बिछा दिया हो। कुछ देर आराम करने के पश्चात् उर्मिला ने बातचीत का सिलसिला छेड़ना चाहा। अधलेटी सी मुद्रा में वह रतन की ओर मुंह करके उससे ऐसी बातें पूछने लगी जो उसके निजी जीवन से सम्बन्धित थीं।

"तुम रहने वाले कहां के हो, रतन ?"

"मेरा कोई घर नहीं है।"

"तुम्हारे माँ बाप कहीं तो रहते होंगे ?"

"अकेला हूँ मैं इस दुनियां में।"

रतन उर्मिला के लिए पहेली बन गया था। उसके बारे में जानने की उत्सुकता उसमें बढ़ गई थी।

"अपनी दास्तान सुनाओ मुझे।"

"क्या करोगी सुन कर ?"

"तुम्हें एतराज है तो रहने दो।" रूठे से अन्दाज में वह बोली।

"एतराज वाली तो कोई बात ही नहीं।"

रतन अपनी व्यथा गाथा कहने लगा। कुछ ही शब्दों में उसने अपनी दास्तान कह दी। सुनते समय उर्मिला की आंखों में आंसू उमड़ आए थे। पर वह उन आंसुओं को पी गई थी। मन की व्यथा पर उसने झीना आवरण डाल लिया।

दर्द भरी सर्द खामोशी उनके बीच छा गई। मौन के वह क्षण आ गए जो दो तन और एक जान वाले व्यक्तियों के बीच आ सकते हैं और जब भावों की समरसता के आगे वाणी अशक्त और निरर्थक हो जाती है। उद्यान के दृश्य भी गहरी चुप्पी साधे हुए थे।

सहसा सामने पर्वत पर मेघ खण्ड पुन: उमड़ आए थे। वह जंगली जानवरों की तरह परस्पर टकरा रहे थे। उनमें से उछल-कूद करते हुए काले बन्दर निकलने लगे थे। उद्यान के कोनों से उठकर अन्धेरा आकाश में छाने लगा था।

मौसम का तकाजा था कि शीघ्र ही घर लौटा जाए। वह लोग बाहर आ गए। चुभती नज़रों से बचते हुए वह पुन: गाड़ी में आ बैठे।

रतन गाड़ी चलाने लगा। अचानक भेड़-बकरियों का एक झुण्ड उधर से आ निकला। कुछ भेड़े सड़क पर चढ़ कर डर गईं। उनमें खलबली सी मच गई। ऐसे में एक भेड़ कार के नीचे आ कर कुचली जाती यदि रतन ने चुस्ती और फुर्ती से ब्रेक न लगाए होते। उन भेड़ों को हांकने वाली एक पहाड़ी युवती थी। भेड़ों से वह कुछ फासले पर थी। घबराहट और बेचैनी में दौड़ती हुई वह उधर आई। अपनी भेड़ों को सुरक्षित देखकर उसने राहत की सांस ली। उसके अशान्त चेहरे पर शान्ति का महीन जाल सा छा गया। उसका चेहरा जो घबराहट और चिन्ता के कारण श्रान्त और पीड़ित था अब फिर अपनी सामान्य स्थिति में आ गया था। उसकी जान में जान आ गई। उसका एक हाथ अपनी छाती की ओर गया मानों वह अपने दिल की आकस्मिक धड़कन को शान्त करने की कोशिश कर रही हो। भय आतुर सी वह अपनी भेड़ों को सड़क के किनारे की ओर हांकने लगी। गलती कुछ उसी की थी। आंखों की मुक्त भाषा में आभार प्रकट करती हुई वह वहां से चल दी। उसके चेहरे पर मासूमियत और भोलापन था। उसकी वेश-भूषा निर्धनता की प्रतीक थी। उसने घाघरे जैसा वस्त्र पहन रखा था। घुटनों तक उसकी पिंडलियां दृष्टिगोचर हो रही थीं। उसने चांदी के आभूषण और हाथी के दांत की चूड़ियां पहन रखी थीं। उसके गुलाबी गालों के उभारों को देखकर काश्मीर के सेबों का सा आभास होता था। इन पहाड़ी लोगों के जीवन पर उनकी वार्तालाप होने लगी।

कितना कठिन है इनका जीवन! सारी उम्र इन्हें कठिन भौगोलिक परिस्थितियों से जूझना पड़ता है। सीमित सी इनकी आवश्यकताएं और छोटा सा इनका अपना संसार होता है। यह निर्धन है। इनका जीवन अभाव ग्रस्त है। आधुनिक सभ्यता की सुविधाओं से यह वंचित हैं। फिर भी इन्हें इन पर्वतों से प्यार है। अपनी संस्कृति और पुराने रिवाज़ों से इन्हें लगाव है। थोड़े में ही यह लोग संतुष्ट हैं और अपने आप में सुखी हैं। निश्छलता, निष्कपटता और सरलता इन लोगों के गहने हैं। यहां की औरतें परिश्रम, स्नेह, सद्भावना, सेवा और सहन शक्ति की प्रति मूर्तियां हैं।

इन लोगों में से कई कलाकार हैं। इन्हें यदि अपनी कलाओं को विकसित करने का मौका दिया जाता तो यह कला क्षेत्र में ऊंचे उठ सकते थे। इनकी ख्याति का सौरभ दूर-दूर तक फैल सकता था। पर दुर्भाग्य से ऐसे बहुत से फूल अनदेखे और

खिलने से पहले ही मुरझा जाते हैं। यह लोग अपने शरीर की सफाई का इतना ध्यान नहीं रख पाते। पर इस प्राकृतिक एवं स्वास्थ्यवर्धक वातावरण में सांस लेने का इन्हें सौभाग्य प्राप्त होता है। इन्हें कठिन मेहनत करनी पड़ती है। यह बहुत कम बीमार पड़ते हैं। यह लोग उन लाखों मजदूरों से कहीं अच्छे हैं जो खानों में काम करते हैं। नगर के सीलन भरे और विषैले वातावरण में सांस लेते हैं। नर्क के समान वह गन्दी बस्तियो में रहते हैं।

बातों ही बातों में वह कोठी पर पहुंच गए। बादलों की चादर की ओट में सितारों की स्निग्ध चमकीली किरणें छिपी हुई थीं। पर उदयमान चन्द्र की रूपहली ज्योत्स्ना उनमें से छन-छन कर आ रही थी।

आज की इस लम्बे समय की सैर के दौरान वह एक दूसरे के निकट आ गए। इतने निकट कि एक दूसरे के दिलों की धड़कनें सुन सकें। उन्हें लगा जैसे वह चिर-परिचित हों। उर्मिला ने अपने महबूब के साथ अन्तरंग आत्मीयता एवं घनिष्टता स्थापित कर ली। उसे लगा जैसे प्रेम मंजिल की कई सीढ़ियां वह एक सांस में चढ़ गई हो।

दिन अपनी गति से गुजरने लगे। रतन उर्मिला के दिलो-दिमाग पर छा गया था। वह उसके दिल के रास्ते से हो कर उसकी रूह में जज़ब होने लगा। उसके प्यार में वह पूरी तरह रंग चुकी थी। उसे बार-बार देखने की चाह बनी रहती थी। वही उसके जीवन का आकाश था। उस आकाश का चांद था।

उससे बातें करने की आरजू उर्मिला के मन में रह-रह कर मचलती रहती थी। कोई बहाना बना कर वह उसे अपने पास बुला लेती थी तो भी वह अपने दिल की हालत खुले शब्दों में बयान नहीं कर सकती थी। दिल खोल कर आज़ाद फिज़ा में वह उससे बातें नहीं कर सकती थी। कुछ बन्धन थे जिनमें कि वह बन्धी हुई थी। कुछ सीमाएं थीं जिन्हें वह लांघ नहीं सकती थी और घर की मर्यादा थी जिसका वह उल्लंघन नहीं कर सकती थी।

रतन को अपने समीप पा कर उसके दिल की धड़कन बेकाबू हो जाती थी। उसकी इच्छा होती थी कि वह उसके हाथ को अपने हाथों में ले ले। इस दुनियां को भुला कर उसके दामन में समा जाए।

उर्मिला के डैडी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। वह अक्सर बीमार रहते थे। उन्हें आराम की ज्यादा ज़रूरत थी। अपनी सेहत को सम्भालने, सुधारने और बीमारी के उपचार में उनका ज्यादा ध्यान रहता था। फिर भी उन्हें जीवन का अनुभव था। बेटी के हाव-भाव से और उसके तौर तरीकों से वह समझ रहे थे कि उसमें अनोखा परिवर्तन आ रहा है। वह किसी के प्यार में रंगती जा रही है। कोई

है जो उसके दिल में और उसके ख्यालों में बस गया है। इस सन्दर्भ में वह बटी से बात बात करें तो कैसे ! घर में कोई अन्य सदस्य भी ऐसा नहीं था जो उनकी युवा बेटी के दिल की टोह ले सकता और जिससे सक्सैना साहिब विचार-विमर्श कर सकते।

यह उम्र ही ऐसी होती है। युवाओं के वश की बात नहीं होती। दिलों का आदान-प्रदान हो ही जाता है। हम उम्र युवाओं में जरा सी मुलाकात हुई और निकट आने का मौका मिला तो वह एक-दूसरे के हो बैठते हैं।

पर उन्हें जब इस बात की भनक मिली कि उनकी बेटी उनके नौकर में ही दिलचस्पी रखती है तो बेटी के इस व्यवहार पर उन्हें चिन्ता ही नहीं गहरा दुःख भी हुआ। उर्मिला की गतिविधियों पर वह अब कड़ी नज़र रखने लगे। जहां कहीं भी वह जाते ड्राईवर को अपने साथ रखते।

अन्धेरी रात थी। मेघ मण्डित आकाश पहाड़ियों की छाती पर झुका हुआ था। छोटा सा वह सारा नगर सो रहा था। वृक्ष पौधे और मकान निद्रा निमग्न थे। मेघ गरजे और बिजली कड़क उठी। पक्षी अपने नीडों में बैठे कंपायमान हो उठे। भयभीत हो पशु अपने स्थान पर खड़े होकर उछलने लगे। उर्मिला की नींद भी उचट गई। उसने पुनः सोने की चेष्टा की। पर मौसम की भयंकरता और बादलों की गर्ज के कारण उसकी निद्रा विलासिनी आंखों से भी नींद उड़ चुकी थी। उसे बाथरूम जाने की जरूरत महसूस होने लगी।

बाथरूम हो आने के पश्चात् वह पुनः बिस्तर पर लेट गई। ऐसे मौसम मे और तनहाई में उसे अपने महबूब की याद सताने लगी। इस हालत में करवटें लेते हुए वह नींद को बुलाने लगी। उसे अपनी आंखों में सिमेट लेने की उसकी हर कोशिश नाकाम रही। उन आंखों में तो कोई और समाया हुआ था। पहले जब किसी कारण उसकी नींद रूठ जाती थी। प्राणायाम (गहरे और दीर्घ सांस लेने की क्रिया) का थोड़ा सा अभ्यास करने और राम, हरि इत्यादि का जाप करने से नींद पुनः उसकी आंखों में आ बैठती थी। आज इस क्रिया का भी उस पर प्रभाव नहीं हो रहा था। राम के नाम के स्थान पर 'रतन' उसके ध्यान में पूरी तरह समा गया था। मोटे-मोटे कम्बलों को ओढ़ने के लिए कभी वह उन्हें अपनी छाती तक खींच लेती कभी मुंह सिर ढांप लेती। कम्बलों को जब वह पूरी तरह ओढ़ लेती तो उसके शरीर को गर्मी आने लगती और जब वह उन्हें उतार देती तो उसे सर्दी लगने लगती। ऐसी हालत में जब काफी समय बीत गया तो वह बिस्तर में बैठ गई। खिड़की में से वह प्रकृति के प्रकोप के दृश्य देखने लगी। सहसा उसकी दृष्टि एक पुरुष पर पड़ी तो वह सिहर सी उटी। कहीं यह कोई चोर उच्चका तो नहीं। आंखें फाड़ कर वह उस आदमी की गतिविधियों को निहारने लगी। चाल उसे जानी पहचानी सी लगी। पर अन्धेरे में उस धूमिल सी आकृति को वह पहचान न पाई। उसे कुछ सन्देह सा

हुआ। उसका सन्देह विश्वास में परिवर्तित हो गया जब कि वह आकृति कुछ ही क्षणों में ड्राईवर के क्वार्टर में प्रवेश कर गई। उर्मिला उसे अब पूरी तरह पहचान गई थी। उसने राहत की सांस ली। पर उसके दिल की दशा बिगड़ गई। जो उसके पहलू में तेज़ी से धड़कने लगा। वह अस्थिर एवं विचलित सी हो उठी। उसके अंग-अंग में विकलता, उद्विग्नता, और अधीरता पैदा होने लगी। यौवन की प्यास उसे सताने लगी।

रात का गहरा सन्नाटा। शोर केवल पास वाले नाले के बहाव का। बीच-बीच में कोई पक्षी चीख उठता तो वह सहम सी जाती। इधर-उधर देखने लगती। उसके मन में विचारों का द्वन्द्व चल रहा था। भावनाओं और विवेक में टक्कर थी। विवेक आहत हो गया। भावनाओं के तूफान के आगे उसने सिर झुका दिया। संयम का बांध हिल कर ढह जाने को हो गया। प्रेमाग्नि में वह सुलग रही थी। संयत कदमों से सीढ़ियां उतर कर वह विद्युत गति से प्रांगण को पार करती हुई सीढ़ियां चढ़ने लगी।

वर्षा हो रही थी। बौछार ने उसे भिगो दिया। वस्त्र बदन से सट गए। यौवन शरीर से फूट रहा था। उसकी नस-नस में वासना की आग सुलग रही थी। कहीं कोई आहट होती थी तो वह सिहर उठती। भीता हिरनी की तरह वह आंखें इधर-उधर दौड़ाती। पर उसके कदम रुके नहीं और गति से वह आगे बढ़ने लगे। उसके भीतर उठा हुआ तूफान उसे विचलित किए जा रहा था। अपने महबूब का सामीप्य और दीदार पाने के लिए वह तड़प रही थी। वासना वेग ने उसके विवेक को आहत करके शून्य कर दिया था। उसे कोई ख्याल नहीं था कि वह कितना गलत कदम उठा रही है। यौवन की भूल उसे रसातल में फेंक सकती है। यह भूल उसे बहुत महंगी पड़ सकती है। बुद्धि के तर्क-वितर्क के नीचे दब कर बहने वाली वासना की पार्थिव धारा उफन कर ऊपर आ गई। रतन के क्वार्टर के द्वार पर उसके कदम रुक गए।

जाने क्यों सक्सैना की नींद भी उस समय खुल गई थी। अन्धकार में धुंधली सी नारीमूर्ति पर उनकी नज़र पड़ी। उन्होंने आंखें उघाड़ कर देखा तो बेटी को वह झट पहचान गए।

रात की इस वेला में उसका यहां क्या काम! वह बेटी को आवाज़ देकर बुलाना ही चाहते थे कि कण्ठ में उनकी ध्वनि जम गई। वह बेटी की गतिविधियों को देखने लगे।

उर्मिला ने इधर-उधर देखा। द्वार को तनिक उसने धकेला तो उसे खुला पाया। उसका साहस बढ़ गया। उसने सोचा कि रतन ने उसे देख कर द्वार जान-बूझ कर खुला छोड़ दिया है। चोर कदमों से वह भीतर चली गई। उस समय रतन अपने बिस्तर में पड़ा आराम से सो रहा था। उसके शांत सौम्य चेहरे पर ऐसा तेज़ था देखकर जिसे उर्मिला के भीतर बैठा वासना का भूत सहम सा गया। निर्निमेष नेत्रों

से वह उसके चेहरे को देखती रही। वह उसके युवा शरीर को नापने तोलने लगी। उस समय वह अत्यन्त प्यासी थी और उसके सामने रसीले जल का स्रोत ठाठें मार रहा था। उसका वक्षस्थल उत्तेजना एवं सांसों की लय के साथ लयबद्ध हो कर ऊपर नीचे गतिमान हो रहा था। उसके यौवन कलशों में जवानी का जल उछाले मार रहा था। रतन पर वह फूलों से लदी डाली की तरह झुक गई। उनके उष्ण श्वास परस्पर टकराने लगे। उसके भीतर एक ललक, वासना की एक लपट महसूस हो रही थी। आज तक उसने किसी मर्द की देह का स्पर्श नहीं पाया था। वह पल भर के लिए झिझकी। यद्यपि उसके हाथ अलिंगन के लिए कसमसा रहे थे। बेसुद्ध सा हुआ रतन सो रहा था। कुछ क्षणों तक तो वह इस इन्तजार में रही कि शायद रतन की नींद अपने आप खुल जाए। इस आशय से उसने एक दो दफा कण्ठ स्वर भी किया था। उसका कौमार्य जीर्ण पड़ गया था। वह एकमात्र ऐसी नवयौवना थी जिसके पास यौवन रस से परिपूर्ण सुन्दर शरीर था। एक पुरुष के सामीप्य मे उसका बदन पिघल रहा था।

रतन उसी मुद्रा में पड़ा था। उर्मिला से अब और रहा न गया। उसने साहस बटोरा। रतन की देह को उसने छूआ तो उसकी नींद खुल गई। हड़बड़ा कर वह उठ बैठा। सहसा एक युवती को अपने पास देख कर वह चौंक उठा। असह्य विस्फारित नेत्रों से उसने देखा। चर्म आश्चर्य की मुद्रा में उसे पहचानते हुए रतन ने पूछा, "तुम !"

"हां !" उर्मिला का सहम हुआ सा स्वर था।

"क्यों ?"

उर्मिला ने उसकी आंखों में देखा। उन आंखों में उस क्यों का उत्तर स्पष्ट था।

"क्यों आई हो ऐसे में ?" रतन ने पुनः प्रश्न किया।

'क्यों आता है ऐसे में कोई ? समझे नहीं।" उर्मिला ने उसकी अधखुली आंखों में अपनी आंखें डाल दी थीं। वह वासना विभूत सी हुई बैठी थी। उसका आंचल खिसक गया था। अनायास यह हुआ या सप्यास, रतन समझ न सका। घने काले बाल बेणी-बद्ध न होने के कारण उसके चेहरे पर छा रहे थे। कुछ लटें कन्धों से आगे बढ़ कर चोली में उसके वक्ष की ओर इंगित कर रही थीं। रतन की दृष्टि उधर को उठी। अपने आप को संयत करते हुए उसने दृष्टि उधर से हटाई और बोला, "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। मेहरबानी करके यहां से चली जाओ। किसी ने देख लिया तो क्या समझेगा।"

उर्मिला ने कोई उत्तर न दिया। उसका मन कुछ ऐसा हो रहा था कि वह रुकी रही।

"ऐसा कदम उठाने से पहले कुछ तो सोचा होता।"

उर्मिला बेकार सी हुई बैठी थी। उसके आनन पर पसीने की बूंदें टपक आई थीं।

"तुम भटक गई हो।"

भटकी हुई को थाम लो रतन! तुम मेरे यौवन की मंजिल हो। मेरे दिल की किश्ती के साहिल हो। मुझे तुम से प्यार है।"

"मगर यह प्यार नहीं वासना है। पागलपन है। प्यार का घिनौना रूप है। यौवन का उन्माद है। युवा-अवस्था की भूल है।"

रतन की वाणी में कुछ ऐसा असर था कि उर्मिला की तमाम उत्तेजना विश्रान्त पड़ गई। उसे अपनी भूल का अहसास हुआ। लज्जा और ग्लानि से वह पानी-पानी होने लगी।

"मुझे मुआफ कर दो। यह मेरी सरासर भूल थी।"

"भूल इन्सान से हो ही जाती है। इस उम्र में इसका तो हर कोई शिकार हो सकता है। चलो मैं तुम्हें तुम्हारे कमरे तक छोड़ आऊं।" रतन उठने लगा।

"मैं चली जाऊंगी। तुम लेटे रहो।"

सक्सैना साहिब द्वार की ओट में खड़े यह सब सुन रहे थे। उनका रोम-रोम कान बना हुआ था। भीतर की फुसफुसाहट उन्हें स्पष्ट सुनाई दे रही थी। रतन के व्यवहार और उसकी बातों पर उन्हें विश्वास सा नहीं हो रहा था।

जवानी अन्धी होती है। वासना का आवेग इस आयु में प्रचण्ड होता है। इस अवस्था में इतना कठोर संयम। सक्सैना साहिब को यकीन नहीं आ रहा था।

कुछ ही समय पहले उनके मन में रतन के प्रति क्रोध की ज्वाला भभक रही थी। वह दांत भींच रहे थे। उसे दण्ड देने का उपाय सोच रहे थे। उनका ख्याल था कि रतन के बहकाने और फुसलाने के कारण ही उर्मिला ने यह कदम उठाया होगा। कोई लड़की यकतर्फा ऐसा कदम नहीं उठा सकती।

बेटी के प्रति उनके मन में क्षोभ और ग्लानि पैदा होने लगी। इस युवक के प्रति अथाह श्रद्धा भाव उत्पन्न हो गए थे। वह उसे उन महन्तों, सन्तों, मठाधीशों, पुजारियों और ब्रह्मयोगियों से कहीं महान लगा जिनके चरणों का स्पर्श करके धर्मांध व्यक्ति इस संसार रूपी जाल से मुक्ति पाने की कल्पना करते हैं, जिनका आशीर्वाद पा कर वह समस्त पापों से मुक्त हो जाने की कामना करते हैं। इससे पहले कि उर्मिला द्वार खोल कर बाहर आए वह अपने कमरे में चले गए थे।

बेचैनी की हालत में वह कमरे में पायचारी करने लगे। सहसा उनकी नज़र कॉर्निस पर शोभायमान उनकी स्वर्गीया पत्नी के चित्र पर पड़ी। चित्र के समक्ष वह खड़े हो गए। क्रोध पिघल कर आंखों में उमड़ आया। चित्र को वह निहारने लगे। उनकी पत्नी उनके लिए प्रेरणा का स्रोत थी। जीवन के हर कठिन मोड़ पर वह उन्हे सहारा दिया करती थी। उन्हें लगा जैसे वह चित्र उन्हें आज भी सांत्वना देता हुआ कह रहा हो, भलाई इसी में है कि उर्मिला के डैडी कोई वर ढूंढ कर बेटी के हाथ जितनी जल्दी हो सके पीले कर दिए जाएं। पत्नी की शांत सौम्य सूरत ने उनकी उद्विग्नता और व्याकुलता काफी सीमा तक कम कर दी थी।

अगले दिन सुबह ही सक्सैना साहिब ने रतन को अपने पास बुलाया और पूछा, "तुम रहने वाले कहां के हो ?"

"जी, जहां भी रोज़ी रोटी मिल जाए।"

"तुम्हारे मां-बाप ?"

"वे मुझ से बचपन में ही बिछुड़ गए थे।"

"ओह !" सक्सैना साहिब ने गहरी सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा,

"देखो, तुम किसी बड़े नगर में अपना छोटा-मोटा कारोबार क्यों नहीं शुरु कर लेते। नौकरी में तो आदमी ज्यादा उन्नति नहीं कर सकता। मैं तुम्हारी हर मदद करने को तैयार हूं।"

"आपका बहुत बहुत धन्यवाद। फिलहाल मुझे यहां भी कोई कष्ट नहीं है। आप जैसे नेक दिल मालिक की सेवा में तो मुझे वैसे ही सुकून मिलता है।" अल्पायु में ही रतन के विचारों में प्रौढ़ता आ गई थी।

सक्सैना साहिब सोच में पड़ गए थे। कैसे कहें वह अपने दिल की बात।

"आप मेरी सेवा से सन्तुष्ट नहीं ?"

"यह बात तो नहीं। पर...।"

"आप रुक क्यों गए ?" रतन को कुछ सन्देह सा हुआ।

"तुम्हारा यहां रहना उचित नहीं।"

"ऐसी क्या बात है !"

"रात वाली घटना मैंने अपनी आंखों से देख ली हैं।"

रतन की गर्दन लज्जा के कारण झुक गई थी।

"तुम्हें शर्मिन्दा होने की ज़रूरत नहीं। भूल सरासर उर्मिला की थी। तुम्हारे चरित्र, गुणों और वफादारी की मैं कदर करता हूं। तुम्हारी जगह कोई और नौजवान होता तो बात बड़ी ग़लत हो जाती। मेरी बदकिस्मती है कि मुझे अब अपने खून पर ही विश्वास नहीं रहा।"

"विश्वास कीजिए, उर्मिला आंयदा ऐसी गलती नहीं करेगी।"

"यह तुम किस बलबूते पर कह सकते हो ?"

"उससे यह भूल ज़रूर हुई है। पर वह ऐसी वैसी लड़की नहीं है।"

"मानता हूं। पर यह मुआमला बड़ा नाजुक है। अन्य नौकरों को भी इस बात का सन्देह है कि उर्मिला तुझ में अनुचित दिलचस्पी रखती है। दीवारों के भी कान होते हैं। ऐसी अफवाहें फैलते देर नहीं लगतीं।" सक्सैना साहिब ने गम्भीर और विचारशील मुद्रा में कहा।

रतन भी खामोशी में डूबा खड़ा था।

"मैं जानता हूं तुम एक दूसरे को चाहते हो। तुम्हारा प्यार पवित्र है। इस चाहत का सम्बन्ध भावनाओं से होता है। प्रेम का खण्डहर यथार्थता की चट्टान से टकरा कर चूर-चूर हो जाता है। बेमेल का प्रेम सिरे नहीं चढ़ सकता। शादी एक कर्त्तव्य है। असलियत है। यह रिश्ता तो बराबर वालों के बीच ही शोभा देता है और निभ सकता है।"

"ऐसी बातें तो मैंने सोची तक नहीं थी। शादी वगैरा का स्वप्न तक नहीं लिया था।"

"मुझे तुम से यही उम्मीद थी। अपनी उम्र से बढ़ कर तुम बुद्धिमान और विवेकशील हो। पर उर्मिला फिर कभी भी भावनाओं में बह सकती है। प्यार के जोश में बड़े-बड़े घरों की लड़कियां नौकरों के साथ भाग कर घर की इज्जत को खाक कर देती हैं। इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि ऐसी अनेक नवयौवनाओं ने अपने कौमार्य की मर्यादा को वासना की आग में झोंक दिया है।"

"आप ठीक कह रहे हैं। मेरा यहां ठहरना उचित नहीं है।"

"तुम्हारे चले जाने से मुझे दुख होगा। तुम्हें तो किसी न किसी तरह नौकरी कहीं मिल ही जाएगी। पर तुम जैसा सेवक मुझे मिलना सम्भव नहीं। "मेरा एक सुझाव है।"

"कहिए ?"

"कुछ समय के लिए तुम कहीं और चले जाओ। उर्मिला की शादी इस स्थिति में मैं जितनी जल्दी हो सके, कर देना चाहता हूं। उसके पश्चात् तुम फिर मेरे पास आ जाना।"

"आप का बहुत-बहुत शुक्रिया।" रतन वहां से उठ कर अपने क्वार्टर की ओर जाने लगा।

"जा रहे हो ? रुको तो।"

सक्सैना साहिब उसके पास आए, यह रख लो। उन्होंने रतन को कुछ रुपए देने चाहे।

"रहने दीजिए। आप ने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है जिसकी कोई भी नौकर उम्मीद नहीं कर सकता। मेरे लिए यही बहुत है।"

"मैं हर नेक इन्सान की कदर करता हूं। तुम इस कदर के काबिल हो।"

उर्मिला को जब इस कहानी का पता चला कि उसका रतन वहां से जा रहा है तो वह तड़प उठी। उसने सोचा कि वह उसे कदापि जाने नहीं देगी। पर जब उसे यह पता चला कि उसके जाने का कारण रात वाली घटना है और उसके डैडी ने सब कुछ अपनी आंखों से देख लिया है तो वह अवश हिरनी की तरह सकपका कर

रह गई। इस हालत में उसे डैडी के मुह लगाना भी बड़ा मुश्किल था। अपने प्रियतम से कुछ लम्हों के लिए मिलना भी सम्भव नहीं था। उदासी और मायूसी उसके व्यथित मन में रेगिस्तान की तरह फैल गई। मिलने की चाहत उद्दाम वेग से जो उसके मन में उठ रही थी वह वहीं दफन हो कर रह गई। उसके प्यार का ताजमहल एक ही झटके से टूट कर टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसका प्रेम-दीप हवा के एक ही झोंके से बुझ गया।

रतन जब वहां से जाने लगा तो उर्मिला अपने कमरे की खिड़की की ओट में खड़ी उसे देखने लगी। उसके कोमल और आवदार चेहरे पर व्यथा और विद्रोह की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं उभर आईं थीं। उसका मन किसी घायल पक्षी की तरह छटपटाने लगा। जाते समय रतन ने भी उस खुली खिड़की की ओर देखा। उसकी खोई-खोई निगाहें कुछ ढूंढ रही थीं। उसके आतुर मन की मौन चीखें उर्मिला को सुनाई दे रही थीं।

सतृष्ण नेत्रों से रतन उस कोठी को देखता हुआ सड़क पर जाने लगा। वह कोठी उसे आज अपनी मोहब्बत की कबर दिखाई दे रही थी। टूटे मन और भारी कदमों से वह आगे बढ़ रहा था। उर्मिला उसे देखती रही जब तक कि वह नजरों से ओझल न हो गया था। टूटी मीनार की तरह वह अपने बिस्तर में गिर पड़ी मन की वेदना और व्यथा पिघल कर आंखों द्वारा बहने लगी। उन आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। दिन भर वह उसी स्थिति में लेटी रही। जब वह उठी तो दिन पीला-जर्द और उदास सा लग रहा था। कोठी में वीरानी वातावरण में नीरवता और सूनापन व्याप रहे थे। संध्या अपने परिधान सिमेट कर विदा हो रही थी उर्मिला की खुशियां उससे रूठ गई थीं। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था आंखों का पानी सूख गया था पर उसका दिल रो रहा था। यह ग़म उसे जिन्दगी भर तड़पाता रहेगा।

रतन एक बड़े नगर में चला गया। बेकारी की समस्या विकट रूप धारण किए हुए थी। रोज़ी और रोटी की तलाश में वह फिर से दर-दर की ठोकरें खाने लगा। सरकार द्वारा उन दिनों बेरोज़गार युवकों को रोज़गार देने के लिए एक स्कीम चलाई गई थी। स्कीम के अन्तर्गत उन युवकों को टैक्सी खरीदने के लिए कर्ज़ दिया जा रहा था जो आसान किश्तों में वापिस किया जाना था। रतन ने हिम्मत की। उसने एक टैक्सी ले ली। अच्छा ड्राईवर होने के साथ वह सिद्धहस्त मकैनिक भी था। वह मेहनती था। भाग्य ने उसका साथ दिया। बेकारी की उसकी समस्या हल हो गई। बड़ी सुगमता से उसका जीवन निर्वाह होने लगा।

उर्मिला को वह भुला नहीं सका था। उसकी याद उसके रोम-रोम में समाई हुई थी। विरह की वेदना उसके हृदय में थी। प्रियसी की स्मृति उसके मन में मीठी



टीस सी पैदा करती रहती थी। वह अकेला होता था तो उर्मिला उसके पास उसके सामने होती थी। उसकी छवि उसकी आंखों के सामने तैरती रहती थी। आंखें बन्द करके वह लेटता था तो पलकों के छज्जे से कूद कर उसके मन में वह सेंघ लगाने लग जाती थी। वह पास नहीं थी तो क्या हुआ। उसकी यादें तो सदा उसके साथ थीं। और वह यादें उसके लिए एक सहारा बनी हुई थीं। जीवन में संघर्ष करने के लिए उसे प्रेरणा देती थीं।

सड़क पर दौड़ती हुई टैक्सी कालेज के प्रांगण में प्रविष्ट हुई। बैक सीट पर बैठा एक व्यक्ति नीचे उतरा। किराया ड्राईवर को देते हुए वह बोला, "अगर तुम्हें कोई और सवारी न मिले तो मेरा इन्तजार कर लेना। मेरी बेटी इस कालेज में पढ़ती है। उसे मिल कर मैं अभी आया। इसके पश्चात् मुझे स्टेशन जाना है।"

"मैं आपका इन्तजार करूंगा। हो आइए आप।" इस टैक्सी को रतन ड्राईव कर रहा था। आज वह कुछ ज्यादा ही थकावट महसूस कर रहा था। उसने सोचा कि इतनी देर में वह कुछ आराम कर लेगा।

वह व्यक्ति चला गया। टैक्सी को एक ओर खड़ा करके उस में बैठ कर रतन कालेज की रौनक को देखने लगा।

छात्र छात्राओं की चहल-पहल और गहमा गहमी थी। प्रसन्न बदना और आकर्षण देह वाली छात्राएं छोटी-छोटी टोलियों में अपनी-अपनी सखियों के साथ घूम फिर रहीं थीं। उन्हें देखकर लगता था मानों रंग-बिरंगे फूलों में गुलदस्ते सुसज्जित हो घूम फिर रहे हों। मधुर वाणी में वह बतिया रही थीं। संगीतमय हंसी थी उनकी। उनके मुखार्विन्द से हंसी की फुहारें छूटतीं तो लगता था मानों संगीत की मधुर स्वर लहरी थिरक उठी हो या कहीं चांदी की छोटी-छोटी घटियां एक साथ टनटना रही हों। युवा छात्र उन ललनाओं के ललित लाघव का शिकार हो रहे थे। उनके मुख से संगीत अमृत का माधुर्य निःसृत हो रहा था। ऐसा था उन कोमलांगिनियों का हर्षोल्लास और इतनी मादक थी उनकी हंसी ठठोली कि उनके मुख से सुकथित परिहास भी संगीत के स्वर सामंजस्य से परिपूर्ण जान पड़ते थे। रतन को लग रहा था जैसे वह विद्या मन्दिर न हो कर फैशन प्रेड का कोई रमणीक स्थान हो।

उसे कोई भी विद्यार्थी स्कालर नहीं नजर आ रहा था। कौतुहल एवं उल्लास से भरे अपने सहपाठियों और साथियों के साथ गर्मजोशी से हाथ मिला कर वह प्रफुल्लित हो रहे थे। गर्मियों की लम्बी छुट्टियों की जुदाई के पश्चात वह मिल रहे थे। इस मिलन-मिलाप में उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही थी। कालेज का जीवन एक ऐसा समय होता है जबकि दोस्ती के जज़बात इन किशोरों-किशोरियों के मन में पूरी तरह प्रबल होते हैं। भावुकता प्रधान होती है। वह कुछ ऐसे मन-

पसन्द साथियों के साथ दिलों के रिश्ते स्थापित कर लेते हैं जो कालेज लाईफ समाप्त हो जाने के पश्चात् भी उनकी यादों की अमूल्य निधि बन जाते हैं। जीवन के किसी न किसी मोड़ पर यह परस्पर सहायक सिद्ध होते हैं।

कई आशिक मिजाज छात्र अपनी माशूकाओं की झलक पाने के लिए उन्हें बस एक नज़र से देख लेने के लिए और उनके सामीप्य में दो क्षण गुज़ारने के लिए बेताब थे। न जाने इन युवाओं को विपरीत सैक्स के सान्निध्य में कुछ क्षण गुजारने में क्या मिलता था। शायद एक अद्भुत आनन्द और अजीब सा नशा-सरूर जिसे अनुभव किया जा सकता है, व्यक्त नहीं किया जा सकता।

सुन्दरियां जब उनके पास से गुजर जातीं थीं और उन्हें खातिर में न लाते हुए एक नजर भी उन पर नहीं फैंकती थीं तो वह ठण्डी आहें भर कर रह जाते थे। कुछ तो सही मानों में दिल पर चोट खाये हुए थे। कई मनचले यह चोट खाने का अभिनय कर रहे थे। कहीं कोई जोड़ी एकान्त में वृक्षों की ओट में खड़ी हो कर एक दूसरे पर अपने हृदय के उद्गार प्रकट कर रही थी। वह शिकवे-शिकायतें कर रहे थे। वह व्यक्त कर रहे थे कि जुदाई के समय में उनके दिल पर क्या बीती। उनका यह प्रेम-मिलन एक दूसरे सहपाठियों और साथियों के लिए ईर्ष्या का कारण बना हुआ था।

विद्यार्थियों की एक टोली टैक्सी के इतनी समीप आ बैठी थी कि रतन को उनकी वार्तालाप स्पष्ट सुनाई दे रही थी। ऐसा मालूम होता था कि वह 'खाऊ-पिऊ और हल्ला-गुल्ला मचाऊ सभा' के सरगर्म सदस्य थे।

एक छात्र ने घास पर लेटते हुए पूछा, "क्या टाईम हुआ है?" "दस बजने को हैं।" दूसरे ने अपनी घड़ी पर नज़र दौड़ाते हुए बताया। उसकी यह घड़ी नई थी। यह उसने छुट्टियों में ली थी। उसके साथी उसे ध्यानपूर्वक देखने लगे। यह नये डिज़ाईन की थी। कितने की है? कहां से ली है? कैसी चल रही है? वह ऐसे अनेक प्रश्न पूछने लगे। घड़ियों पर बातें होने लगीं।

सहसा एक छात्र ने बातों का रूख बदलते हुए कहा, "दस बजे तो प्रिंसिपल ने हमें एड्रेस करना है। चलें हाल में?" "छोड़ो यार, वहां जा कर तो बोर ही होना पड़ेगा। बूढ़ा खसूट यही भाषण देगा कि छात्रो, चरित्रवान बनों। कार्यकुशल और निष्ठावान बनों। तुम्हारे माँ-बाप तुम पर इतना धन खर्च करते हैं। तुम उनकी आशाओं को पुंज हो। उनकी उम्मीदों के चिराग हो। देश के भावी नेता और कौम के निर्माता हो तुम। राष्ट्र का भविष्य तुम्हारे हाथों में है। अनुशासन में रहा करो। अपने दायित्व को पहचानो। निजी शुभ-अशुभ को न भूलो। इत्यादि-इत्यादि।" बोलने वाला युवक इतना सजा-धजा था कि लगता था जैसे शैतान जशन मनाने निकला हो। उसकी उंगलियों पर नैकोटिन के निशान थे जिससे स्पष्ट था कि वह चेन समोकर है। वह नकलची बन्दर भी था। प्रिंसीपल की उसने ऐसी नकल उतारी और ऐसा मजाक उड़ाया कि उसके लफगे किस्म के वे साथी और यार दोस्त 'हो हो' करते हुए लोट पोट होने लगे।

रतन को छात्रों की यह बेहूदा हरकतें अच्छी न लगीं। टैक्सी की बैक सीट पर लेट कर वह आराम करने लगा उर्मिला की यादें उसे ताज़ा हो गईं। एक दिन गाड़ी में बैठी वह सो गई थी। सोई हुई युवती कितनी सुन्दर हो सकती है—बहुत ही मधुर और निश्चल, बस सांस लेती हुई और मुस्कराती हुई—और कुछ नहीं। वह उसे देखता रहा था।

कभी-कभी गाड़ी में वह घूमने निकल जाते। जब तक गाड़ी हवा से बातें न करने लग जाती, उसका मन न भरता। दूर कहीं रमणीक स्थल पर जा कर वह लेट जाते।

उसकी बातों को याद करके रतन का हृदय भारी हो जाता था। सब से बड़ी बात थी कि वह उसे प्रेम करती थी। उसके प्रेम का परिचय उसे दुलार में ही नहीं मिलता था जो कि वह उस पर न्योछावर करती थी, बल्कि उसका समूचा दिल प्यार में भरा हुआ था। बातें करते समय कभी-कभी उसके रोम रोम में नीरवता छा जाती और तब वह बहुत ही अद्भुत मालूम होती थी। उसकी आंखें सीधी रतन की आत्मा को छू जाती। वह उसे इतनी सुन्दर लगती कि बयान से बाहर। शायद संगीत ही उसके सौन्दर्य को व्यक्त कर सकता। और यह भी तभी हो सकता था जबकि संगीतकार अपनी आत्मा को पूर्णरूपेण उसमें उड़ेल कर रख दे।

उर्मिला की हसीन यादों में वह खोया हुआ सा बैठा था। उसे नींद की झपकी आ गई। उसने देखा कि उर्मिला अपनी सखियों सहेलियों के संग कालेज लॉन में बैठी हुई थी। लॉन में बिछा घास का कालीन उन हसीनाओं के हल्के और नाजुक पांव चूम कर आनन्द विभोर हो उठा था। क्यारियों में खिले हुए उन नवयौवनाओं के समक्ष फीके पड़े हुए थे।

पंजाबी हुस्न, लखनवी अन्दाज मोहक अदाएं और यौवन के खुमार के समन्वय की वे प्रतिमाए थीं। उनकी आंखों में सितारों की सी चमक थी और होंठों पर खिली धूप सी मुस्कान। मस्त पवन के उन्मुक्त झोंके उनकी उलझी-उलझी और उड़ती-उड़ती अलकों उनकी उठती गिरती बोझिल पलकों को निरन्तर परेशान कर रहे थे।

अपनी उन सहेलियों में घिरी हुई उर्मिला चुप-चाप और उदास-गम्भीर सी मुद्रा में बैठी थी। सौम्य मुखमण्डल और बड़ी-बड़ी पानीदार आंखें। उस समय वह किसी फिल्म की नायिका या कालिदास की शकुन्तला सी लग रही थी। रतन उसमें खो सा गया था।

उर्मिला की सहेलियां उससे छेड़-छाड़ कर रही थीं। पर वह उनके मध्य बैठी हुई भी उनसे अलग-अलग लग रही थी। वह ठिठोली और दिल लगी कर रही थीं। एक—अरी तुझे क्या हो गया है? महात्मा बुद्ध की चेली बनी बैठी है? छुट्टियों से पहले तो तू ऐसी नहीं थी। दूसरी—लगता है इस बेचारी को कोई रोग लग गया है। तीसरी—बीमारी भी भयानक होगी। गुलाब से फूल का चेहरा पीला पड़ गया है। बेचारी पल-पल में ठण्डी आह भर रही है।

चौथी—यह अलामतें तो इश्क की बीमारी की हैं ।

"बात सही है । इस उम्र में यह बीमारी अक्सर लग ही जाती है ?" पहली सखी ने उर्मिला की चिबुक को उभारते और उसकी आंखों में देखते हुए कहा ।

"तुझे क्यों नहीं लगी यह बीमारी अभी तक ?" उर्मिला ने साहस बटोर कर कहा ।

"यह तो नागिन है, नागिन । न जाने कितनों को डस चुकी है । नित नये आशिक बनाती है । उन्हें खूब बहकाती और तड़पाती है । इसके लहराते यौवन पर उन्नत उरोजों, मद भरे नयनों और आरक्त कपोलों पर जाने कितने मरे होंगे ।" उर्मिला की एक खास सहेली ने उसका पक्ष लिया ।

उनकी बातों में गहन उन्माद छलक रहा था । नेत्रों में उन्माद और अंग-अंग में चंचलता झलक रही थी । उनके अधरों पर मधुर हास्य की आभा थी । उर्मिला ही एक ऐसी थी जो खामोश और गम्भीर सी बैठी थी ।

"क्यों री, प्रणय की आरम्भक छेड़छाड़ ही है या यौवन की बहार भी लूटी है । खूब मजा आया होगा ।" चंचल नेत्रों वाली बाचाल सी उसकी एक निर्लज्ज सी सखी ने पूछा । वह इतनी सुन्दर तो नहीं थी । पर यौवन और उन्माद के मिश्रिण ने उसमें आकर्षण भर रखा था ।

"कौन है री, भाग्य का वह सिकन्दर ?"

"बता दे न ?"

"यह नहीं बताएगी ।"

"क्यों ?"

सोचती होगी कि कोई इसके उसको इससे छीन न लें । एक एक शब्द पर जोर देते हुए कहा एक सखी ने ।

"छोड़ो, हटो । आज तो तुम ने शर्म ही बेच खाई है ।"

"चलो भई चलें ।" उस यात्री की आवाज ने रतन को झंझोढ़ सा दिया था । उसके सपने का तांता टूट गया । वह चौंक सा गया । आंखें मसलते हुए वह उठा और अपनी सीट पर जा बैठा ।

"मैंने सोचा था तुम चले गए होंगे । मुझे कुछ ज्यादा ही देर लग गई । क्या करता प्रिंसीपल साहिब को मिलना जरूरी था । वह लड़कों को भाषण देने में बिजी थे ।"

"कोई बात नहीं । अब कहां पहुंचना है आपने ?" रतन ने स्टेयरिंग पर झुकते हुए पूछा ।

स्टेशन चलो । तूफान मेल पकड़नी है । मिल जाएगी ?

"अभी समय है । रतन ने घड़ी पर नजर दौड़ाते हुए कहा ।

सड़क पर फिक था । रतन गौर से गाड़ी चलाने लगा ।

सांझ का भीरू अन्धकार अटक-अटक कर धरती के वक्ष पर उतर रहा था। लम्बी यात्रा के पश्चात् रतन अभी-अभी घर वापिस आया था। शान्त क्लान्त सा वह अपने कमरे में लेटा हुआ था। उसका अंग-अंग टूट रहा था। कमरा सायं-सायं कर रहा था। अन्धकार और सूनापन उसके कोने-कोने में सहमा सा बैठा था। एक स्त्री उसके पास आई।

"लाला कब आए तुम। ऐसे क्यों लेटे हुए हो। दिया-बत्ती तो कर ली होती।"

तबियत आज ठीक नहीं लगती' भाभी। आते ही लेट गया था।

"देखूं कहीं बुखार तो नहीं ?" उसने माथे पर हाथ रखा तो वह चिन्तित सी वाणी में बोली, अरे तुम्हारा तो बदन जल रहा है। इतना बुखार ! एक सौ दो से ऊपर होगा।

आगन्तुका रतन की पड़ोसन थी। उससे वह बहुत स्नेह करती थी। पड़ोसी होने के नाते उनमें आत्मीयता के साथ घनिष्ठता स्थापित हो चुकी थी। रतन के वह छोटे-मोटे और गृहकार्यों में सहायता कर दिया करती थी।

"क्यों हो गया है इतना बुखार।"

"थकावट की वजह से है। चिन्ता की बात नहीं। दो दिनों में उतर जाएगा।

"कोई दवाई ली या नहीं ? अपनी सेहत का कुछ तो ध्यान रखा करो।"

"ज्यादा दवाइयों में क्या पड़ा है। बुखार कोई बीमारी भी तो नहीं। दो दिनों में अपने आप ही भाग जाएगा।

"तुम्हारी तरह हर कोई सोचने लगे तो डॉ० बेचारे भूखे मर जाएं।"

"यहां के डॉ० बेचारे नहीं, भाभी, लुटेरे हैं। बीमारी की ओर कम मरीजों की जेब की ओर उनका ज्यादा ध्यान रहता है। कुछ दिनों की बात है। मेरा एक साथी डॉ० के पास गया। परीक्षण के पश्चात् डॉ० ने उसे आठ गोलियां दीं। फीस इत्यादि के रूप में डॉ० ने उससे सत्तर रुपये बटोर लिए। इतनी फीस सुनकर वह गरीब सिहर सा उठा। उसे बीमारी से ज्यादा दुःख डॉ० की फीस का हुआ। डॉ० की फीस तो देनी ही थी। बेंच से उठते हुए वह बोला, "एक बात कहे बिना नहीं रह सकता। डॉ० साहिब।

"कहो जल्दी।"

"अब अगर मर भी रहा हूं, तो भी न आऊंगा यहां।"

क्यों ?

आठ गोलियां और पांच मिनटों के परीक्षण के सत्तर रुपये। इतने कीमती इलाज से तो अच्छे भले आदमी का कचूमर निकल जाए। हम गरीबों की तो क्या औकात।

तो सरकारी अस्पताल में चले गए होते। डॉ० ने झुंझलाते हुए कहा।

वहां पर तो आप जैसे देवताओं का शासन चलता है। उस की बाणी में व्यंग्य था।

"डॉ० का चेहरा उतर गया था। अपमानित सा हो वह झेंप रहा था।"

रतन ने यह कहानी सुनाई।

"किया भी क्या जाए देवर भैया। बीमार आदमी कहाँ जाए। परमात्मा इसके वश न पाये तब ही अच्छा है।

"डाक्टरों से छुटकारे का उपाय तो है भाभी।"

"वह कैसे ?

"बीमारी को पास ही न आने दिया जाए।"

"यह कैसे हो सकता है। दुःख सुख तो कर्मों का है। बीमार होना तो शरीर का धर्म है।"

मानता हूं कि सेहत विधाता का वरदान है। कुछ लोग ऐसे हैं जो रूखी-सूखी खाते हैं फिर भी बीमार नहीं पड़ते। बहुत से अमीर लोग ऐसे हैं जिन्हें जीवन के तमाम ऐशोराम उपलब्ध हैं उनकी देखभाल के लिए डॉ० उनके आगे पीछे-फिरते हैं। वह स्वास्थ्य के धन से वंचित हैं। फिर भी यदि सेहत की सम्भाल रखी जाए और स्वास्थ्य के नियमों का पालन किया जाए तो मनुष्य रोगों से बचा रहता है। शरीर एक मशीनरी की तरह है। इस पर जितना कम बोझ डाला जाए उतना ही यह ज्यादा समय तक ठीक रहती है।

"हम अनपढ़ और गंवार लोगों को इन बातों का क्या पता।"

यही तो दुःख की बात है। इस देश में गरीबी और अज्ञानता है। लोग सेहत के साधारण असूलों से भी अनभिज्ञ हैं। नियमित रूप से व्यायाम किया जाए, प्राणायाम और योगासनों का अभ्यास करने से कई बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। यह एक प्रकार का कुदरती इलाज है। इस पर कोई पैसा खर्च नहीं होता। पर लोग इस पद्धति से भिज्ञ नहीं हैं।"

"ज्यादा बातें न करो, तुम्हें अब आराम की आवश्यकता है। यह बताओ कि तुम्हारे लिए क्या बना कर लाऊं ? खिचड़ी या दाल। कुछ तो लोगे ही।"

"आज तो मैं पूर्ण उपवास रखूंगा।

कुछ खाओ पिओगे नहीं तो कमजोर हो जाओगे। पहले ही कितने दुबले-पतले हो। उपवास तो उन लोगों के लिए ज्यादा लाभदायक होते हैं जिनकी हड्डियों पर अनावश्यक चर्बी चढ़ी हो। तुझे मैं भूखा नहीं रहने दूंगी।"

"अच्छा, सोने से पहले थोड़ा दूध ले लूंगा।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा। कुछ क्षण उनके बीच चुप्पी छा गई।"

वह औरत एक आशय से आई थी। एक बात, उसके मन में उमड़-घुमड़ रही थी। दिल की बात उसकी जवान पर आ रही थी।

"एक बात कहूं देवर भैया ।"

"हां"

"तुम अपना घर बसा लो न ?"

"यह घर ही तो है ।"

"यह तो ईंट-गारे की दीवारें हैं । घर ऐसे नहीं बनता ।"

"तो कैसे ?"

"बिना घर वाली के घर भूतों का डेरा होता है ।"

"तुम्हारा मतलब मेरी शादी से है ?"

"और नहीं तो क्या । यही तो उम्र है ।"

"क्यों मुझे जंजाल में फंसाती हो ? अपनी नींद सोता हूं । मजे से रहता हूं । आजाद पक्षी की तरह उड़ता-फिरता हूं । शादी के पश्चात् आदमी अपने काम का तो रहता नहीं । वह अपनी आजादी खो कर एक खूंटे से बांध कर रह जाता है । शादी जो करवा लेता है वही पछताता है ।

"जो नहीं करवाता वह भी पछताता है ।" उस औरत ने कहा ।

"तुम ठीक कहती हो । मैंने कहीं पढ़ा है कि विवाहित जीवन में तीन स्टेजें होती हैं ।"

"कौन सी ?"

शुरू-शुरू में पति-पत्नि एक दूसरे के प्यार में रंगे होते हैं : वह एक दूसरे के लिए पूजनीय होते हैं । प्यार की पींघें खूब चढ़ाई जाती हैं । दूसरी स्टेज वह होती है जबकि पति-पत्नी को अपनी सहचरी समझता है । फिर ऐसी स्थिति आती है कि पति यह महसूस करने लग जाता है कि वह अपनी आजादी खो बैठा है । पशु की तरह वह खूंटे से बंध कर रह गया है । वह झुंझलाता है । छटपटा कर रह जाता है ।

"अरे, यह कैसी बातें करते हो । ऐसे अनुभव तुमने कहां से सीख लिए । एक ही बात हर एक पर लागू नहीं हो सकती ।"

"जीवन की यह कुछ सच्चाइयां हैं ।" रतन बोला ।

"कुछ भी है । गृहणी के बिना घर, घर नहीं होता । कोई आएगी तो उसका घूमना-फिरना इस सूने घर को बारौनक और सजीव बना देगा । तुम्हारे एकांकी, उदास, उखड़े और नीरस जीवन में रस घोल देगा । तुम्हारी रातों का रीतापन समाप्त हो जाएगा ।"

"आटे दाल का भाव भी तो पता लग जाएगा ।"

"तुम नयारे नहीं हो । विवाह तो हर कोई करवाता है । यह तो समाज का असूल हैं । वह तुम्हारी प्रणयनी भी तो बन सकती है ।

"मैं यह बात नहीं मान सकता ।"

"क्यों ?"

प्रणयनी और गृहिणी में बड़ा अन्तर होता है। जो प्रणयनी है वह गृहिणीं नहीं हो सकती। गृहिणी से यदि विचारों का मेल न खाता हो और स्वभावों में भिन्नता हो तो जीवन में कलह, कुढ़न, मन-मुटाव इत्यादि पैदा हो जाता है। दुःख और घुटन के घनघोर बादल छा जाते हैं।"

"तुम तो बहस में पड़ जाते हो। बहस में कोई जीत भी नहीं सकता तुम्हें।"

बात रुक गई। दोनों एक दूसरे के मनो भाव को समझते थे। वह पड़ोसन भांप गई थी कि रतन दिल पर चोट खाये हुए है। कोई इसके दिलो-दिमाग पर छाई हुई है। इसके रोम-रोम में उसकी याद समाई हुई है उसका इस पर ऐसा जादू चला हुआ है कि उसकी यादों में खोया रहता है। उसके सिवा यह किसी और के बारे में सोच ही नहीं सकता। रतन भी इस तथ्य को जानता था कि यह औरत उसमें इतनी दिलचस्पी क्यों लेती है। इसकी एक बहन है जिसके लिए इसने उसे पसन्द कर रखा है। वह उसकी हां करवाना चाहती है।

शादी विवाह की जब भी बात होती थी तो रतन उस प्रसंग को टालने की कोशिश में होता था। आज तो वह हताष ही नहीं निराश सी हो गई थी। वह जान गई थी कि इन तिलों में तेल नहीं है। दूध लाने के लिए वह वहां से उठ कर चली गई। रतन को भी बाहिर जाने की जरूरत महसूस हुई।

पूनम की रात के हसीन मन्जिर को देखकर वह आनन्दातिरेक में बहने लगा। सारा आलम चन्द्र ज्योत्सना से सराबोर था। आकाश पॉलिश किये हुए इस्पात की सी गहरी नीली झलक फेंक रहा था।

दूध आ गया था। इसे पी कर रतन बिस्तर में लेट गया। पलकों के छज्जे से छलांग लगा कर नींद उसकी आंखों में आ बैठी। उर्मिला की याद तो सदा उसके साथ रहती थी। स्वप्न में उसने देखा कि सक्सेना साहिब की कोठी में चहल-पहल थी। उर्मिला की शादी हो रही थी। कोठी को शानदार ढंग से सजाया गया था। विद्युत् दीपों की झालरें, कुमकुम और मरकरी लाईट की ट्यूबों से कोठी जगमग कर रही थी। उर्मिला का भाग्य बन्धन किसी ऊंचे घराने के अमीर जादे के साथ जग-मग हो रहा था। वेदिका रंग-बिरंगे कागजों, सुगन्धित पुष्पलताओं तथा विद्युत् बत्तियों से शोभायमान थी। वेदमन्त्रों का उच्चारण शान्त वातावरण में माधुर्य एवं पावनता घोल रहा था। हवन कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित हो रही थी। पण्डित पति-पत्नी को एक दूसरे के प्रति उनके कर्त्तव्य बता रहे थे। सुखी दाम्पत्य एवं गृहिस्थ्य जीवन के रहस्य बता रहे थे। अग्नि के गिर्द चक्र लगाने से विवाह की रस्म पूरी हो गई। दो अपरिचित जन आज से एक हो गए। सुख-दुःख में वह एक दूसरे के भागी हो गए। जीवन के प्रति उनकी आशाएं, स्वप्न और उमंगें सब एक हो गईं। एक ही डाल के वह पक्षी बन गए।

लाल रंग के परिधान में लिपटी दुलहन लज्जा की सलोनी प्रतिमा सी लग रही थी। उसकी आंखें पलकों में ढकी हुई थीं। बाबुल की गलियां छोड़ कर वह पति

के संग उसके घर को रवाना हो गई। उस घर को जो उसका अब अपना बन चुका था। जो उसके अपने थे, जिन लोगों द्वारा उसका पालन-पोषण हुआ था, जिस घर में उसने जन्म लिया था, जिन दीवारों के मध्य उसके बचपन की किलकारियां गूंजी थीं, जिन गलियों में वह अपने बचपन की सहेलियों के साथ खेली थी, जिस घर के कण-कण से उसे लगाव था—वह सब आज उसके लिए बेगाने हो चुके थे। क्योंकि एक अजनबी उसके जीवन का सर्वस्व बन चुका था। बाबुल के लिए वह पराई हो चुकी थी क्योंकि कोई पराया उसका अपना बन चुका था।

जुदाई के समय वह अपनी सखियों, सहेलियों और नज़दीकी रिश्तेदारों से घिरी हुई थी। मातृविहीना होने के कारण जुदाई का गम अथाह हो गया था। सभी आंखें पुरनम थीं। उर्मिला के सुन्दर नेत्र टेसु-टेसु कर रहे थे। उसकी कुछ सखियां मधुर आवाज में जुदाई और विदाई के गीत गा रही थीं। उनकी सखी उर्मिला का दाम्पत्य जीवन मंगलमय हो, इस अभिलाशा को वह प्रकट कर रही थीं।

आज की रात उर्मिला के जीवन की अनोखी रात थी। नये रिश्तेदार, नया साथी और पहली रात के नवीन अनुभव। मानों वह नया जीवन आरम्भ करने लगी हो। एक अजनबी को जो उसका हृदयेश्वर बन चुका था उसके चरणों में अपना सर्वस्व और कौमार्य का अछूता मोती अर्पण करने जा रही थी। चम्पा और चमेली के फूलों की महक से सुहाग कक्ष महक रहा था। सुहाग सेज सजी हुई थी। सोलह सिंगार किये वह उस सेज पर बैठी थी। लगता था आकाश लोक के नन्हें फरिश्तों के कलात्मक करों द्वारा उसका श्रृंगार किया गया हो। उसकी मांग में सिन्दूर जगमगा रहा था। माथे पर मांग-फूल और सौभाग्य का चिह्न बिन्दिया थी। कलाइयों में चूड़ियाँ खनक रही थीं। उसके पांवों में महावर था।

सुहाग सेज पर वह लज्जा की छूई-मूई गठड़ी बनी बैठी थी। द्वार धीरे से खुला। एक युवक जो उसका पति था, भीतर आया। दुलहन के पास वह पलग पर बैठ गया। बिजली के मन्द प्रकाश में उसका मुख चन्द्र अपने हाथों में थामते हुए ऊपर को उभारा। रूपसी के सौन्दर्य को देखकर वह गद्-गद् हो उठा। पति के मन में यौवन की सहज आकांक्षाएं लरज रही थीं। नवेली दुलहन को उसने अपनी बाहों के घेरे में ले लिया। बाहों का बन्धन घेर तंग होने लगा तो वह छटपटाने लगी। पति ने आलिंगन ढीला कर उसका मुखचन्द्र और उसकी गोल सुडौल ठुड्डी को ऊपर उठाया। सीपी संपुट से उसके मधुर अधर खुल गए। पति के प्यासे होंठ उसके खुले होंठों की ओर बढ़े। उसके होंठों ने पत्नी के अधरों का स्पर्श किया ही था कि वह सहसा चीख सी उठी।

"नहीं—नहीं ऽ—ऽ।

पति ठिठक सा गया। "यह क्या।" उसने पूछा।

"मैं ऐसा नहीं कर सकती।" वह थरथरा रही थी।

"क्यों ? तुम परिणीता हो मेरी। यह मेरा अधिकार है।"

पति हैरत में पड़ गया था। आलिंगन टूट चुका था।

"मुझे मुआफ करें आप।"

"क्या मैं इसकी वजह जान सकता हूँ।" उद्विगता की हालत में उर्मिला के पति ने पूछा।

कुत्तों के भौंकने की आवाज से रतन की नींद खुल गई। हड़बड़ा कर वह उठ बैठा। भय विस्फारित नेत्रों से वह इधर-उधर निहारने लगा। यह स्वप्न था। उसने अपने आप को सामान्य स्थिति में लाने का यत्न किया। वह सोचने लगा कि यह सपना सच्चाई पर आधारित हो सकता है। उर्मिला की इस समय तक शादी हो गई होगी। बेटी जब जवान हो जाए तो हर कोई मां-बाप उसके हाथ पीले करके अपने दायित्व से मुक्त हो जाना चाहता है। और खास कर जब जवान बेटी की अनुचित हरकत मां-बाप की नज़र में आ जाए।

नारी तो लता के समान है। उसे पुरुष रूपी लता का सहारा तो चाहिए ही। बिना सहारे के वह ज़िन्दगी का इतना लम्बा सफर कैसे काट सकती है।

स्वप्न में रतन ने आज जो देखा था उसके लिए चिन्ता का कारण बन गया था। पहली रात को पति अरमानों, उमंगों और हसरतों भरा दिल ले कर अपनी दुलहन के पास जाता। यह रात एक दूसरे के हो जाने की, एक दूसरे में समा जाने की और अपना सर्वस्व अपर्ण कर देने की होती है। पति को शारीरिक सुख और सुकून देना प्रत्येक पत्नी का पावन कर्त्तव्य है। दाम्पत्य जीवन में सुख शान्ति और सफलता का यह बड़ा साधन है। प्रथम मिलन की पहली रात में ही यदि उनके बीच किसी प्रकार की गलत फहमी पैदा हो जाती है तो उनके विवाहित जीवन में दरारें पैदा होने का डर बन जाता है। शंका के काले बादल छा सकते हैं। उनमे तनाव घृणा और ईर्ष्या पैदा हो सकती है। जीवन में विष घुल जाता है। इससे घातक परिणाम निकल सकते हैं। विवाहित जीवन तबाह हो जाता है। पत्नी चाहे अथाह गुणों की गुथली हो पर यदि वह पति को नैसर्गिक सुख से वंचित रखती है तो वह पति के लिए न होने के बराबर है। यौन आकर्षण का अभाव और यौन सम्बन्ध ठीक न होने की हालत में पति को गलत मार्ग पर चलने का और पत्नी का तिरस्कार अथवा उसकी अवहेलना करने का उसे एक बहाना मिल जाता है।

उर्मिला ने समार्पण न करके उचित नहीं किया। वह नव विवाहिता है। पति के प्रति उसे अपने दायित्व का बोध होना चाहिए था। रतन को चिन्ता होने लगी। साथ ही उसे यह भी ख्याल आया कि यह तो महज एक सपना है। बहुत कम सपने हैं जो सच्चे सिद्ध होते हैं। ऐसे ही विचारों के सागर की लहरों पर तैरता हुआ और उनमें गोते खाता हुआ वह पुनः लेट गया। रात अभी बाकी थी। उसने पानी के दो-चार घूंट लिए और निद्रा देवी के अंक में समा जाने का वह यत्न करने लगा।

समय का पहिया घूमता रहा। टैक्सों से उसे अच्छी आय होने लगी। आर्थिक संकट टल गया। उसका अच्छा गुज़ारा होने लगा। कर्जे की किश्तें चुका देने के

पश्चात् उसके पास कुछ पैसे बचने लगे। टैक्सी उसके एकान्त एवं मूक जीवन की सहचरी थी। जुदाई का मीठा दर्द उसके मन में घर कर चुका था। यादों की पगडंडियों पर वह भटकता रहा। उर्मिला की याद उसके ख्यालों का अभिन्न अंग बन गई थी। उसकी यादें ही रतन के लिए सहारा बनी हुई थीं। यादों की लहरें दिल के साहिल से टकराती रहती थीं। अपने कार्य में उसे लगन थी। इस लगन में वह मन की वेदना को कुछ समय के लिए भूल जाता था।

टैक्सी के पहिए शहर की शानदार सड़क पर घूम रहे थे। रतन उसे ड्राईव करता हुआ वहां की रौनक को देख रहा था। सुन्दर और भव्य भवनों को, व्यापार के केन्द्रों को, विद्यामन्दिरों, साहित्य और संगीत की रंग शालाओं को और हसीन बाज़ारों को देखते हुए वह हैरान हो रहा था। जैसे वह भारत के किसी महानगर में नहीं बल्कि किसी विकसित देश के बड़े नगर में घूम रहा हो। शोख वसना और अलट्रा माडर्न युवतियों को देखकर तो ऐसे लगता था जैसे वह पैरिस की किसी स्ट्रीट में घूम रहा हो।

पर ज्यादातर ऐसे बाज़ार थे जिनकी दशा शोचनीय थी। सड़कें जनसमूह से खचाखच भरी पड़ी थीं। वह लोग व्यस्त थे। सड़क पर चलने वाले उन लोगों को देखकर लगता था कि जैसे वह चल न रहे हो, भाग रहे हों। या वायु के परखों पर उड़ रहे हों। जैसे वह अपराधी हों, चोर उच्चके हों और पुलिस उन्हें पकड़ने के लिए उनका पीछा कर रही हो। जैसे कहीं आग लगी हुई हो और वह उसे बुझाने जा रहे हों। जैसे वह लोग जी न रहे हों पर जीने की आशाएं और अभिलाषाएं संजोए हुए जिन्दगी की दौड़ में एक दूसरे के आगे निकल जाने की चेष्टाएं कर रहे हों। बड़े नगरों में जिन्दगी के मज़े वह लोग ले रहे थे जिनके पास कार, कोठी और बैंक बैलेंस थे। मध्य वर्गीय लोगों के जीवन में न तो चैन था और न ही आराम। न सुख-शान्ति थी और न ही संतोष। उन लोगों में न तो सजीवता दिखाई देती थी और न ही उनके चेहरों पर प्रसन्नता के चिन्ह थे। प्रत्येक प्राणी चिन्ता की चलती-फिरती मूर्ति लग रहा था। इनमें बहुत ही कम भाग्यशाली लोग थे जो अपनी अभिलाषाओं की पूर्ति कर पाते थे। यह लोग जीवन की कठिनाइयों से जुझते हुए और गृहस्थी का बोझ ढोते हुए परलोक सिधार जाते थे। इनके सीने इनकी आरज़ुओं और तमन्नाओं की कबर बन कर रह जाते थे।

सांझ का समय था। टैक्सी सड़क पर दौड़ रही थी। रतन को कुछ थकावट सी महसूस हो रही थी। एक जगह गाड़ी खड़ी करके वह आराम करने लगा था।

क्षितिज में लालिमा प्रतिक्षण गाढ़ी होती जा रही थी। सूर्य की किरणें पेड़ों के पांवों को चूमती हुई सिमटती जा रही थीं।

स्टेयरिंग वह्वील पर सिर टिकाए रतन अभी बैठा ही था कि एक व्यक्ति ने पुकारा और पूछा,

"टैक्सी खाली है ?"

"जी हां।"

"चलोगे ?"

"बैठिए। कहां जाना है आपने ?"

"रेड फोर्ट किस वक्त बन्द होता है ?"

"अभी तो एक घण्टा पड़ा है।"

"हम उसे देखना चाहते हैं।"

"आईए।' रतन ने बैक सीट का द्वार खोल दिया।

उस यात्री के साथ उसी उम्र की एक नवयौवना थी। पिछली सीट पर बैठते हुए उन्होंने द्वार बन्द कर लिया। टैक्सी लाल किले की ओर भागने लगी।

यात्रियों की वेश-भूषा, हाव-भाव और बातचीत से प्रतीत होता था कि हाल में ही उनकी शादी हुई है। उन्मुक्त से हुए वह प्रणय की छेड़-छाड़ के मूड़ में थे।

रतन ने कनखियों से उन्हें देखा। उसे याद आई उर्मिला की। वह भी अपने पति के साथ इसी तरह पर्यटन स्थलों पर घूमने और हनीमून मनाने निकली होगी।

मुस्कान का बहाना ले कर उस युवती के सफेद-सुन्दर दांत फैल से जाते थे। आंखों में आखें डाल कर जब वह कोई बात करते थे तो वह युवती चंचल सी हो उठती थी। प्यार भरी छेड़-छाड़ में कभी वह लज्जाती थी, कभी नशीली मुस्कान की महक बिखेरती थी और कभी फूलों से लदी डाल की तरह अपने साथी पर झुक कर उसकी आगोश में जाने को मचल उठती थी। वायु का तीव्र झोंका आता तो उसकी अलकें उसके मुख चन्द्र पर झूम जाती थीं। आंखों की मूक भाषा में वह प्यार भरी बातें कर रहे थे। उनकी अदाएं रोमांटिक थीं। उनके नेत्रों से मौन चुम्बनों की वर्षा हो रही थी। वह अपनी ही दुनियां में मस्त थे। आस-पास से बेखबर थे। सड़कों पर भीड़ थी। वह भूल गए थे कि उन्हें कोई और भी देख रहा है।

अपनी भावनाओं को नियन्त्रण में रखते हुए बड़ी सावधानी से रतन टैक्सी चला रहा था। लाल पत्थरों के बने भव्य एवं विशाल भवन के निकट जब पहुंचे तो नवदम्पति का ध्यान उधर खिच गया। बड़े उत्साह और चाव से वह टैक्सी से उतरे। टिकटें खरीद कर वह लोग भवन के भीतर चले गए। रतन टैक्सी में बैठा रहा।

किले में प्रवेश करते ही एक छोटा सा बाजार आया जिसकी दुकानें कलात्मक वस्तुओं से भरी पड़ी थीं। दुकानों का अवलोकन करते हुए ओर पाषाण निर्मित भवनों को निहारते हुए वह लोग ऐतिहासिक भवनों का आनन्द लेने के लिए दीवाने

खास के पास रंग भवन के निकट जा रुके । दिलचस्पी से वह उन भवनों को देखने लगे और उनमें घूमने लगे जहां कभी यौवन की महफिलें आबाद थीं। प्यार की कहानियां जन्म लेती थीं। मोहब्बत के नगमें गुनगुनाए जाते थे, शीतल स्वच्छ जल के फव्वारे छूटते थे। वासना की ज्वाला सुलगती थी। जज़बात सिसकते थे। नर्तकियों की पायल की झंकार से वातावरण झंकृत हो उठता था। संगीतकार और गीतकार फिजा में मधुरता और मादकता भर देते थे। परिचारिकाएं, गोलियां-दासियां शाहज़ादों और शाहज़ादियों के हुकम तामील करने के लिए विद्युत् गति से घूमा करती थीं। मोहम्मद शाह रंगीला की परिचारिकाएं और साकियां अपने नयन कटोरों से मदिरा छलका कर उसे जाम पेश करती थीं। बहादुर शाह ज़फर अपने शेयरों की रचना करता था। कभी उन भवनों की छतों और दीवारों पर हीरे मोती जड़े हुए थे। मुगलों के वैभव और उनके गौरव का प्रतीक तख्ते-ताऊस वहां शोभायमान हुआ करता था। विदेशी जिसे देखकर चकित रह जाते थे। दीवाने-खास में सलतनते-मुगलिया के महत्त्वपूर्ण फैसले लिए जाते थे।

संगमरमर के विशाल और शानदार गुसलखानों में शीतल एवं सुगन्धित जल के फव्वारे छूटते थे। हौज-सुगन्धित और इत्र-फुलेल पानी से भरे रहते थे। वहां अलबेली, अनूठी, रंगीन जवानियां निवड़ निशा के समान घने शयामल केशों वाली शोख जवानियां अपने नुकीले स्तनों, उफान भरे वक्षों, भारी उरोजों, तराशी हुई जांघों, सुडौल पिंडलियों और अपने शरीर के अन्य भिन्न-भिन्न अंगों को रगड़ कर स्नान किया करती थीं। परन्तु वक्त के ज़ालिम हाथों ने मुगल बादशाहों के गौरव, शान और वैभव को भस्मसात कर दिया था। भवनावशेष बता रहे थे कि मुगल कालीन वास्तुकला उच्चकोटि की थी।

दिन भर टैक्सी चलाने के कारण रतन थकावट महसूस कर रहा था। किला तो उसने पहले भी कई दफा देखा था। विश्राम करने के लिए वह हरी मखमली घास पर लेट गया था। थकावट के कारण उसके नेत्र पटल बन्द होने लगे थे।

किसी के कदमों की आहट रतन के कानों में पड़ी। उसने देखा कि उर्मिला उसके पास खड़ी है। गुलाबी रंग की साड़ी में वह अपने कमनीय कोमल कलेवर को लिपेटे हुए थी। उसकी मांग में सिंदूर था। कानों में झूमते हुए झुमके जगमगा रहे थे। माथे पर बिन्दिया थी। मदमाता यौवन उसके अग-अंग में अंगड़ाइयां ले रहा था। जिस तरह दर्पण से गर्द पोंछ दी जाती है उसी तरह उसके चेहरे पर यौवन का निखार था। उसकी मुखाकृति पर सन्तोष और सम्पन्नता की झलक थी। लगता था कि वह विवाहित जीवन से सन्तुष्ट है।

उर्मिला रतन के पास बैठ गई थी। वह उसके इतनी निकट थी कि पवन के तेज़ झोंके से उसकी साड़ी का आंचल जो उसके वक्ष के उभारों को ढांपे हुए था उड़ कर रतन के चेहरे से खिलवाड़ करने लगा। रतन को वह बाणभट्ट की कादम्बरी या उर्वशी का अवतार लग रही थी। साड़ी के पल्लू को सम्भालते हुए और अपनी

अलकों को कोमल उंगलियों से संवारते हुए वह प्यार भरी निगाहों से उसे निहारने लगी।

"कैसी हो उर्मिला ?"

"तुम्हें कैसी लग रही हूँ ?"

"खुश तो हो इस जीवन से ?"

जिसके मन का मीत बिछुड़ गया हो उसकी जो हालत होती है वही मेरी समझ लीजिए। मेरा जिस्म किसी और का हो चुका है पर दिल नहीं। उसका मुख कुसुम मुरझा कर वेदनाच्छन्न हो गया था।

"हमारा भाग्यबन्धन होना सम्भव भी तो नहीं था।"

"क्यों ? उर्मिला ने पूछा।

"प्यार हो जाना और बात है। विवाह दूसरी बात।"

"कैसे ?"

"एक का सम्बन्ध भावुकता से है दूसरे का यथार्थता से। भावुकता अस्थिर है। यह यथार्थता की कठोर दीवार से टकरा कर चूर-चूर हो जाती है। जीवन में परिस्थितियों से समझौता कर लेना चाहिए।"

"तुम ने कर लिया है।" उर्मिला के चेहरे पर वेदना की लालिमा छाई हुई थी।

युवक यात्री के पुकारने पर रतन की निद्रा भंग हो गई। उसके सपने का तांता टूट गया। उसका प्रभाव अभी तक उसके मस्तिष्क पर विद्यमान था। उसके पीछे चलता हुआ रतन किले की प्राचीर से बाहर आ गया।

सांझ का उजाला मंथर गति से सिमटता जा रहा था। आकाश के नीले सागर में तारागण जगमगा रहे थे। सड़कों पर खूब रौनक थी। मरकरी ट्यूबों का प्रकाश फैला हुआ था। दिन महीनों के पीछे भागते रहे। वक्त गुजरने के साथ यादें धूमिल न हो कर ताजा बनी रहीं। उर्मिला उसे रह-रह कर याद आती रही। उसकी यादों के टिमटिमाते दीप उसके स्मृति पर जगमगाते रहे। टैक्सी चलाते समय एक दफा रतन का ऐक्सीडेंट हो गया। उसे कुछ चोटें आईं थीं। इलाज करवाने के लिए उसे हास्पिटल में एडमिट होना पड़ा।

हस्पताल की दुनियां, मरीजों और डाक्टरों की दुनियां, श्वेत परिधान में सुसज्जित युवा नर्सों की दुनियां उसे अजीब सी लगी।

कष्ट निवारन करने वाले यह आधुनिक मन्दिर भी अमीरों के लिए ही हैं। यहां दु:ख दर्द से पीड़ित मरीज जीवन की आशाएं लेकर आते हैं। इन मरीजों में कुछ तो बिस्तरों से उठ नहीं पाते। वह इस जीवन से, इस दुनियां और अपने सगे सम्बन्धियों से हमेशा के लिए दूर चले जाते हैं। चांद सितारों से भी दूर जहां से कोई वापिस नहीं आता। बहुत से ऐसे लोग होते हैं जो अपने चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान लिए ज़िन्दगी की बहारों और रंगीनियों से पुनः लौट आते हैं।

रात का अन्धेरा नदी की लहरों की तरह पूर्व दिशा से चला आया था। निद्रा में निमग्न आकाश अपनी आंखें बन्द किए हुए था। अस्पताल की तीसरी मंज़िल पर रतन को कमरा अलाट हुआ था। उसे आज नींद रही आ रही थी। बिस्तर छोड़ कर वह बॉलकोनी में आ खड़ा हुआ था। सोये हुए नगर का दृश्य वह देखने लगा। प्रगाढ़ अन्धकार में ऊंचे भवनों के एरियल स्तम्भों की चोटी पर टिमटिमाते हुए बल्ब दृष्टिगोचर हो रहे थे। कभी-कभी अस्पताल के पास से गुज़रने वाली सड़क पर किसी कार, टैक्सी अथवा मोटर सायकल इत्यादि का सिमटा हुआ तीव्र प्रकाश गुज़र जाता था। सायं-सायं करता रात्रि का सन्नाटा अपनी मूक भाषा में न समझ आने वाला सन्देश सुना रहा था। रात के हुस्न को वह टैरस के पास खड़ा देर तक निहारता रहा। जब उसे नींद आती महसूस होने लगी तो वह अपने कमरे में जाकर बस्तर पर लेट गया।

उसने देखा कि सामने वाले फैमिली बार्ड में एक दम्पत्ति कुछ दिनों से ठहर रहा है। अस्पताल में मरीजों को और उनके वारिशों को एक-दूसरे के दुख-दर्द में रुचि हो जाती है। उनमें यह जानने की उत्सुकता बढ़ जाती है कि फलां मरीज़ को क्या तकलीफ है। उसने पहले कहां कहां से इलाज करवाया है। अब किस डाक्टर का इलाज चल रहा है। उसकी दशा कैसी है। बिगड़ रही है या सुधर रही है। बातों ही बातों में वह एक दूसरे से हमदर्दी जताते हुए निकट आ जाते हैं। समय काटने के लिए उनमें आत्मीयता और घनिष्टता स्थापित हो जाती है।

सामने वाले कमरे में मरीजा एक युवती थी। वह पलंग पर बैठी हुई थी। रतन की नजर उधर उठी तो वहीं ठहर कर रह गई। वह अपने घुटनों में सिर लिए बैठी थी। रतन उस ओर देखने लगा। सिर झुकाए हुए वह बैठी थी वह कभी लेट जाती और कभी बैठ जाती थी। उसके कोई दर्द उठा हुआ था जिसकी वजह से वह व्याकुल हो रही थी। उसे नींद नहीं आ रही थी। रतन की उत्सुकता बढ़ गई। मरीजा का चेहरा देखने की उत्सुकता न जाने उसमें क्यों बढ़ने लगी। यह नया चेहरा अब तक उसने देखा नहीं था क्षण भर के लिए रतन भूल गया था कि किसी के कमरे में यूं देखना या किसी स्त्री की ओर इस तरह ताकना शिष्टाचार के विरुद्ध है। ऐसा करना सरासर अनुचित है। ऐसा व्यवहार करने वाले पुरुष का मन उसे नीचे ही गिराता है, ऊपर नहीं उठाता। पराई औरत के सहयोग की भावना को हृदय में जन्म दे कर मानसिक वासना के जाल में उलझना भी उसके लिए नितान्त अनुचित है।

पर रतन की उत्सुकता प्रबल होती गई। उचित और अनुचित का अन्तर उसके मन से कुछ समय के लिए मिट चुका था। एक प्रकार का दबाव उसके भीतर बढ़ता गया। उसके हृदय में जो उथल-पुथल और जिज्ञासा उत्पन्न हो गई थी उसे संयम में लाने में वह असमर्थ था। तभी मरीजा की एक निजी सेविका उठी। अलमारी से उसने एक केप्सयूल निकाल कर दिया। मरीजा उस कैप्ययूल को जब लेने लगी तो

प्रकाश में उसके चेहरे की कुछ झलक रतन को मिल गई। रतन का मुख आश्चर्य से खुला रह गया। विस्फारित नेत्रों से वह उसे निहारने लगा। यह उर्मिला थी। रतन लपक कर उसके कमरे में चला गया।

"तुम यहां।"

'हां।' उर्मिला ने जब उसे यूं अचानक देखा तो वह विस्मित सी हुई जा रही थी।

"क्या तकलीफ है तुम्हें ?"

"बताओ न।" चिन्तित सा होते हुए पूछा रतन ने।

"खुद ही बूझ लो न।" उसकी वाणी हर्षमिश्रित थी। उत्फुल्ल चेहरा था। कम्बल उसके पेट से नीचे सरक गया था। उसके उभरे हुए उदर पर नज़र पड़ते ही रतन भांप गया था कि उर्मिला प्रसव के लिए आई है।

मातृत्व का उल्लास उसके चेहरे पर थिरक रहा था। इस खुशी का इज़हार वह करना ही चाहता था कि नर्स की आवाज़ ने रतन की निद्रा भंग कर दी, "उठिए। आपको इन्जैक्शन देना है।"

आंखें खोल कर रतन ने देखा कि उसके सपनों की शाहज़ादी के स्थान पर नर्स खड़ी थी।

रतन बिस्तर में बैठ गया था।

"लेटे रहिए।"

लेटते हुए उसने करवट ली ताकि इन्जैक्शन लगाया जा सके। तन्मयता से वह इन्जैक्शन तैयार कर रही थी। उसके सांवले रंग में यौवन का निखार था। होंठ खुलते थे तो दांतों के मोती चमक उठते थे। इन्जैक्शन लगाने, टैम्प्रेचर चैक करने और मधुर शब्दों में कुछ बताने के पश्चात् वह चली गई। रतन कमरे में अकेला रह गया। सपने की स्मृति उसके मानस पटल पर अभी ताज़ा थी।

खिड़की से उसने बाहर की ओर झाका। रात्रि का अन्तिम पहर समाप्त हो चुका था। आकाश के नीले समुद्र में तारागण बुलबुलों की भान्ति मिट रहे थे ? अस्पताल के आंगन में अर्धसुप्त अवस्था में खड़े हुए पेड़ों पर पक्षियों का मधुर गान आरम्भ हो चुका था। जब वह अकेला होता था तो उसकी प्रेयसी की याद उसे घेर लेती थी। कहां होगी वह। किस हालत में होगी। ऐसे अनेक प्रश्न उसके मस्तिष्क में उभरते रहते थे। उसके हाथ जब भी प्रार्थना के लिए उठते थे तो वह उर्मिला के लिए ही शुभाशीष मांगता था। उसका रोम रोम उसके लिए मंगल कामना करता था।

ठीक हो जाने के पश्चात् रतन ने टैक्सी चलाने का अपना धन्धा पुनः शुरू कर दिया। कर्जा चुकाने के पश्चात् वह टैक्सी का मालिक बन गया था। पर वह

इसे खुद ही चलाता था। टैक्सी उसके एकांकी जीवन की मूक सहचरी थी। दिन के समय तो वह आराम करता। रात को स्टेशन की, कलबों, सिनेमा घरों और बड़े-बड़े होटलों की सवारियों से उसे पर्याप्त आय हो जाती थी।

आकाश मेघ मण्डित था। गहरी निद्रा में पृथ्वी अचेत पड़ी थी। सड़क के किनारे खड़े पेड़ नींद की झपकियां ले रहे थे। सिनेमा शो की सवारियां छोड़ कर वह लौट रहा था। इंजन में कुछ खराबी सी लगी। गाड़ी रोक कर उसने डिक्की से कुछ औज़ार निकाले और बोनट उठा कर इंजन का निरीक्षण करने लगा। निस्तब्ध एवं शान्त वातावरण में सहसा एक चीख गूंज उठी। यह चीख हृदय विदारक थी। चौंक सा उठा वह। उसका रोम रोम कान बन गए थे। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई। चीख रात्रि के अन्धकार में विलीन हो गई थी। वह पुनः अपने कार्य की ओर ध्यान देने लगा।

नारी कण्ठ से चीख पुनः निकली जो बचाओ-बचाओ की आवाज़ों में घुल कर रह गई थी। पास ही एकान्त में एक विशाल और ऊंची कोठी थी। चीखें उस कोठी से आती हुई प्रतीत हो रही थीं। रतन का ध्यान फिर से उधर आकृष्ट हो गया। उसके कान खड़े हो गए। इंजन में साधारण सा विकार था जिसे वह ठीक कर चुका था। उसने औज़ार इत्यादि सम्भाले। सोचा कि कोई पारिवारिक कलह होगी। टैक्सी में बैठ कर वह उसे पुनः स्टार्ट करने लगा ही था कि वही चीखें उसे फिर से सुनाई देने लगीं। आवाजें किसी अबला की थीं जो सहायता के लिए चिल्ला रही थी। स्पष्ट था कि कोई नारी किसी नर-पिचाश के फंदे में फंस कर छटपटा रही है।

रतन से रहा न गया। वह टैक्सी से उतरा। बरबस ही उसके कदम उस कोठी की ओर बढ़ने लगे। कौतुहल वश वह जानना चाहता था कि यह क्या माजरा है। कोठी का मेन गेट बन्द था। वह वहां रुक गया। पर उस अबला की दबी घुटी चीखें उसे बुला रही थीं। वीरत्व का जोश उसमें जागृत हो उठा। एक ही छलांग लगा कर वह चार दीवारी को पार कर गया। आवाज़ ऊपर वाली मंजिल से आ रही थी। स्पष्ट था कि घटना स्थल पर पहुंचने के लिए उसे ऊपर जाना है। ऊपर की मंजिल में धक्कम-धक्के और छीना-झपटी हो रही थी। उसने न सोचा, न समझा, आव देखा न ताव झटपट ही सीढ़ियां चढ गया। कमरे के द्वार पर वह पहुंच गया। सिटकनी चढ़ी हुई थी। रतन असमंजस में था कि अब क्या किया जाए। उसे डर था कि कोठी का नौकर इत्यादि वहां न आ जाए। इस स्थिति में उसने चालाकी से काम लिया। द्वार पर ऐसे खट-खट की ध्वनि की कि अन्दर वाला व्यक्ति यह समझे कि उसकी कोठी का ही कोई आदमी है। द्वार खुला। रतन के सामने एक युवक था। उसकी आंखों में नशे के लाले डोरे थे। वह शैतान का रूप धारण किए हुए था। कमरे के एक कोने में थर-थर कांपती हुई एक युवा नारी खड़ी थी उसकी दशा शोचनीय थी। साड़ी उसके तन से खींच कर उतारी जा चुकी थी जो कमरे की फर्श पर कदमों के नीचे कुचली हुई अस्त व्यस्त दशा में पड़ी हुई थी।

बलाऊज के बटन भी टूट चुके थे। वह विफर सी रही थी। उसकी दशा से स्पष्ट था कि अपने सतीत्व की रक्षा की खातिर उसने जान तोड़ कर संघर्ष किया है। अबला ने उस शैतान से अपनी लाज रखने की खातिर अनुनय-विनय की थी। काम के अन्धे उस युवक पर अबला की इस इल्तजा का कोई असर नहीं हुआ था। उसे पलंग पर धक्का दे कर उस शैतान ने अपनी कामग्नि बुझाने की कुचेष्टा की थी।

द्वार पर एक अजनबी युवक को यूं अचानक देख कर वह ठिठक सा गया। अपनी रौबदार आवाज में उसने पूछा, "कौन हो तुम ?"

"एक आदमी।"

"यह तो मैं देख रहा हूँ। यहां क्यों आए हो ?"

"एक अबला को शैतान के पंजे से छुड़वाने के लिए।"

"तुम कौन होते हो इस तरह हमारे बीच आने वाले ? यह हमारा निजी मुआमला है।"

"निजी मुआमला।"

"यह मेरी बीबी है।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। कोई भी आदमी अपनी बीबी से इस प्रकार का बलात्कार जैसा नीच व्यवहार नहीं करता।"

"भैया, यह शैतान बकवास कर रहा है। मैं इस की कुछ नही लगती। मुझे फंसाया गया है।" वह फफक सी पड़ी थी।

"दो मिनट देता हूँ। इस लड़की को छोड़ दो।"

"ओह ! तो यह चेतावनी है ? उसने रतन की ओर आश्चर्य से देखा।"

"हां।"

"अगर ऐसा न करूं तो ?" गम्भीर आवाज़ में उसने पूछा। रतन दो कदम आगे बढ़ गया। उसने अचानक एक ज़ोरदार तमाचा रसीद किया। वह शैतान इसकी ताव न ला सका। लुढ़खड़ाता हुआ वह ज़मीन पर गिर पड़ा। मौका देख कर वह युवती वहां से खिसक जाना ही चाहती थी कि उस शैतान ने लपक कर अल्मारी खोली। उसके हाथ में लोडिड रिवॉल्वर था। रतन उसके पास गया। इससे पहले कि रिवॉल्वर से गोली छूटती अचानक उसने उसकी कलाई पकड़ ली। दोनों ने एक दूसरे की आंखों में देखा। उस शैतान ने अपना हाथ छुड़ाना चाहा पर रतन के हाथ की पकड़ और दृढ़ हो गई। इस छीना झपटी में रिवॉल्वर अपना काम कर गया। उसकी गोली का शिकार रतन न हो कर वह शैतान ही बना।

गर्म रेत पर पड़ी मछली की तरह वह तड़पने लगा। खून का फव्वारा छूटा जो फर्श पर फैल गया।

यह देखकर रतन के होश उड़ गए। खून देख कर वह सिहर सा उठा। ऐसी भयानक दुर्घटना यूं घट जाएगी उसने सोचा तक न था। वह खूनी था। उसके

हाथों कत्ल हो गया था । "भैया यहां से निकल भागो नहीं तो इसके आदमी हमें दबोच लेंगे ।"

धमाके की आवाज़ से कोठी में खलबली मच गई थी । विद्युत् गति से रतन और वह युवती सीढ़ियां उतरने लगे । दो-तीन नौकरों ने उन का रास्ता रोकना चाहा पर रतन में जैसे कोई दबी शक्ति आई हुई थी । उसने उन्हें ऐसे धक्के दिए कि वह लुढ़कते हुए नीचे जा गिरे ।

हांफते हुए वह दोनों सड़क पर आ गए । वहां रुकना खतरे से खाली नहीं था । वह नौकर फिर से उनका पीछा करने लगे थे ।

"अब क्या होगा ?" बदहवास सी होती हुई वह युवती बोली ।

"घबराओ नहीं बहिन, सामने मेरी टैक्सी खड़ी है ।"

टैक्सी को देख कर उसकी घबराहट एक तरह से जाती रही । उसमें बैठ कर देखते ही देखते वह वहां से निकल गए ।

"भैया, मेरी खातिर तुमने इतनी बड़ी मुसीबत मोल ले ली ।" वह भाव विह्वल सी हो उठी थी ।

रतन की कोई बहन नहीं थी । आज तक किसी लड़की ने इतनी आत्मीयता से उसे भैया नहीं कहा था । इस सम्बोधन से उसके हृदय में अनोखा सा स्नेह उमड़ आया था । धैर्य बंधाते हुए वह बोला, "जो हो गया, सो हो गया । हमें अब साहस से स्थिति का सामना करना चाहिए । मुझे बताओ कि तुम रहने वाली कहां की हो ? तुम्हारा घर कहां है ताकि तुम्हें मैं वहां छोड़ आऊं ।"

"मैं यहीं की रहने वाली हूं । जहां मैंने जाना है वह कालोनी निकट ही है । मुझे यहीं उतार दो । कोई और टैक्सी ले कर मैं चली जाऊंगी । ज्यादा दूर भी नहीं जाना है मुझे ।"

"इस दशा में तुम्हें यूं छोड़ना उचित नहीं । मैं ही तुम्हें तुम्हारे घर के पास छोड़ आता हूं ।"

गाड़ी दौड़ती रही । थोड़ी ही देर में वह गन्तव्य स्थल पर पहुंच गए ।

टैक्सी रुक गई । वह युवती उसमें से उतरी ।

"तुम भी मेरे साथ आ जाओ, भैया ।"

"नहीं बहिन, मेरा अब यहां से शीघ्र कहीं ओर चले जाना ही उचित है । किस्मत ने साथ दिया तो फिर मिलेंगे ।"

"तुम्हारा क्या होगा ?"

"मेरी चिन्ता न करो । परमात्मा भला ही करेगा ।"

ज्यादा देर वहां रुकना उचित नहीं था । टैक्सी के पहिए पुनः घूमने लगे । भाव विह्वल सी हुई वह युवती उसे देखती रह गई ।

बदहवासी की हालत में रतन गाड़ी चला रहा था। उसे स्वयं भी नहीं पता था कि यह सड़क किधर जा रही है, उसे कहां पहुंचना है और कौन सी उस की मंज़िल है ?

यह विचार उसके मन में उठ रहे थे कि वह अपराधी है। उसने संगीन जुर्म किया है। वह कातिल है। पुलिस को अब इस वारदात की सूचना मिल चुकी होगी। पंचनामा तैयार करके पुलिस ने तहकीकात शुरू कर दी होगी। इन विचारों से भयभीत हो कर रतन टैक्सी को सरपट दौड़ाए जा रहा था। वह कहीं दूर, इस शहर से बहुत दूर निकल जाना चाहता था। एक दो दफा तो घबराहट के कारण दुर्घटना तक होते-होते बच गई थी। नगर अब पीछे रह गया था। गुंजान आबादी से निकल कर गाड़ी सन्नाटे को और अंधकार की चादर को चीरती हुई सुनसान सड़क पर दौड़ रही थी।

सड़क के किनारे खड़े दैत्याकार वृक्ष जैसे अपना सिर हिला-हिला कर कह रहे थे, 'तू कातिल है।' आकाश की ओर जब उसकी नज़र जाती तो उसे लगता जैसे नक्षत्र उसे टेढ़ी नज़र से निहार रहे हों और घूरते हुए उसे कह रहे हों कि 'भाग कर जाएगा कहां ? कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं।'

आकाश से चांद आज गायब था। कृष्ण पक्ष की अंधियारी रात और आकाश पर हल्के-हल्के काले बादल वातावरण को अत्याधिक भयानक बना रहे थे। सड़क के दोनों ओर खड़े वृक्ष मदमस्त शराबियों की भांति हवा के झौंके खा-खा कर एक-दूसरे से टकराते हुए अपनी हरहराहट, कड़कड़ाहट से वातावरण की गहन निस्तब्धता को भंग कर रहे थे। खौफनाक वातावरण में डूबी बस्तियां, गांवों और कस्बों को पीछे छोड़ती हुई टैक्सी पूरी स्पीड से भागती जा रही थी। रात्रि रमणी का यौवन ढलने लगा था। आकाश दीप टिमटिमा कर बुझने लगे थे। पौ फुटने को थी। पूर्वाकाश में फैल रहे आलोक को देख कर अन्धकार पश्चिम की ओर भागने लगा था। मील पत्थरों ने उसे बताया कि यह सड़क किस शहर को जा रही है और वह नगर वहां से ज्यादा फासले पर नहीं है।

सड़क के दोनों ओर हरे-भरे खेत थे। खेतों में दूर तक सरसों के पौधों की पतली-पतली टहनियां पीले पुष्पों के बोझ से झुकी हुई थीं। हवा के झौंके आकर उन्हें और झुका देते थे। दूर-दूर तक गेहूं और सरसों के खेत फैले हुए थे। लगता था जैसे विधाता ने इन खेतों को हरे और पीले रंगों से रंग दिया हो। भोर की ठण्डक थी। पलाश की डालियां लाल अंगारों से लदी प्रतीत हो रही थीं। बसन्त का मौसम अपने यौवन पर था। लगता था कोई नववधु रंग-बिरंगे परिधान पहन कर सामने आ रही हो। गेहूं के खेतों में पौधे लहलहा रहे थे। पवन जब

उन खेतों पर से गुज़रती थी तो संगीत की ध्वनि सुनाई देती थी। पर खेतों की इस हरियाली में और प्रकृति रमणी के इन सुन्दर दृश्यों में रतन को आज कोई रुचि नहीं थी। वह घबराहट में था। अपनी ही चिन्ताओं में घिरा हुआ था। उससे संगीन जुर्म हो गया था। आज तक कोई हिंसा की घटना उस के द्वारा नहीं हुई थी। भय के कारण उसकी मन:स्थिति बिगड़ी हुई थी। उसे लग रहा था जैसे उसका पीछा किया जा रहा हो। वह यह नहीं भूला था कि कानून की आंख से बच निकलना आसान नहीं। चतुर से चतुर अपराधी भी कानून के शिकंजे में आ जाता है। कभी-कभी वह सोचता कि वह आत्मसमर्पण कर दे। पर वह निर्दोष था। उसकी आत्मा की यह आवाज़ थी।

अरुणोदय की मनोरम छटा में एक भव्य भवन का दूधिया श्वेत गुम्बद और उसकी ऊंची मीनारें रतन को दिखाई देने लगीं। लाल किले की दीवार भी उसके दृष्टिगोचर हुई। दूर से यमुना नदी पिघली चांदी की एक नाली सी दिखाई दे रही थी। नगर में पहुंच कर उसने राहत की साँस ली। घबराहट, थकावट और परेशानी के कारण उस का अंग-अंग टूट रहा था। टैक्सी को एक ओर खड़ी करके अपने शरीर और मस्तिष्क को जरा आराम देने के लिए वह टैक्सी की बैक सीट पर लेट गया। रात की दुर्घटना के भयानक दृश्य उसके मानस पटल पर बार-बार उभर रहे थे। जब वह उठा तो काफी धूप चढ़ गई थी। उसके सामने सर्वप्रथम समस्या यह थी कि वह कोई रैन-बसेरा ढूंढे ताकि वहां वह अपना सिर छुपा सके। अपार भीड़ के इस विशाल नगर में जन समूह के मध्य वह अपने आप को एकाकी महसूस कर रहा था। कोई उसका परिचित नहीं था। लोग अपनी ही समस्याओं और उलझनों में घिरे इधर-उधर फिर रहे थे। चिन्ता के चिन्ह उनके चेहरों पर चमक रहे थे।

रोज़ी-रोटी की उसे कोई चिन्ता नहीं थी। उसकी टैक्सी नगर की सड़कों पर दौड़ने लगी।

एक रंगीन किसम का व्यक्ति उसकी टैक्सी के निकट आया।

"अरे भाई चलोगे ?"

"बैठिए जनाब, कहां जाना चाहते हैं आप ?"

"ले चलो कहीं।"

"हुकम कीजिए।"

"हीरा मण्डी चलो।" वह फुसफुसाया सा।

"हीरा मण्डी ?"

"हां, गए नहीं कभी उधर ?"

"नाम तो सुना है पर...।

"अजीब बात है, टैक्सी ड्राईवर हो कर भी इस मशहूर मण्डी को भी नहीं जानते ?"

"यह नगर मेरे लिए बिल्कुल नया है। थोड़े ही दिन हुए हैं मुझे यहाँ पर आए हुए।"

यात्री ने सोचा कि वह कोई और टैक्सी कर ले। पर रतन के शिष्ट व्यवहार ने उसे बांध लिया था।

"चलो, रास्ता तुम्हें मैं बताता जाऊंगा।"

"जी शुक्रिया।"

टैक्सी चलने लगी।

"उस बाजार की रौनक देखोगे तो आंखें खुल जाएंगी।" यात्री ने रहस्यमय मुद्रा में मुस्कराते हुए कहा।

रतन समझ गया था कि यह कोई खास जगह है जहां आज वह जा रहा है। उस व्यक्ति के हाव-भाव, तौर-तरीके और बातचीत के सलीके से ज़ाहिर था कि वह मौज-मेले और मनोरंजन के लिए वहां जा रहा है।

रतन की उत्सुकता भी बढ़ती जा रही थी। यात्री के संकेतों पर वह टैक्सी चला रहा था।

जब वह गन्तव्य स्थल पर पहुंच गए तो रतन समझ गया कि यह कौन-सा बाज़ार है और इसमें क्या खरीदा-बेचा जाता है।

यह उसके लिए एक नया और अनोखा अनुभव था। रूप की कोई मण्डी, कोई ऐसा बाज़ार उसने आज तक देखा नहीं था। यह दुनिया उसके लिए अजीब थी। बाज़ार की रौनक और कोठों के छज्जों में खड़ी नारी मूर्तियों को देखकर उसके मन में गुदगुदी-सी होने लगी। उसकी प्रेम लालसा उत्तेजित हो उठी।

उस यात्री ने एक कोठे के समक्ष टैक्सी रोकने को कहा। वह उस में से उतरा। किराया चुकाने के पश्चात् बिना इधर-उधर देखे वह कोठे की सीढ़ियों पर यूं चढ़ गया जैसे वह उस स्थान से और वहां के लोगों से चिर परिचित हो। इस जगह पर आने का जैसे उसे पूरा अनुभव हो।

रतन धीरे-धीरे टैक्सी चलाता हुआ उस वातावरण को गम्भीरता से निहारने लगा।

रूप की इस मण्डी में सौन्दर्य की जगमगाहट थी। यौवन नाच रहा था। कोठों से प्रकाश की किरणें छिटक रही थीं। छज्जों, खिड़कियों, जंगलों और बालकॉनियों में सज-धज कर खड़ी चंचल-चुलबुल युवतियां अपनी नशीली चितवनों मादक अदाओं और मधुर कटाक्षों से ग्राहकों को रिझा और लुभा रही थी। वहां खड़ी वह भिन्न-भिन्न मुद्राओं में मुस्कान के तीर फैंक रही थीं। अपने बंकिम कटाक्षों से ग्राहकों को रिझा रही थीं। उन के सैक्सी चेहरों में तीखा आकर्षण था। वशीकरण की कला में वह निपुण लग रही थीं। जैसे अदाओं का उन्होंने कोई खास कोर्स कर रखा हो। कामेच्छा से वह परिपूर्ण थीं। अपने अर्धनिमीलित नेत्रों से और धनुषाकार भवों को खींच कर वह इस इच्छा को नंगी कर रही थीं।

वास्तव में वह ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों को अपनी ओर खींचने की चेष्टा में थीं। उनकी यह कोशिश थी कि आंख के अन्धे और गांठ के पूरे ग्राहक आएं और वह उन्हें फंसा लें। ग्राहकों को फंसाना ही उन का एक मात्र उद्देश्य था। फूलों पर भवरों की तरह वह उन पर मंडराएं और उन पर अपने दिल नहीं, जेबें न्योछावर करते रहें।

उन कोठों पर गीत-संगीत की महफिल जमी हुई थी। नाच-गाना चल रहा था। मुजरा हो रहा था। रतन ने टैक्सी एक स्थान पर खड़ी कर दी। धड़कते दिल से वह बाजार को देखते जा रहा था। हारमोनियम, तबला, घुंघरुओं की ध्वनियां उसके कानों में पड़ रही थीं। पायल की झंकार से वातावरण झंकृत हो रहा था। हास-विलास और आमोद-प्रमोद की बातें हो रही थीं। कहीं तबला कराह रहा था। कहीं मंजीरे के रोने की ध्वनि आ रही थी। कहीं सारंगी में कंपकपी हो रही थी और कहीं बाजे वाले के बाजे पर हाथ फेरने से बाजा चिल्ला रहा था।

उन रमणियों को देख कर रतन चकित-सा हुआ जा रहा था। सौन्दर्य प्रसाधनों से प्रसधित उनके चेहरे थे। मेकअप की पर्तों के नीचे उनके चेहरों की झुर्रियां, दाग और धब्बे छुपे हुए थे। शृंगार और जगमगाहट की उन में अनुपम छटा थी। एक प्रश्न रतन के भोले-भाले मन में बार-बार उठ रहा था। क्या यह स्वेच्छा और खुशी से यहां चली आई हैं। और बिक्रय की वस्तु बन गई हैं। पर ऐसी औरत तो शायद ही कोई हो। कोई औरत असमत फरोशी नहीं करना चाहती। समाज के अत्याचारों, कुप्रथाओं और उनकी मजबूरियों ने ही इन्हें अपना शरीर बेचने पर विवश कर दिया है। भला कौन ऐसी नारी है जिसकी यह अभिलाशा नहीं होती कि उसका अपना घर हो, उसके आंगन में बच्चों की किलकारियाँ हों और समाज में वह मान-प्रतिष्ठा का जीवन व्यतीत करें। अत्याचारों और कुरीतियों की यह अबलाएं शिकार हैं।

वेश्याओं के जीवन पर उसने कुछ पुस्तकें पढ़ी थीं। उन का प्रैक्टिकल रूप वह आज देख पाया था। पुस्तकों की उन बातों और आंखों देखी बातों में भी उसे भिन्नता दिखाई दी। पुरुष इस बाज़ार में अपनी अतृप्त वासनाओं, विलास लिप्सा कामेच्छा, तन की भूख मिटाने के लिए और मन बहलावे के लिए आते हैं। अतः काम निकाल कर वह झेंपते हुए अपना रास्ता पकड़ते हैं। इस मनोरंजन और काम सुख के बदले में इन नारियों के आंचल में वह चांदी के चन्द सिक्के और नोट फैंक जाते हैं।

एक तरह से देखा जाए तो इन नारियों का चरित्र खराब नहीं होता। खराब है और बुरी है तो निर्धनता। गरीबी से तंग आ कर यह अपना जिस्म बेचती हैं। थके हारे और सताए हुए पुरुषों को यह कुछ लम्हें सुख के प्रदान करती हैं।

जापान देश में दूसरे महायुद्ध में वहां के शहरों पर अमरीका द्वारा बम फैंके गए तो लोग यह देख कर चकित रह गए कि वहां के कई गिरजे तो धाराशायी हो गए जबकि वेश्यालय इस क्षति से बच गए।

इस बाज़ार में कई किस्म के लोग आते हैं। कुछ अमीर लोग मनोरंजन की खातिर आते हैं। धन उनके पास इतना अधिक होता है कि उन के सामने यह समस्या होती है कि इसे कहां खर्च करें। खास कर उन लोगों के लिए जिन के पास नम्बर दो का धन होता है। धन का आधिक्य उन्हें वेश्यागामी, दुराचारी, जुआरी और लम्पट बना देता है।

जैसे मनुष्य एक ही प्रकार की दाल-रोटी खाते-खाते ऊब जाता है वैसे ही उन का मन अपनी एक स्त्री से भर जाता है। वह चेंज और वराइटी चाहते हैं। यहां आ कर उनका दिल बहलावा होता है। कुछ ऐसे मर्द होते हैं जिनकी स्त्रियों को किसी किस्म का शारीरिक अथवा मानसिक रोग होने के कारण वह अपने मर्दों को प्यार और तन का सुख देने में और उन्हें सन्तुष्ट करने में समर्थ नहीं होतीं। कुछ औरतों का व्यवहार ही ऐसा होता है कि उन के आदमी इधर आने पर विवश हो जाते हैं।

वेश्याओं का असली रूप और नग्न व्यवहार देखने के लिए रतन एक सरदार के पीछे-पीछे एक कोठे पर चढ़ गया। सरदार को ऊपर जाते ही कई युवतियों ने घेर लिया। हर एक की चेष्टा थी कि वह ग्राहक को फंसा ले। सरदार ने उनके शरीर के भूगोल का अवलोकन किया।

उनको अपनी नज़रों से तोलते और परखते हुए सरदार ने एक का हाथ पकड़ लिया। विजयोल्लास से उस लड़की का चेहरा चमकने लगा। जैसे वह किसी प्रतियोगिता में चुन ली गई हो। शेष लड़कियां खिलखिला कर हंसती हुई वहां से भाग गईं। वह अन्य ग्राहकों के गिर्द मंडराने लगीं। उसके नयन नक्श कामोद्दीप्त थे। मैथुन कला को उत्तेजित कर रहे थे। सरदार ने शराब खूब पी रखी थी। उसकी लार टपक रही थी। उसकी धमनियों में रक्त खौल रहा था। गर्मी उसके सिर को चढ़ी हुई थी। सरदार कामातुर था। वह अपना सब्र खो चुका था। कमरे में पर्दे लटका कर केबिन बनाए हुए थे।

वह युवती सरदार के साथ कैबिन में जाने से इंकार कर रही थी।

"खुदा बचाए इन शराबियों से। यह बहुत तंग करते हैं। हैवानों और भूखे भेड़ियों की तरह अंगों को नोचने लग जाते हैं।" वह आंखें मटकाते हुए नखरे कर रही थी।

सरदार से अब रहा नहीं जा रहा था। उसकी कामोत्तेजना चरम सीमा पर थी। वह उसे मना रहा था। उसकी मिन्नतें-खुशामदें कर रहा था।

"बहुत दिल आ गया है मुझ पर ?" उसने सरदार की आंखों में अपनी आंखें डालते हुए पूछा।

"तुम चीज़ ही ऐसी हो। तभी तो मेरी आंखों ने तुझे पसन्द किया है।"

गिड़गिड़ाता हुआ वह उसके पांव पकड़ रहा था।

"अच्छा, चल। पर दाम दोगुने लूंगी", उसने कमर मटकाते हुए कहा।

"दोगुने क्यों?" सरदार ढीला पड़ गया था। उस का चेहरा एकदम उतर गया था।

"तू शराबी जो है।"

वह असमंजस में पड़ गया था।

"बस यही है तेरी मोहब्बत?"

यह शब्द चुनौती भरे थे। पीछे हटना उसका अपमान था।

सरदार कुछ कहना चाहता ही था कि वह फिर बोल पड़ी—

"सरदार लोगों की जिस्मानी ताकत और मर्दानगी की मैं तारीफ़ करती हूं। पर जब वह खूब नशे में होते हैं तो यह शैतान ही नहीं हैवान बन कर पाशविकता का व्यवहार करने लग जाते हैं।"

"मैं ऐसा नहीं करूंगा।"

"पहले हर कोई ऐसा ही यकीन दिलाता है। मुझे शराबियों से घृणा तो नहीं है पर मैं उन पर विश्वास नहीं करती।"

"मुझे तेरी हर शर्त मंज़ूर है।"

उनके बीच सौदा सैटल हो ही रहा था कि एक प्रौढ़ा वहां आ गई। उसने भरपूर मेकअप कर रखा था। उसने सोने के जेवर पहन रखे थे। कलाइयों मे चूड़ियां खनक रही थीं। उसके बदन में ज़रा भारीपन आ जाने के कारण उसका व्यक्तित्व रौबदार बना हुआ था।

"यह हैं हमारी बाई जी, इस कोठे की मालकिन।" उस युवती ने आगन्तुका का परिचय दिया।

बाई जी तहजीब और सलीके से सरदार को मिली। दो चार मीठी और दिल लगी की बातें करते हुए उसने काम की बात की।

"हम कोठे वालियों के कुछ असूल हैं, सरदार जी।"

"हम भी असूलों के बन्दे हैं, बाई जी! आप क्या चाहती हैं?"

"दौलत हमारा धर्म है। यहां नकद चलता है, उधार नहीं।"

"उधार की कौन बात करता है?"

"जिस्म फरोशी करने वालियां दाम पहले लेती हैं।"

"हमें भला क्या एतराज है? जेब से नोट निकालने के लिए जब सरदार ने अपना हाथ डाला तो बाई जी ने कनखियों से देखा कि वह हाथ कांप रहा था।

"इस सौदे में दाम दिलेरी से पहले दिए जाते हैं। बाद में देने ज़रा मुश्किल हो जाते हैं। क्योंकि बाद में वह जोश नहीं रहता जो शुरू में होता है।"

"आप तो अन्तर्यामी हैं जी।" सरदार ने मुस्कराते हुए और नोट निकालते समय अपनी घबराहट छुपाते हुए कहा।

बाई जी उसकी बलाएं लेते हुए बोली, "आप कहीं बुरा तो नहीं मान गए। असल में कई दफा ऐसे बदमाशों से हमारा वास्ता पड़ जाता है कि आपना काम निकाल लेने के पश्चात् पैसे देने की बजाए वह कोई न कोई झगड़ा खड़ा कर लेते हैं। हमारा मेहनताना मार जाते हैं। उल्टा हमें परेशानी उठानी पड़ती है।"

"सब एक जैसे नहीं होते बाई जी।"

"ठीक फरमाया आपने हजूर। आप जैसे इमानदार और शरीफ मर्दों की मेहरबानी और नज़रे इनायत से हमारा धन्धा चलता है।"

सरदार क्षण प्रति क्षण उतावला हुआ जा रहा था।

"नसीम, इन्हें ले जा। खूब खिदमत करना। समझी?"

"मैं पूरा यत्न करूंगी, बाई जी।"

उसने कटाक्ष किया। कैबिन में वह चले गए। मैले गन्दे बिस्तर से दुर्गन्ध आ रही थी। पर सरदार पर कोई असर नहीं हो रहा था। उसने पी रखी थी। उसके सांसों से आ रही मदिरा की तीव्र गन्ध के नीचे वह दुर्गन्ध दब कर दम तोड़ गई थी। इस समय उस पर जवानी का नशा भी सवार था। सरदार काम विह्वल था। उसके हाथों से धैर्य का आंचल छूट रहा था। वह कामबद्ध हो गया था। रतिदान पा कर कृतार्थ होना चाहता था। इस नशे में उसके देह-मन डगमगाने लगे थे।

वह सरदार की तबियत बहलाने लगी। इस मनोरंजन के बदले वह उस से कुछ और पैसे पाती रही। हारे हुए जुआरी और दंगल में पिटे पहलवान की तरह वह बिस्तर में औंधा पड़ा था। उसका जी मितला रहा था आत्मग्लानि और पश्चाताप से वह मर रहा था। हीन भावना का शिकार हो वह धरती में धंस रहा था। उसके मुंह का सवाद बकबका हो रहा था। जैसे वह गन्दी और जूठी प्लेट चाट बैठा हो। उसका चेहरा उतर गया था। मुंह बासे बैंगन का सा हो गया था। वह उठा तो उसकी टांगें कांप रही थीं। घुटने जवाब दे रहे थे उसकी देह उस आम जैसी हो गई थी जिसका आधा रस चूस लिया गया हो। अपनी झेंप मिटाते हुए उसने दाढ़ी पर हाथ फेरा। ढीली हो गई मूछों को वह वट चढ़ाने लगा।

"बैठो न, अभी क्या है।" नसीम ने प्यार जताते हुए कहा।"

"फिर कभी आऊंगा।" सरदार ने पीछा छुड़ाने की मुद्रा में कहा। अपने अस्त-व्यस्त कपड़ों को ठीक करने और अपने आप को स्वस्थ करने के पश्चात् वह कैबिन से बाहर चला गया। दुत्कारे हुए कुत्ते की भान्ति वह कोठे की सीढ़ियां उतरने लगा।

आज उसने तौबा की और कसम खाई कि आयंदा इस गन्दी जगह की ओर वह मुंह तक नहीं करेगा।

सरदार जब अन्दर चला गया था तो रतन एक ओर खड़ा हो गया।

"तशरीफ रखिये न हजूर। बाई जी ने कहा।"

"मैं मैं तो यूं ही ।"

"समझ गई। आप हमारे नये मेहमान हैं। शरमाइए नहीं। पहली दफा ऐसी ही झिझक होती है। नाच-गाने का ही मज़ा ले लीजिए।' बाई जी दूसरी ओर चली गई। दो मनचले युवक कोठे की एक लड़की को ललचाई नज़रों से देखते हुए उसके साथ छेड़-छाड़ कर रहे थे। उसके अगों को टटोल रहे थे। बाई जी ने उनको देखा तो उसे क्रोध आ गया। इन युवकों को उसने पहले भी अपने कोठे पर देखा था। वह कोठे का चक्र लगाते थे। अपनी आंखें सेंकते थे और मुफ्त का मज़ा ले कर खिसक जाते थे।

"देखिए, कैसी लाजवाब चीज़ है। यौवन का आनन्द आएगा, हजूर।"

उन मनचलों ने 'नहीं' में सिर हिला दिया।

अपने स्वभाव को सामान्य रखते हुए वह बोली, यह क्या! अछूती नाजनीन है यह तो। अभी चन्द ही रोज तो हुए हैं उसे यहां आए हुए। फिर भी यह पसन्द न हो तो और देख लीजिए।

"सब हाजिर हैं हजूर की खिदमत में। आपकी नज़रे इनायत चाहिए।"

"दाम जरा ऊंचे हैं।"

"वाह! आप जैसे अमीर ज़ादे भी यह शिकायत करें। माल भी तो देखिए। ऐसे तोहफे किसी और कोठे पर यकीनन नहीं मिलेंगे आपको।

"हम फिर आएंगे।"

"रुकिये न। तशरीफ तो रखिए, जनाब।"

"अब तो चलते हैं।"

"पहले भी आप यहां आए थे?"

"आए होंगे। याद नहीं"

"मुझे तो याद है। आप कई दफा आए हैं।"

"यह कोठे आने-जाने के लिए ही तो हैं।'

"क्यों? यह सराय है या तुम्हारी नानी का घर।"

"मुंह सम्भाल कर बात करो, बाई जी।"

"कुत्तो, मुफ्त का मजा लेना है तो अपनी मां के पास जाओ। तुम्हारे जैसे ग्राहक इधर आने लग जाएं तो बस। इधर फिर आए तो सिर गन्जा कर दूंगी। चार जूतियां मार कर एक गिनूंगी।"

छोटे हुए सिरों वाले चार बदमाश तुरन्त वहां दिखाई दिए। वह अपनी बांहें चढ़ाते लगे।

रहमान आज तो छोड़ दो इन कुत्तों को।"

"दुम दबा कर वह मनचले वहां से भाग निकले। बाई जी न रोकती तो उसके वह पालतु कुत्ते उन्हें चीर देते।

"बाई जी, आपके इशारे की ज़रूरत थी।" रहमान ने कहा।

"झगड़ा दुकानदारी का असूल नहीं रहमान। इससे कोठे की बदनामी होती है। दुकानदारी पर बुरा असर पड़ता है। ज़रा लम्बी सोचनी पड़ती है। आवेश में आ कर भी बाई जी ने समझदारी से काम लिया था। उसके कथन में बुद्धिमता थी।

कुछ देर तक वहां बैठा रतन कोठे के कारोबार के सिलसिले को देखता रहा। उसका वहां दम घुटने लगा। ज्यादा देर वहां रुकना उसने उचित न समझा। गाने वाली को कुछ रुपये दे कर वह कोठे से नीचे आ गया।

फुट पाथ पर चलते हुए वह कोठे वालियों के जीवन के घिनौने पहलू पर विचार करने लगा। यहां आते समय कामांध मर्द भूल जाते हैं कि इन चन्द लम्हों का आनन्द, यह मनोरंजन, यह दिल बहलावा उन्हें कितना महंगा पड़ सकता है। यह बाजारू औरतें नागिनों के समान होती हैं। जिनकी सुन्दर और दिलकश आंखों में भी विष होता है। प्रेम लीला की क्रीड़ा की आड़ में मर्द इनसे ऐसा घातक और भयानक रोग खरीद लेता है जो उसे बड़ा महंगा पड़ता है। उसे जीवन भर पश्चाताप की अग्नि में सुलगना पड़ता है। चन्द लम्हों के रस लोभ में पड़ कर उसे उम्र भर के लिए सिफलिस जैसे यौन रोगों से पीड़ित रहना पड़ता है। यह ऐसा बाजार है जहाँ धन लुटा कर, नोटों का स्वाहा करके बीमारी खरीदी जाती है। बीमारी भी ऐसी जो आदमी को तड़पा कर रूलाती है। ये वह नारियां हैं जिनके कारण घराने तबाह हो जाते हैं। सद्गृहणियों का दाम्पत्य जीवन नष्ट हो जाता है। उनके जीवन साथियों को किसी ऐसी बाजारू औरत से इश्क हो जाता है। वह किसी के इश्क पेचे में फंस जाते हैं। उनकी पत्नियां घुट-घुट कर मरने और खून के आंसू बहाने पर विवश हो जाती हैं।

रतन उस कोठे पर जाने की तमन्ना ले कर आया था जहां नृत्यांगना केवल अपनी नृत्य कला का प्रदर्शन करके ही ग्राहकों का मनोरंजन करती हो। नृत्य और संगीत जैसी ललित कलाओं का उसे शुरू से ही शौक था। सड़क पर वह जा रहा था। छज्जों पर अब भी जिस्म फरोशी करने वाली लड़कियां खड़ी थी। उन्होंने वस्त्र भी अपने रूप-सौन्दर्य के अनुरूप पहन रखे थे। जिस लड़की के पास अच्छी शक्ल-सूरत और स्लिम बॉडी थी, उसने कसे हुए कपड़े पहन रखे थे। ऐसी अनोखी मुद्रा में वह खड़ी थी जिससे उसके शारीरिक अनुपात का पता लग सके।

रतन ने एक मैगज़ीन में पढ़ रखा था कि एक विदेश में ऐसी लड़कियां सौदा इस हिसाब से तय करती हैं कि ग्राहक उसे कितने कपड़े उतरवाने को कहता है। यदि वह चाहे कि लड़की अन्दरूनी वस्त्र (चोली, चड्डी इत्यादि) भी उतारे तो इस इच्छा

पूर्ति के लिए उसे और कीमत देनी पड़ती है। यह लड़कियां ज्यादा तकलीफ अन्दरूनी वस्त्र उतारने में महसूस करती हैं। क्योंकि कपड़े उतारने और पहनने में उनका वक्त खराब होता है। जबकि एक-एक लम्हा कीमती होता है। कुछ मिनटों में तो यह लड़कियां नये ग्राहक ढूंढ लेती हैं। यह लड़कियां हर प्रकार के लोग बिना उनके स्तर का ख्याल किये स्वीकार कर लेती हैं कि वह छोटे हैं या बड़े, अमीर हैं या गरीब, सुन्दर हैं या असुन्दर। उन्हें तो बस अच्छा पैसा मिलना चाहिए।

सकुचाते, लज्जाते और झेंपते हुए कुछ नौजवान उसके पास से गुज़रे। रतन को उन पर रहम आया कि यह जवानी के उन्माद में जोशीले युवक किसी नागिन के आगोश में जाएंगे। वह इन्हें डस लेगी। इनकी जेबें खाली करके और इन के जोश को ठण्डा वहां से चलता कर देंगी।

वह एक ऐसे कोठे के छज्जे के नीचे आ गया जिसकी सीढ़ियों पर नृत्यशाला की प्लेट लगी हुई थी। कहने वाले तो यह कह रहे थे कि यह प्लेटें सब दिखावे की हैं। इनकी आड़ में सब चलता है। होता यहां सब कुछ है। रतन के कदम वहीं रुक गए। उसे लगा जैसे वह उस स्थान पर पहुंच गया हो जिसकी उसे तलाश थी और जहां वह पहुंचना चाहता था। वह चुपके से सीढ़ियां चढ़ने लगा। यह जाहिरा बाई की नृत्य शाला थी। बड़ा सारा कमरा कलात्मक ढंग से सजाया गया था। फर्श पर कालीन था। जिसमें पांव धंस रहे थे। कोने में संगमरमर की मेज थी। मेज पर बिलोरी गिलासों के साथ अंगूरी शराब की बोतल थी। बीच में चौकी थी। चांदी की उस पर तशतरी थी। चांदी का ही उस पर पानदान रखा हुआ था। जगह-जगह कई एशट्रे पड़ी हुई थी। दीवारों पर भिन्न-भिन्न मुद्राओं में नृत्यांगनाओं के चित्र और मूर्तियां टंगी हुई थीं। इत्र-फुलेल की खुशबू से वातावरण महक रहा था।

कमरे के मध्य एक नृत्यांगना अपनी कला का प्रदर्शन कर रही थी। लगता था जैसे खजुराहों की किसी अनुपम मूर्ति में विधाता ने प्राण डाल कर इन लोगों के मनोरंजन के लिए इसे भेज दिया हो। उसकी कमर की लचक में मनचलों के दिल लिपटे जा रहे थे। उसके सुरचित और संवारे हुए बालों के जूड़े में कलियों की माला गुंथी हुई थी। लम्बी सुगठित ग्रीवा में शुभ मोतियों की माला झूल रही थी। उसके रक्तवर्ण हल्के-हल्के पांवों में महावर था। अपने मुखचन्द्र को झीने पारदर्शी आंचल में छिपाये हुए वह नृत्य में निमग्न थी।

समाज के कर्णधार, महानुभाव इस महफिल की शोभा बढ़ा रहे थे। सेठ साहुकार थे, जिन्होंने ब्याज की ऊंची दरों और ब्लैक द्वारा धन एकत्र किया हुआ था। रिश्वती अधिकारी थे, जिन्होंने जनता की गर्दनपर कलम रूपी छुरी चलाई हुई थी। ठेकेदार थे, जिनके द्वारा बनाए गए सरकारी भवन खड़े होने से पहले गिरने के मूड़ में थे। धार्मिक संस्थाओं के पुजारी और अधिकारी थे। कुछ नेता जी थे जिनके पास कभी अपनी साईकल नहीं थी। चुनाव जीतने के पश्चात् जनता की सच्चे दिल से सेवा करते हुए उन्होंने तीन-चार सालों में ही अपनी कंगाली दूर भगा दी थी।

इस अमीराना महौल को देखकर रतन की हिम्मत ही न हुई थी कि वह उनके बीच में बैठ जाए। उपस्थित जनों की सतृष्ण आंखें नर्तकी के अंग संचालन को तमयता से देख रही थीं। वह नज़रें उसके थिरकते हुए अंगों पर टिकी हुई थीं। उन आंखों में तृष्णा, अनोखी उत्सुकता और तीव्र प्यासा थी। उनकी भूखी आंखों में चमक थी। उनके हाव-भाव में उल्लास था। वह नर्तकी के सुन्दर चेहरे की झलक पाने के लिए और उसके तिरछे कटाक्षों के लिए लालायित से हुए जा रहे थे। वह नाच रही थी। शायद किसी मजबूरी के कारण। अपनी तमन्नाओं का खून करके उस खून के छींटे वह दर्शकों पर छिटक रही थी। अपने मासूम दिल और जख्मी जिगर के टुकड़े उन पर फैंक रही थी। कामी पुरुष इस गुमान में थे कि यह मधुर मुस्कान के कण हैं।

बुत सा बना एक ओर बैठा हुआ रतन उस-नर्तकी को तन्मयता से निहार रहा था। विस्फारित नेत्रों से वह उसे पहचानने का यत्न कर रहा था। झीने आंचल में चमक रही आंखें उसे जानी पहचानी सी लग रही थीं। उसे लगा जैसे वह कोई स्वप्न देख रहा हो। जैसे उसकी आंखें धोखा खा रही हों। जो कुछ वह देख रहा था उसकी आंखों का धोखा नहीं था। वास्तविकता थी। जिससे मुंह मोड़ा नहीं जा सकता था।

नर्तकी ने नृत्य करते हुए अपने चेहरे की झलक दिखाई तो रतन का आपाद मस्तक सिहर सा उठा। नर्तकी कोई और नहीं थी, उर्मिला थी। उसकी प्रियेसी, उसके सपनों की राजकुमारी। उर्मिला की साक्षात छवि उसके समक्ष प्रतिमाकार खड़ी थी।

रतन उसे देखकर स्तब्ध एवं अवाक सा रह गया। उसे जैसे काठ मार गया हो। उसके सुन्दर सुलौने सपने सब धराशायी हो गए। राख का ढेर बन गए। उर्मिला उसे इस हालत में मिलेगी उसने सोचा तक न था। न स्वप्नों में और न ख्यालों में। वह स्वप्न क्या से क्या हो गए।

नर्तकी की नजर सहसा रतन पर पड़ी। वह ठिठक सी गई। वह अपने होश हवास खो बैठी। वह नाचना भूल गई। संगीत के साथ नृत्य का समन्वय न रहा। घुंघरुओं की झंकार बेसुरी हो गई। पांव ताल के साथ थिरकना भूल गए। कला प्रेमियों ने सोचा कि जाहिरा बाई की तबियत यकायक खराब हो गई है इस तरह तबियत खराब होने का कारण वह समझ नहीं सके थे। जब उन्होंने एक युवक को जिसकी वेश-भूषा में सादगी थी और चेहरे पर सरलता टपक रही थी नर्तकी की ओर बढ़ते देखा तो वह उसे देखते ही रह गए।

नर्तकी के मन के तार झनसना उठे। नृत्य में उठते हुए कदम रुकने लगे। वाद्ययन्त्र झनझनाते हुए खामोश हो गए। क्षण भर के लिए वहां सन्नाटा सा छा गया। ऐसा सन्नाटा जो किसी तूफान के आगमन का सूचक होता है।

"अब मैं और नहीं नाच सकूंगी।"

"क्यों ? क्या बात हो गई। अभी तो इबतदा (आरम्भ) ही है।"

एक साथ कई नजरे उठीं। उनके चेहरों पर प्रश्नवाचक चिन्ह थे। कभी उनकी विस्मित नज़रें नर्तकी की ओर उठतीं और कभी वह उस आगन्तुक को देखने लग जाते।

"अभी तो आनन्द आना ही शुरू हुआ था।"

"कहा है न कि और नहीं नाच सकूंगी।"

"क्यों भला ?"

"हर किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता।"

एक—आप हमें निराश कर रही हैं।

दूसरा—आपको अपने मेहमानों की खुशी का ख्याल रखना चाहिए।"

तीसरा—आपको ऐसा व्यवहार क्या उचित है।

एक अन्य—आप कला की तौहीन कर रही हैं।

आप हमें इस कद्र बेआबरू करके लौटा नहीं सकतीं।

"आप लोगों की मैं खरीदी हुई नहीं हूं। अपने पैसे उठाइए और मुझे क्षमा करें, बाई जी के बदले हुए तेवर देख कर वह लोग सहम से गए।

"पैसों की भी भला कोई बात है। उन लोगों ने वहां से खिसक जाना ही बेहतर समझा। रतन को खा जाने वाली नजरों से देखते हुए वह नीचे जाने लगे।

जरूर यह इसका पुराना आशिक होगा। बाई जी भी इस पर जान छिटकती होगी।" फुसफुसाते हुए वह वहां से चल दिए। नर्तकी के इशारे पर संगीत वादक भी वहां से उठ कर चल दिये। कैसा विलक्षण और रोमांचकारी मिलन था।

लज्जा और ग्लानि की प्रतिमा बनी उर्मिला अपना सिर झुकाये खड़ी थी। रतन उसके करीब चला आया। उसके अन्दर का बहाव तेज हो गया। अतीत के सूखे पत्तों से ढका कब्रिस्तान हवा के झोंके से लड़खड़ाने लगा। बवंडर सा पैदा हो गया था। पत्ते बिखरने लगे। अपने अन्दर के ज्वालामुखी को दबाये हुए वह उसे देख रहा था। रतन ने उसकी ओर एक दफा देखा और आंखें फेर लीं। पर उसकी इस चितवन में कुछ ऐसा धिक्कार, कुछ ऐसी लज्जा, कुछ ऐसी व्यथा और कुछ ऐसी घृणा भरी हुई थी कि उर्मिला की देह में सिर से पांव तक सनसनी सी दौड़ गई। वह अपनी ही नजरों में हल्की, दुर्बल और जलील सी हुई जा रही थी।

"मेरी आंखें कहीं धोखा तो नहीं खा रही ?"

वह चुप्प खड़ी थी।

"अ, पाप उर्मिला देवी ही है न ?"

"मुझे देवी कहना, अब ठीक नहीं, रतन बाबू !"

"उसकी लावण्ययुक्त काया मुरझा गई थी। होंठ कांप रहे थे। आवाज़ नहीं थी। सिसकियां भी नहीं थीं। उसकी पलकों में उलझी हुई बूंदों को रतन स्पष्ट देख रहा था।"

"मैंने तो कुछ और ही सपने देखे थे। यह तो कभी नहीं सोचा था कि तुम इस दशा में मिलोगी।"

"इन्सान कभी-कभी किस्मत के हाथों खिलौना बना कर रह जाता है।"

उसकी आवाज़ वेदनाजनित थी।

"माना कि किस्मत का इन्सान की ज़िन्दगी में अहम रोल है। यह राजा को रंक बना सकती है। धनी को रोटी के टुकड़ों की खातिर दर-दर की भीख मांगने पर मजबूर कर सकती है। दुर्भाग्य का प्रकोप किसी को भी बीमारी का शिकार बना सकता है। पर एक प्रतिष्ठित और सम्मानित परिवार की बहू-बेटी कोठे की शोभा बने, रूप की मण्डी में अस्मत फरोशी करे-बड़ी अजीब सी बात लगती है।"

क्षोभ भरी वाणी में वह बोला।

"मजबूरी इन्सान को सब कुछ करवा देती है, रतन बाबू।"

"ऐसी भी क्या मजबूरी थी?"

"लम्बी कहानी है। सुनोगे?"

रतन ने अपनी चरम उत्सुकता दिखाई तो वह अपनी करुणा गाथा सुनाने लगी—

रतन को नौकरी से अलग कर देने के पश्चात् उर्मिला के पिता सक्सेना साहिब इस गहरी चिन्ता में थे कि जितनी जल्दी हो सके उर्मिला के हाथ पीले कर दिए जाएं। इस कार्य में वह किसी तरह की देरी करना उचित नहीं समझते थे। बेटी से वह हर मुआमले में सलाह लिया करते थे। पर इस सिलसिले में उन्होंने उर्मिला से कुछ भी पूछने तक की जरूरत न समझी। वर की खोज में उन्होंने दिन रात एक कर दिया। उनकी भाग दौड़ सफल हुई। अपनी इच्छा और समझ के अनुसार उन्हें एक ऐसा घराना मिल गया जो उनकी हैसियत के मुताबिक था। लड़का अपने मां बाप की इकलौती सन्तान था। लम्बी चौड़ी पैतृक संपत्ति का वह एकाधिकारी था। इस हालत में यही समझा गया कि लड़की ऐसे घर में जा कर मौज करेगी। उसके सुख-सौभाग्य का सूरज चमक उठेगा। लड़का ज्यादा पढ़ा लिखा है या थोड़ा इसमें क्या फर्क पड़ता है। डिग्री छोटी है या बड़ी यह तो नौकरी की खातिर ही देखा जाता है। जिनका अपना व्यापार उन्नत हो या भारी संपत्ति का मालिक हो उसे नौकरी की क्या जरूरत है। वह तो स्वयं नौकर रखता है। आखिर नौकरी तो नौकरी ही है। लड़के की योग्यता, उसके गुण-अवगुण और उसके चरित्र के सम्बन्ध में भी छान बीन करने की ज़रूरत नहीं समझी गई। क्योंकि माया रूपी चमकीली चादर ने सक्सेना साहिब की आंखों को चुंधिया दिया था। गरीब के गुणों को कोई नहीं पूछता। अमीर के अवगुण भी उसके बड़प्पन के चिन्ह समझे जाते हैं।

इकलौता बेटा होने के कारण लड़का बिगड़ा हुआ नवाब था। उसमें वह तमाम अच्छी बुरी आदतें थीं जो आवारा और बदचलन लड़कों में हो सकती हैं।

बाप की बड़ी अभिलाषा थी कि बेटा कुछ पढ़ जाए। शिक्षा को वह गरीब लड़के का सहारा और अमीर का श्रृंगार समझता था। बेटे की पढ़ाई के लिए हर सम्भव प्रबन्ध किया गया। अलग-अलग विषयों के लिए प्राईवेट अध्यापक नियुक्त

किए गए। पर जिसे खुद पढ़ाई में रुचि न हो, अध्यापक उसे क्या घोल कर पिला देगा। पढ़ाई तो तपस्या है। मन मार कर मेहनत करनी पड़ती है। एक अमीर ज़ादे को भला क्या ज़रूरत थी। पढ़ाई में वह लापरवाह था और नालायक भी। लेकिन परीक्षाओं का पास करना केवल मेहनत और योग्यता पर ही तो निर्भर नहीं करता। कुछ और भी तो साधन हैं। यह साधन इस जमाने में ज्यादा प्रचलित हैं।

पैसे के ज़ोर पर विनोद ने एक सुपरवाइज़री स्टॉफ को अपनी मुट्ठी में कर लिया। मैट्रिक की परीक्षा किसी तरह नक्ल मार कर उसने पास कर ली। बाप की इच्छा भी पूरी हो गई। वह चाहता था कि बेटा कालेज में पढ़े। विनोद के पिता का विचार था कि कालेज की पढ़ाई के बिना ज्ञान अधूरा रह जाता है। मनुष्य के व्यक्तित्व के कुछ ऐसे पहलू हैं जो कालेज की दीवारों में ही पूरी तरह विकसित हो पाते हैं।

विनोद कालेज में पढ़ने लगा। वहां जा कर वह और बिगड़ गया। आवारागर्द, लफंगा और लोफर हो गया। बाप ने उसे समझाना चाहा पर दिनों दिन उसकी आदतें बिगड़तीं गईं। बड़े बूढ़ों ने बाप को सलाह दी कि उसे विवाह की बेड़ी पहना दी जाए। हो सकता है उससे वह सुधर जाए।

उर्मिला और विनोद का भाग्य बन्धन हो गया। उसकी मांग में सिन्दूर जगमगाने लगा। पैरों की उंगलियां बिछुओं से भर दी गईं। नाईन रोज आकर पैरों में महावर भर जाती थी। दुर्भाग्य वश उर्मिला के सास-ससुर एक ऐक्सीडेंट में मारे गए। कार वृक्ष से ऐसे टकराई कि उसमें तमाम सवार दम तोड़ गए। कुछ घटना स्थल पर और बाकी हस्पताल में। विनोद पर जो थोड़ा बहुत नियन्त्रण था वह भी उठ गया। वह स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करने लगा। एय्याशी में वह धन को दोनों हाथों से लुटाने और उड़ाने लगा।

विवाहित जीवन के कुछ समय तक तो पत्नी के रूप सौंदर्य ने उसे बांधे रखा। शीघ्र ही उसका मन भर गया। उर्मिला से वह ऊबने लगा। यौवन रस का रसिया और कली कली पर मण्डराने वाला भंवरा भला कैसे तृप्त रह सकता था। वह एक ही खूंटे पर कैसे बंधा रह सकता था। इंद्रीय लिप्सा उसकी दिनचर्या बनी हुई थी। वासना तृप्ति उसके जीवन का तत्त्व।

गरीब में यदि कोई ऐब है तो हर कोई उसे दुत्कारता है। लोग उसे नीच समझते हैं। वह उनकी नज़रों में गिर जाता है। धन में ऐसी शक्ति है कि अमीर आदमी के ऐब उसका शुगल समझे जाते हैं।

विनोद की जेब में नोट उछलते थे। माया उसकी चेरी थी। कई युवक उसकी दोस्ती का दम भरते थे। उसके गिर्द मण्डराते थे। उसकी चाह पलूसी करते थे। उसकी उंगली पर वह नाचते थे। अपने अमीर दोस्त की सेवा करने में वह तत्पर रहते थे। धन में चुम्बकीय शक्ति होती है। अनेक दोशीजाएं और हसीन लड़कियां उस पर मर मिटने का अभिनय करती थीं।

कैबरे डांसरज़, दफ्तरों की स्टैनोटाइपिस्ट और रिसेप्शनिस्ट रमणियां उसकी फ्रेंडज़ थीं। वह उसकी महिफल की शमां बनती थीं। उसकी रातें रंगीन करती थीं। विनोद और उनके बीच एक समझौता था। उसे उनके युवा और सुन्दर शरीर की आवश्यकता थी और उन्हें धन की।

धन धान्य से परिपूर्ण था वह घर जिसमें उर्मिला दुल्हिन बन कर आई थी। वहां उसे सूर्य को मात कर देने वाला वैभव एवं ऐश्वर्य मिला। उसे दुर्लभ एवं अलभ्य पदार्थ उवलब्ध थे। नवविवाहिता की जो खाने-पीने, पहनने की इच्छाएं, अभिलाशाएं और उमंगें होती हैं वह सब पूरी हो रही थीं। कोई भी औरत इस स्थिति में अपने आप को सौभाग्यशालिनी समझ सकती है।

उर्मिला के हृदय मंदिर में उसके प्रियतम रतन की प्रतिमा स्थापित थी। उसकी छवि उसकी आंखों में समाई रहती थी। चेष्टा करने पर भी वह उसे भुला न सकी थी। उसकी याद उसे हर समय सताती रहती थी। जुदाई का ग़म उसे तड़पाता रहता था। एक दर्द सा उसके मन में समाया हुआ था। पर दाम्पत्य जीवन में पति के प्रति उसका दायित्व था। अपने कर्त्तव्य को समझते हुए वह अपनी मनोव्यथा को छुपाए हुए थी। चेहरे पर प्रसन्नता का आवरण डाले और दिल के घाव छुपाये हुए वह पति की हर खुशी को अपनी खुशी समझती थी। उसके कहने के मुताबिक चलती थी। न चाहते हुए भी वह पार्टियों इत्यादि में जाती थी। पति की कुछ ऐसी हरकतें थीं जो उसे चुभती थीं पर उर्मिला ने अपनी यह भावना ज़ाहिर नहीं होने दी थीं। घर आए मेहमानों का वह स्वागत करती थी। पर उसे यह बात कदापि गवारा नहीं थी कि उसका घर आवारा और बाजारु औरतों का अड्डा बन कर रह जाए।

यह घर उसका अपना था जो उसे मंदिर के समान था। इसे वह हर हालत में पवित्र और इसके वतावरण को शुद्ध रखना चाहती थी ताकि उसके भविष्य पर और उसकी होने वाली संतान पर बुरा प्रभाव न पड़े। पहले तो उसने पति को प्यार से समझाते और उसे गलत मार्ग पर अग्रसर होने से रोकने का यत्न किया। पर विनोद की तो उस समय बुद्धि उलटी हुई थी। उसे हर अच्छी बात बुरी लगती थी। वह किसी की कोई बात सुनने को तैयार न था। उर्मिला के प्यार पूर्वक समझाने का पति पर जब कोई प्रभाव न पड़ा तो उसने उग्र रूप धारणा कर लिया। पति की बुरी और घिनौनी हरकतों का वह विरोध करने लगी।

विनोद ने आज तक किसी का हस्तक्षेप अपने प्रोग्राम में सहन नहीं किया था। पत्नी को उसने डराने धमकाने की कोशिश की। उसके साथ वह दुर्व्यवहार करने लगा। उर्मिला सब कुछ सहन कर सकती थी पर अपने घर की बर्बादी नहीं। अत्याचार सहते हुए वह अपने मार्ग पर अडिग रही। आवारा औरतों को बुरा भला कह कर उसने उन्हें घर में आने से रोक दिया था। कुछ समय पश्चात् आखिर पति के व्यवहार में परिवर्तन आ गया। वह नर्म पड़ गया। लगता था उसने हार मान ली हो या कुमार्ग पर चलते हुए वह ऊब गया हो। उसके व्यवहार में मधुरता आ

गई थी । पत्नी की इच्छा अनुसार चलने का उसने विचार बना लिया था । उर्मिला सद्गृहिणी थी । पति को संमार्ग पर लाने का ही उसका एकमात्र उद्देश्य था । विनोद उसके साथ प्यार करने लगा । कोमलता से उसके साथ पेश आने लगा । उर्मिला पति के इस स्नेह सिक्त व्यवहार पर हैरान थी । पर उसका प्यार पा कर विभोर सी हो गई । अपनी सारी वेदना, व्यथा, क्षोभ और कड़वाहट भूल गई । उर्मिला के दिन फिर आए थे । पति ने व्यभिचार का जीवन छोड़ दिया था । उर्मिला के लिए यही बहुत था ।

एक दिन विनोद ने उर्मिला को सुझाव दिया कि यदि वह चाहे तो कहीं घूमने जाया जा सकता है । उर्मिला चेंज चाहती थी । इन दिनों शिद्दत की गर्मी पड़ रही थी । सुबह से शाम तक सूर्य किरणों के भाले फेंकता रहता था । इस हालत में उन्होंने किसी पहाड़ पर जाने का प्रोग्राम बना लिया ।

"कौन से हिल स्टेशन पर जाना पसन्द करोगी तुम ?"

"तुम्हारी पसन्द मेरी पसन्द है ।"

"हम पर्वतों की रानी मसूरी चलेंगे । वहां मेरा एक बाल सखा है । ठहरने में हमें सुविधा होगी ।"

"जैसा तुम चाहो ।"

प्रोग्राम फाइनल हो गया । निश्चित समय पर वह रवाना हो गए । रेल गाड़ी द्वारा वह देहरादून पहुंचे । स्टेशन से बाहर निकल कर कुलियों द्वारा अपना सामान उठवाते हुए वह टैक्सी स्टैंड पर पहुंचे । उर्मिला जानती थी कि पहाड़ी मार्ग पर यात्रा करने के दौरान अक्सर मतली आने लगती है या उलटियां होने लगती हैं । टैक्सी स्टैंड पर ही उसने एवोमीन नामक दवा का प्रबन्ध कर लिया । टैक्सी सांप की तरह बल खाती हुई टेढ़ी मेढ़ी सड़क पर दौड़ रही थी । मनोरम दृश्य थे । पर्वतों की ढलान पर प्रातः कालीन समय में पेड़-पौधे और वृक्ष मौन और शान्त दिखाई दे रहे थे ।

लगता था वह किसी देवता की उपासना में समाधी लगाए बैठे हों । चारों ओर नेत्र रंजित हरियाली थी । कहीं कहीं भेड़ बकरियों के झुण्ड दिखाई देते थे । पहाड़ी रमणियां अपनी परम्परागत वेशभूषा में अपने पशुओं को चराती फिर रहीं थीं । सड़क के किनारे खड़ी हो कर वह बसों और टैक्सियों को कौतुहल वश देख रही थीं । सीढ़ीनुमा खेतों में फसलें लहलहा रहीं थीं । उन खेतों के पास छोटे-छोटे गांव दिखाई दे रहे थे । यह गांव केवल पांच सात घरों के ही थे । उर्मिला के लिए यह दृश्य नए नहीं थे । फिर भी खिड़की में से झांकते हुए वह उन दृश्यों का अवलोकन कर रही थी । वह सोच रही थी कि पहाड़ी इलाकों के लोग गरीब, मेहनती और ईमानदार होते हैं । पर अब यह बात नहीं रही थी । इन इलाकों का वातावरण भी दूषित हुआ जा रहा था । कुछ समय पहले उसने एक समाचार पत्र में ठग्गी की रोचक घटना के सम्बन्ध में पढ़ा था ।

पर्वतीय किशोरियों की एक टोली बस में सवार हो गई। उन्होंने पास ही के किसी गांव में जाना था। अपनी भोली भाली अदाओं और मोहक निष्छल मुस्कानों के साथ उन्होंने मार्ग में थोड़े ही समय में मैदानों में आने वाले यात्रियों के साथ आत्मीयता स्थापित कर ली। उन्हें अपने विश्वास में ले लिया। मार्ग में ही वह कोई बहाना बना कर उतर गईं। कुछ यात्रियों ने आगे जा कर देखा कि वह लूट लिए गए हैं। उनकी जेबें काट ली गई थीं।

विनोद बैठे-बैठे उर्मिला से पूछने लगा, "सुना है पहाड़ी इलाकों के लोगों में कई अजीब से रिवाज हैं ?"

"कौन से रिवाज ?"

"यहां की औरतें कई-कई मर्दों से विवाह करवा लेती हैं ?"

"हो सकता है गरीबी के कारण ऐसा रिवाज कहीं हो।"

"एक बात और भी सुन रखी है मैंने। बताओ गी।"

"कैसी बात है ?"

"कई इलाकों में मेहमान निवाज़ी का रिवाज है। वहां की औरतें घर आए मेहमानों के पांव तक धोती हैं। उन्हें देह सुख प्रदान करती हैं। बदले में वह अमीर मेहमान उन्हें कीमती उपहार देते हैं।

उर्मिला चुप थी। टैक्सी घूं घूं की आवाज़ करती हुई सर्पीली सड़क पर चढ़ाई चढ़ रही थी। सिनेमा के चित्र की भान्ति नयन विराम दृश्य उसकी आंखों के सामने से गुज़र रहे थे।

"तुम कुछ बोली नहीं, उर्मिला।"

"क्या बोलूं ?"

"मेरी बात का जवाब नहीं दिया।"

"हो सकता है, ऐसा रिवाज कभी कहीं हो। मेरे ख्याल में इन गरीब और भोले भाले लोगों में अच्छी बातें ज्यादा हैं।"

विनोद को उसने निरुत्तर कर दिया था।

सामने मृग शावक किल्लोलें करते फिरते थे। टैक्सी की आवाज़ से डर कर वह भाग निकलते थे। आकाश के नीले समुद्र में मेघ खण्ड तैर रहे थे।

गंतव्य स्थल पर वह पहुंच गए। टैक्सी एक शानदार बंगले पर पहुंच कर रुक गई। यह बंगला विनोद के एक दोस्त रूपेश का था। द्वार पर शेरों की मूर्तियां थीं जो कला का नमूना थीं।

रूपेश उन्हें देखते ही उल्लास से भर गया। उसने अपने दोस्त का शानदार स्वागत किया। उसके पांव धरती पर नहीं लग रहे थे। उर्मिला को देख कर उसे अत्यधिक खुशी हुई थी। उसकी खातिर-सेवा में वह खुद दौड़ा फिरता था। उसके गिर्द मण्डराने के सिवा वह सारे काम भूल गया था। लगता था उसे यही काम रह गया हो। वह भी विनोद की तरह ही था। उसके पिता जी पाकिस्तान से इधर आ

गए थे । जीवन निर्वाह करने के लिए उन्होंने लकड़ी का टाल लगाया था । फिर वह ठेकों का काम करने लगे । सरकारी अफसरों से मिल मिला कर उन्होंने जंगलों के ठेके लेने शुरू कर दिए । इन ठेकों में उन्होंने खूब हाथ रंगे और वह लाखों में खेलने लगे । हैड ऑफिस उन्होंने देहरादून खोल लिया । मसूरी का काम उन्होंने अपने बेटे की देख रेख में छोड़ दिया । रूपेश एय्याश किस्म का विलासप्रिय व्यक्ति था । बाप से उसकी निभ नहीं सकी ।

ऐसी हालत में उनकी निभनी मुश्किल हो गई तो बाप ने बेटे को अलग कर दिया ।

बंगला पाश्चात्य ढंग से सजा हुआ था । ऐश्वर्य के तमाम साधन वहां उपलब्ध थे । उन्हें एक खूबसूरत ढंग से सजे हुए कमरे में ठहराया गया । रूपेश का व्यवहार उर्मिला को संदेहजनक लगा । वह बात बात पर बेहूदा ढंग से हंस रहा था । कभी नेत्र नचाता, होंठ सिकोड़ता और भवें खींचता । उसकी आंखों से वासना झलकती थी । विनोद से बातें करते समय वह कनखियों से उर्मिला को देखता था । उसका इस तरह ताकना उर्मिला को चुभ रहा था । सबसे बडी बात जो उर्मिला को अखर रही थी वह यह थी कि इतनी बड़ी कोठी में उसने किसी नारी मूर्ति को नहीं देखा था पति के पास होते हुए भी उसे एकाकीपन का भय सा सता रहा था ।

वह रूपेश की परछाई से भी परे रहना चाहती थी पर वह उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था । विनोद भी रूपेश को एक तरह से उत्साहित कर रहा था । कई दफा रूपेश सोफे इत्यादि पर उन दोनों के बीच बैठ जाता था । उर्मिला मन ही मन जल भुन कर रह जाती पर विनोद को लेश मात्र भी यह बात बुरी नहीं लगती थी ।

एक रात को रूपेश ने उन्हें डिनर के लिए एक बड़े होटल पर इन्वाईट किया ।

विनोद ने उर्मिला को डिनर पर चलने के लिए तैयार हो जाने को कहा ।

"मैं नहीं जा सकूंगी उर्मिला बोली"

"क्यों ? तुम्हारी तबियत तो ठीक है ?"

"मुझे तुम्हारे दोस्त की कम्पनी पसन्द नहीं ।"

"ऐसी क्या बुराई है उसमें ।"

"उसकी हरकतें, उसका ताकता झांकना ।"

"एक बात मैं भी तुम्हें कहने की सोच रहा था ।"

"कहिए ?"

"तुम्हें जरा सहृदयता का व्यवहार करना चाहिए । देखो वह हमारे लिए कितना कुछ कर रहा है ।"

"कितना कुछ कोई किसी के लिए तब ही करता है जबकि कोई स्वार्थ हो ।"

"कुछ भी है । तुम नहीं चलोगी हो वह क्या सोचेगा ।"

"न चाहते हुए भी उर्मिला होटल में डिनर के लिए जाने की तैयारी करने लगी । साधारण वेश भूषा में ही वह विनोद के साथ हो ली ।"

होटल का वातावरण रंगीन था। भिन्न-भिन्न किस्म के लोग वहां थे। एक-दूसरे से अलग। अपनी ही दुनियां में वह मगन थे। काले रंग का एक मोटा सा व्यक्ति जो वेश-भूषा से किसी फैक्ट्री का मालिक लग रहा था, अपनी बीबी को जो उसकी बेटी की उम्र के समान दिखाई दे रही थी, जाम पीने के लिए ज़िद्द कर रहा था। दूसरी मेज़ पर दो प्रेमी एक-दूसरे में खोए हुए, आंखों में आंखें डाल कर बातें कर रहे थे। एक-दूसरे को देख कर वह उन्मुक्त से हुए जा रहे थे। प्रेमिका अपने मोतियों से दांतों की आभा दिखाते हुए चहक-चहक कर बातें कर रही थी। किसी टेवल पर देश की विदेशी नीति अथवा किसी प्रदेश के मन्त्रिमण्डल की स्थिति पर वार्ता चल रही थी।

रूपेश ने एक कैबिन रिज़र्व करवा रखा था। वहां पर वे लोग जा कर बैठ गए। कुछ ही देर पश्चात् वहां एक आधुनिका युवती आ गई। उसका परिचय देते हुए रूपेश ने कहा कि वह उसके दफ्तर में काम करती है। उसकी वह निजी सहायक है। स उतंवंगी का इकहरा बदन था। लम्बोतरा चेहरा, भूरे रंग की रेशमी साड़ी, कटे हुए बाल, बारीक भवें, पतले रसीले होंठ और मद भरी आंखें। विनोद एकटक उसे देखता रह गया। पर उर्मिला को उसकी सूरत एक आंख भी नहीं भा रही थी।

रस और रंग में डूबी हुई बातें होने लगीं। इस दौरान बैरे को आर्डर दिया गया। डिनर से पहले विहस्की आवश्यक समझी गई। उसका दौर चल पड़ा। जाम तैयार किए चए। तीव्र गंध उर्मिला के नथुनों में घुसने लगी। उसके मस्तिष्क की नसों में तनाव आ गया। वह गहरी घुटन महसूस कर रही थी। एक जाम उर्मिला की ओर बढ़ाया गया तो वह बोली।

"मझे मुआफ करें।"

"क्यों ?"

"मैंने आज तक इसे छुआ तक नहीं।"

"आपके विचार शुद्ध हैं। पर इस ठण्डे इलाके में इसके बिना गुज़ारा बहीं। आज जो बारिश हो गई है इससे सर्दी इतनी बढ़ जाएगी कि रात को कुल्फी जम जाने का डर है।" मिस रोफाली जो रूपेश की पी० ए० थी, ने दलील दी। अपने हाथ से उसने एक गिलास उर्मिला की ओर बढ़ाते हुए इसे पी लेने के लिए आग्रह किया।

उर्मिला की नज़र अपने पति पर गई। विनोद की झपकती हुई आंखें भी विनीत भाव से आग्रह कर रहीं थी कि वह सोसायटी सेक गिलास को थाम तो ले। अगर उसने ऐसा न किया तो वह इसे अपना एक तरह से अपमान समझेगा।

"हमारा दिल न रखोगी, भाभी।"

"उठा लो न ज़रा तो।"

वह विवश थी। विवशता की हालत में उसने गिलास उठा लिया। इसे अपने होठों तक ले जाने के लिए वह झिझक रही थी।

"लीजिए न !" मिस शेफाली ने कहा।

"आप किस सोच में पड़ गईं।" रूपेश बोला।

"पहली दफा है न, झिझक होनी ही है।"

"एक दफा दो घूंट गले के नीचे करके तो देखिए। फिर देखना कितना आनन्द आता है।"

उर्मिला पर नज़रें लगाए हुए वह लोग उसे पीने पर मजबूर कर रहे थे।

"दुनियां में कोई चीज़ अच्छी बुरी नहीं है उर्मिला जी ! यह इनसान के विचार हैं जो उसे ऐसा बना देते हैं। किसी वस्तु से घृणा करना मानसिक कमज़ोरी है या विचारों की संकीर्णता है। आधुनिक समाज में ऐसे मन और विचार वाला व्यक्ति अच्छा नहीं समझा जाता।"

मिस शैफाली जो उस महिफल पर छाई हुई थी, ने अपने दार्शनिक विचार बिदारते हुए कहा।

उर्मिला के मन में खीझ सी उत्पन्न हो रही थी। वह नहीं चाहती थी कि कोई अपने विचार उस पर लादे।

"उर्मिला जी अगर नहीं साथ देंगी तो मैं भी हाथ नहीं लगाऊंगी।"

"आप लोग नहीं पीएंगी तो हमारा पीना न पीने के समान होगा। महफिल में रंगीनी नहीं आएगी। सब कुछ फीका ही फीका दिखाई देगा। रूपेश ने निराशा भरे स्वर में कहा।"

उर्मिला को लगा जैसे वह चारों ओर से जकड़ी गई हो। विवशता की हालत में उसने गिलास उठा लिया। छोटा सा घूंट भरा तो उसे महसूस हुआ जैसे कोई तीखा तरल पदार्थ उसके गले को काटता हुआ गुज़र गया हो। वह घूंट इतना कड़वा था कि उसे घुड़घुड़ी सी आ गई। सारी देह कांप उठी। वह हैरान थी कि इतने कड़वे पदार्थ का लोग क्यों इतने शौक से सेवन करते हैं।

"थ्री चीयरज़ फॉर मिसेज़ विनोद।" मिस शेफाली ने हर्षनाद किया।

"बहुत दिलेर निकलीं आप तो। आखिर मैदान मार ही लिया।"

"बहुत-बहुत शुक्रिया। हमारा कहना मान ही लिया आपने। हमारी भावनाओं की कद्र डाल ही दी।"

"तुम साथ दोगी तो खूब मज़ा आएगा।"

"कड़वी तो ज़रूर लगी होगी। अब आप देखेंगी कितना आनन्द आता है। कुछ नमकीन खा लो। यह लो काजू। दो चार मुंह में डाल लो। चबाने से मुंह का कसैलापन दूर हो जाएगा।"

"दो चार घूंट ले लोगी तो बात ही कुछ और बन जाएगी। फिज़ा बदल जाएगी। सब रंगीन ही रंगीन नज़र आएगा।"

"धरती घूमती और सारा ब्रह्मांड झूमता दिखाई देगा।"

मिस शेफाली ने बातों के साथ चुस्कियों का तांता बांध रखा था। बड़े मज़े से

वह पी रही थी। उसके चेहरे पर खुमार और बड़ी-बड़ी आंखों में सरुर था। वह बहक रही थी।

उर्मिला का गिलास मेज पर पड़ा हुआ था। रूपेश ने वह गिलास उठा लिया। उसके स्थान पर अपना रस दिया।

"वाह ! यह तो जाम बदल गए।" विनोद ने कहा।

"इसमें हर्ज़ क्या है। आज कल तो सब कुछ चलता है। बाहें बदल जाती हैं। पार्टनर बदल जाते हैं। क्यों मिस शेफाली ?" रूपेश ने नेत्र तेरते हुए कहा।

शेफाली ने उसकी हां में हां मिला दी।

उर्मिला को भद्दे मखौल और मज़ाक अच्छे नहीं लग रहे थे। उसका वहां दम घुट रहा था।

आर्केस्ट्रा मधुर सिने धन का रस छलका रहा था।

होटल के खास कमरे खास लोगों के लिए आरक्षित थे। उनमें एक दो उच्चा-धिकारी भी शायद थे। इन लोगों का रंगरेलियां मनाने का प्रोग्राम था। इस बात की वहाँ चर्चा थी।

डिनर लेने के पश्चात् जब वह होटल से बाहर आए तो शमशान सी सूनी घाटियां रात्रि की काली चादर ओढ़ चुकी थीं।

आसमान पर टिमटिमाती हुई तारिकाए मुसकरा रही थी।

मिस शेफाली ने मार्ग में उनसे अलग होना चाहा। परन्तु रूपेश के अनुरोध को वह टाल न सकी। उनके साथ ही वह बंगले पर चली आई।

वहां पर उन लोगों के बीच कोई गुप्त बात हुई। स्थिति संदिग्ध बनी हुई थी। उर्मिला भयभीत दिखाई दे रही थी। उसे रूपेश की नीयत पर संदेह हुआ जा रहा था।

वह अपने कमरे में चली गई। बस्त्र बदलने के बाद वह बिस्तर में चली गई। उसकी तबियत ठीक नहीं थी। शाम से ही वह अपसेट फील कर रही थी। मदिरा की गन्ध ने उसका बुरा हाल कर रखा था। उसे मतली आ रही थी। देर तक वह लेटी रही ताकि उसकी देह और दिमाग को आराम आ सके। पर उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उसका पति विनोद अभी तक नहीं आया था। वह उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। जाने इस वक्त वह कहां चला गया था।

उर्मिला कमरे में अकेली थी। दूसरे कमरे में रूपेश था। वह सोच रही थी कि रूपेश से अपने पति के बारे में पूछे। सहसा द्वार का रेशमी पर्दा किसी युवती के झुमके की भान्ति हिलता हुआ दिखाई दिया। उर्मिला की नज़र द्वार पर ही लगी हुई थी। उसे उम्मीद थी कि उसका पति आया होगा। पर आगन्तुक उसका पति नहीं था। रूपेश पर्दे के पास खड़ा दिखाई दिया।

"अन्दर आ सकता हूं ?

उर्मिला ठिठक सी गई थी। बिस्तर में वह अलसाय से ढंग से लेटी हुई थी।

अपनी अस्त व्यस्त सी दशा को ठीक करते हुए और सम्भलते हुए वह बोली "आईए।"

रूपेश का चेहरा सैक्सी बना हुआ था। डगमगाते कदमों से वह अन्दर आया।

"वे नहीं आए अभी तक ?"

"तुम्हारा मतलब विनोद से है ?"

"हां।"

"उसी के सम्बन्ध में बताने आया हूं मैं।"

"कहिए ? कहां हैं वे ?"

"बताते हुए ज़रा संकोच होता है।"

"संकोच क्यों ?"

"वह मिस शेफाली के संग गया है।"

"क्यों ?"

"होगी कोई खास बात।"

"कैसी बात।"

"बात तो वहीं जानें। मेरे ख्याल में—।"

"बताओ न ?"

"विनोद को मिस शैफाली में दिलचस्पी हो गई है। वह चीज़ ही ऐसी है। किसी का भी दिल आ सकता है। मिस शेफाली ने सीधी तरह उससे अनुचित बात करने से इन्कार कर दिया। वह मेरे पास आया और गिड़गिड़ाने लगा कि वह शेफाली के बिना रह नहीं सकता। सिर्फ आज की रात के लिए ही। मैंने उसे समझाया। पर वह अपनी जिद्द पर अड़ा रहा। इसके बदले में वह कुछ भी करने को तैयार था। लाख समझाने पर भी वह न माना। मेज़बान के रूप में मुझे अपने दायित्व का ख्याल था। विवश होकर मुझे मिस शैफाली की मिन्नतें खुशामदें करनी पड़ीं।

"वे अब कहां हैं ?"

"शैफाली के संग गया है।

"कहां है वह चुडैल ?"

"किसी होटल में गए होंगे।"

उर्मिला सकपका सी उठी थी।

"घबराओ नहीं, मैंने उस पर शीघ्र लौट आने की शर्त लगा रखी है।"

लज्जित सी हुई जा रही थी उर्मिला। उसे रूपेश की नीयत पर पूरा संदेह था। वह इस सच्चाई से कैसे मुंह मोड़ सकती थी कि उसका पति लम्पट, दुराचारी और रसिया रह चुका है।

"एक बात कहूं भाभी ?"

उर्मिला ने प्रश्न वाचक दृष्टि से एक नज़र से उसे देखा।

"पति को जब अपनी पत्नी की भावनाओं का तनिक भी ख्याल नहीं तो पत्नी को उसकी चिन्ता में क्यों घुल घुल कर मरना चाहिए।"

"आप कहना क्या चाहते हैं ?"

मैं सोचता हूं कि जब तक तुम ईंट का जवाब पत्थर से न दोगी विनोद सीधे मार्ग पर नहीं आएगा। "इन शब्दों के साथ रूपेश उसके पास आता हुआ पलंग पर बैठ गया था। हरकत उसे सरासर अनुचित लगी। आवेश में आ कर पलंग छोड़ कर वह खड़ा हो गई।

"मि० रूपेश, मुझे तुम्हारी नसीहत की जरूरत नहीं।"

"मैं जानता था कि तुम्हें मेरी बात बुरी लगेगी।"

"तुम्हें इस तरह मेरे कमरे में नहीं आना चाहिए था।"

"क्यों ?"

"अकेली औरत के पास इस तरह आना शिष्टाचार के विरुद्ध है।"

"तुम ठीक कहती हो। पर मैं विनोद के इशारे पर ही आया हूं।"

"कैसा इशारा ?"

"मेरे साथ उसने एक समझौता किया है। शैफाली के दीदार के बदले में उसने मुझे तुम्हारे पास....।" इन शब्दों के साथ वह उसकी ओर बढ़ने लगा। उर्मिला का सर्वांग कांप उठा। उसकी लाज खतरे में थी। सहसा उसमें दैवी शक्ति सी आ गई। भय ने उसे साहसी बना दिया।

रूपेश ने उसका अंग स्पर्श करना ही चाहा था कि उर्मिला ने उसे ऐसा धक्का दिया कि वह ताव न ला सका। शराब खोरी और विलासप्रियता के कारण उसका अंजर पंजर ढीला हो चुका था। लुढ़कता हुआ वह पास वाले पलंग पर गिर पड़ा।

सामने कार्निस पर गुलदस्ता पड़ा था। उर्मिला ने वह गुलदस्ता उठा लिया। अपने सतीत्व की रक्षा की खातिर उसने इसे मौके के हथियार के रूप में प्रयोग करने का इरादा कर लिया था। उर्मिला ने उग्र रूप धारण कर लिया। भीगी बिल्ली बना रूपेश वहां से खिसक गया।

उर्मिला ने द्वार की सिटकनी चढ़ा ली। उसकी सांस फूल रही थी। अपने आप को स्वस्थता की हालत में लाने के लिए वह पलंग पर बैठ गई। मारे क्षोभ के उसकी आंखों में पानी भर आया वह समझ गई थी कि यह सारा सुनियोजित षड्यन्त्र था। पति के प्रति उसके मन में घृणा हो गई।

विनोद जब वापिस आया तो पत्नी विक्षिप्त सी मुद्रा में बैठी थी।

"कहां गए थे ?" उसने पूछा।

"शैफाली को उसके घर छोड़ने गया था।"

"क्यों ? तुम्हारा उससे क्या वास्ता ?"

"रूपेश ने आग्रह किया कि मैं उसे उसके घर टैक्सी पर छोड़ आऊं। पर तुम्हारी यह हालत क्यों हो गई ?"

"उर्मिला सन्नाटे में आई हुई थी।"

"कुछ तो कहो।" उसने प्यार जताते हुए पूछा।

"अपने दोस्त से ही पूछ लो।"

"उसने घिनौनी हरकत की होगी। क्या किया उसने ?"

"जानते हुए भी अंजान बनने की कोशिश कर रहे हो ?"

"मुझे इतना ग़लत न समझो, उर्मिला। उसने मेरे बारे में ऊल-जलूल की बातें की होंगी।"

कुछ लम्हों के लिए सन्नाटे में आ कर बोलने लगा—

"मैं···मैं उस शैतान का खून कर दूंगा।"

"अब यहां और ठहरना ठीक नहीं। कल हमें यहां से चले जाना चाहिए।"

"कल तो बहुत दूर है। मैं यहां कुछ पल भी नहीं रुक सकता। चलो, चलें। अभी, इसी वक्त।"

"कहां जाएंगे अब ?"

इतने बड़े होटल हैं। कहीं भी ठहर सकते हैं हम। रुपेश से मेरा सामना हो गया तो कुछ भी हो सकता है। मैं उसकी गर्दन तोड़ दूंगा।" उस की भृकुटियां तन गई थीं।

"इतने तैश में आना अच्छा नहीं। संयम में रहिए। रात काफी हो चुकी है। उजाला होने से पहले ही हम यहां से कूच कर जाएंगे।" उर्मिला पति की चिकनी-मीठी बातों में आ गई थी। पति ने उस से सहानुभूति दिखाई और प्यार किया। जिससे वह पिघल सी गई। पति के प्रति उसका सारा क्रोध और आक्रोश जाता रहा।

सुनियोजित षडयन्त्र का बड़ा भाग तो अभी बाकी था। उसी रात उर्मिला को कोई ऐसी तीव्र नशीली चीज़ दे कर उसे बेहोश कर दिया गया। रुपेश द्वारा पाले हुए गुंडों को यह हिदायत दी गई कि बेहोशी की हालत में उसे किसी नदी में डुबो कर सदा की नींद सुला कर राह के कांटे की तरह निकाल बाहर किया जाए। प्रातः होने से पहले उसको इस दुनिया से विदा कर दिया जाए।

रुपेश के वह आदमी उर्मिला के रूप सौन्दर्य को देखकर लालच में आ गए। उन्होंने सोचा कि रूप-यौवन की इस धनराशि की नदी में फैंक कर नष्ट करने की बजाए कोई लाभ उठाया जाए। उसे किसी कोठे वाली के हाथों सौंप कर पैसा कमाया जाए।

बेहोशी की हालत में उर्मिला को एक गिरोह के हाथों सौंप दिया गया। वह गिरोह उसे आगरा ले आया और उसे हीरा बाई को बेच दिया। हीरा बाई आगरे की मशहूर तवायफ थी। उर्मिला को पहली नज़र से देखते ही उस ने गिरोह को मुंह मांगे दाम दे दिए। उसने सोचा था कि यह हीरा हुस्न के बाजार में वासना की बाढ़ ला देगा। वासना के भूखे और यौवन रस के प्यासे भंवरे उस पर नोटों की बारिश कर देंगे। शमां पर पतंगों की भान्ति वह गिरेंगे।

उर्मिला को वहां कड़े पहरे में रखा गया। उसकी हर सुविधा का भी ध्यान रखा गया ताकि वहां उसका दिल लग जाए। हीरा बाई को अनुभव था कि यह छोकरियां मौका मिलते ही यहां से भाग निकलती हैं। उस मैना को एक तरह से सोने के पिंजरे में बन्द करके रखा गया था।

अन्ततः एक रात को उससे कहा गया कि वह अपने आप को संवारे और भरपूर श्रृंगार करे। ऐसा श्रृंगार जो एक दुल्हन पहली रात के लिए करती है। आज की रात उसकी नत्थ उतारी जाने की रस्म अदा की जानी थी। एक बड़े सेठ के मनोरंजन की वस्तु बनना था। सेठ की आगोश में बैठ कर उसे नवेली दुल्हन का अभिनय करना था। पर उर्मिला ने पेशा अपनाने से साफ इन्कार कर दिया था। वह अपनी जिद्द पर अड़ गई। ऐसा इन्कार और जिद्द प्रायः यहां आने वाली सभी लड़कियां करती हैं। पर हीरा बाई बखूबी (अच्छी तरह) जानती थी कि ऐसी हठीली लड़कियों को, इन जिद्दी छोकरियों को कैसे सीधा किया जाता है। उर्मिला को बालों से घसीट कर वह उसे अलग कमरे में ले गई।

"हमारी बात सीधी तरह से मान जाओ। नहीं मानोगी तो हम मनाना जानते हैं।" खा जाने वाली नज़रों से घूरते हुए ीरा बाई ने धमकी दी।

उर्मिला हिली-डुली नहीं। निष्प्राण प्रतिमा सी वह फर्श पर पड़ी थी।

"ढेर सा धन खर्च हुआ है तुझ पर। हम चार पैसे खर्च करते हैं तो किसी उम्मीद से।"

"आप चाहें तो मेरी जान ले लें। पर यह धन्धा मुझ से नहीं हो सकेगा। जिस्म फरोशी नहीं की जा सकती मुझ से।" उर्मिला ने दृढ़ एवं विनीत भाव से कहा।

"एक दफा फिर सोच लें।"

"यह मेरा फैसला है।"

"गुस्ताख लड़की", हीरा बाई ने हंटर उठाया। उसे हवा में लहराते हुए और दांत भींचते हुए कहा, "बड़ों-बड़ों को सीधा किया है मैंने।"

हंटर का तीव्र प्रहार उसके फूल से कोमल बदन पर पड़ा। उसके शरीर में कंपकपी सी दौड़ गई। पर उसने आह तक न भरी। इस चोट को वह खामोशी से सहन कर गई। हीरा बाई की हैरानी की हद न रही। इस हंटर को तो देखते ही जुरायम पेशा लड़कियों को नानी याद आ जाती थी। हंटर के हल्के प्रहार से वह हाय-तौबा करने लग जाती थीं। पर यह किस धातु की बनी है। क्रोधावेग में हीरा बाई ने हंटर का दूसरा प्रहार करने के लिए अपना हाथ पुनः उठाया। उसकी नज़र उर्मिला के चेहरे पर पड़ी। उस चेहरे पर जाने ऐसा कौन सा तेज विद्यमान था कि उसका हाथ वहीं रुक गया।

उर्मिला के चेहरे पर कोई ऐसा दिव्य नूर और दैवी शक्ति का आभास हुआ कि उसके समक्ष हीरा बाई कमज़ोर पड़ गई। उसका हाथ ढीला पड़ गया। हंटर

छुड़ाने का उसमें शक्ति न रही। ममता उसमें उमड़ आई। ऐसा अनुभव हीरा बाई का पहली दफा हुआ था। कोठे पर लाई जाने वाली लड़कियों को पिटते और उन पर जुल्म ढाते हुए उसका हृदय पाषाण हो गया था। वही हृदय आज मोम की तरह पिघल गया। उस पर रहम और वात्सल्य स्नेह की लकीरें खिच गईं। कठोर और क्रूर चेहरे पर कोमलता उमड़ आई। हंटर उसने परे फैंक दिया। स्नेह सिक्त हाथ से वह उसकी पीठ सहलाने लगी। विस्मय विस्फारित नेत्रों से उर्मिला उसे निहारने लगी।

"तुम मेरी तरफ से आज़ाद हो। तुम्हारा कोई है तो तुम उसके पास जा सकती हो।"

स्नेह विह्वल सी होती हुई बाई जी बोली।

बाई जी में आये इस अकस्मात परिवर्तन और उसके इस अद्भुत व्यवहार पर उर्मिला को विश्वास सा नहीं हो रहा था।

"तुम जहां भी जाना चाहो, तुम्हें पहुंचा दिया जाएगा।"

विस्मित सी हो उर्मिला उसे निहार रही थी।

"मुझ पर विश्वास करो बेटी। तुम्हारे मां-बाप कहाँ रहते हैं?"

"वे इस संसार में नहीं रहे।"

"तुम विवाहिता हो?"

"हां।"

"तुम्हारा पति तुम्हें स्वीकार कर लेगा तो तुम्हें वहीं भेजा जा सकता है।"

"मैं...मैं कहीं भी जाना नहीं चाहती।"

"क्यों? अपने पति के पास भी नहीं?"

"नहीं। उसके अत्याचाराना दुर्व्यवहार की लम्बी कहानी है। अब तो मैं आपके आंचल की छाया में रहूंगी।"

"तुम कीचड़ में कमल के समान रहोगी।"

बाई जी ने उसे अपनी छाती से लगा लिया। वह दोनों स्नेह एवं आत्मीयता की सरिता में बहने लगीं। उर्मिला बाई जी के गले लग गई। ठीक उसी तरह जैसे कोई बेटी बड़ी देर के पश्चात् ससुराल से लौट कर अपनी मां से मिल रही हो।

बाई जी ने उसे अपनी धर्म पुत्री बना लिया। कोठे के कीचड़ से परे उर्मिला के रहने का प्रबन्ध कर दिया गया।

गीत-संगीत और नृत्य कला में वह प्रशिक्षण लेने लगी। उसके सुगठित बदन का एक-एक अंग सांचे में ढला हुआ था। विधाता ने उसकी देह को कला के दृष्टि-कोण से बनाया लगता था। ललित कलाएं उसमें विकसित होने लगीं। निरन्तर अभ्यास और परिश्रम ने इन कलाओं में उसे प्रवीण कर दिया।

अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते हुए वह जीवन निर्वाह करने लगी। एक अलग कोठे की व्यवस्था उसके लिए कर दी गई।

उर्मिला से वह ज़ाहिरा बाई बन गई थी। नर्तकी के रूप में उसकी कला की ख्याति आस-पास के इलाके में फैल गई। सुरमई सांझ के कदम रात्रि रमणी की ओर बढ़ते ही थे, नील गगन में टिमटिमाती हुई तारिकाएं मुस्कराने को ही होती थीं कि ज़ाहिरा बाई के कोठे पर नृत्य प्रेमियों की आमद-रफ्त शुरू हो जाती थी। कला प्रेमी और रसिक जन उस पर नोटों की वर्षा करते।

इस तरह उर्मिला ने अपनी करुण गाथा दर्द भीगी और वेदना जनित वाणी में कह सुनाई। अपनी जीवन पुस्तिका के पन्ने उसने अपने प्रेमी के समक्ष पूरी तरह खोल कर रख दिए। रतन के मन में अपनी प्रेयसी के प्रति क्षोभ की जो भावनाएं पैदा हो गई थीं उनके बादल पुनः छंट गए।

उर्मिला आज भी पाक और पवित्र थी। मदिरा की बोतल में पड़े हुए गंगाजल के समान थी। रतन के मन में उसके प्रति पहले से अधिक श्रद्धा, सम्मान और प्रेम की भावनाएं उत्पन्न हो गईं। रतन के अतीत की गाथा तो सरल और साधारण थी। इतनी साधारण जो उसने थोड़े ही लम्हों में वर्णन कर दी।

दोनों देर तक अपने हृदय के उद्गार एक-दूसरे पर प्रकट करते रहे।

रतन का अधिकतर समय उर्मिला के संग ही गुज़रने लगा। उसके मन में यह बात बसी हुई थी कि कुछ भी है कानून की नज़र में तो वह अपराधी है। वह जानता था कि कानून के हाथ लम्बे होते हैं। किसी न किसी दिन तो उसे कानून की जकड़ में आना ही होगा।

ज़ाहिरा बाई ने इन दिनों अपना काम बन्द किया हुआ था। रात का दूसरा पहरा था। सहसा द्वार पर खट-खट की ध्वनि हुई। जाहिरा बाई ने कोई ध्यान न दिया।

ध्वनि फिर हुई। उसने सोचा कोई भूला-भटका कला प्रेमी होगा। अपनी एक सेविका को ज़ाहिरा बाई ने कहा कि वह आगन्तुक को विनयपूर्वक द्वार पर ही वापिस कर दे। कुछ लम्हों के पश्चात् उस सेविका ने आ कर बताया कि आगन्तुक किसी विशेष उद्देश्य से आया है। वह आप से मिलने और अन्दर आने की जिद्द पकड़े हुए है।

उत्सुकतावश वह स्वयं उठी और द्वार पर आई,

"कौन हैं आप ?"

"मुआफ करना आपको इस वक्त डिस्टर्ब किया।"

"कहिए ?"

"मुझे रतन लाल से मिलना है।"

"क्यों ?"

"वह मेरे पुराने साथी हैं। कोई विशेष बात करनी थी उनसे।"

"कैसी बात ?"

"वह इन दिनों टैक्सी चलाते हैं न ?"

"हां।"

"बस इसी सिलसिले में।"

अपने नाम का ज़िक्र सुन कर उत्सुकता वश रतन भी वहां चला आया था।

"कहिए ?" उसने जिज्ञासु नेत्रों से आगन्तुक को देखा।

"तुम्हारा ही नाम रतन लाल है ?"

"आप कौन साहिब हैं ?"

"पहचाना नहीं मुझे ?"

"नहीं तो।"

"कोशिश करो। नहीं तो मैं बता ही दूंगा।"

रतन असमंजस में पड़ा उसे निहार रहा था।

"तुम इन दिनों टैक्सी का धन्धा करते हो ?"

"जी हां।"

"पहले कहां रहते थे ?"

"दिल्ली में था मैं।"

"कितना समय हो गया है वहां से आए हुए ?"

"कुछ ही दिन हुए हैं अभी तो।"

"वहां से अचानक क्यों चले आए ?"

रतन को उस व्यक्ति पर संदेह सा हुआ।

"यह सब किस उद्देश्य से पूछ रहे हैं आप ?"

"यह देखिए।" आगन्तुक ने ऐड्रैस कार्ड प्रस्तुत किया।

देखते ही रतन का सर्वांग कांप उठा।

"मैं किस उद्देश्य से पूछ रहा हूं, तुम समझ ही गए होंगे ?"

सी० आई० डी० इन्सपैक्टर ने रतन की आंखों में आंखें डालते हुए कहा।

रतन सिहर सा उठा था।

"भागने की कोशिश करना फिजूल है। तुम इस वक्त पुलिस के घेरे में हो। अपने आपको हमारे हवाले कर दो।"

तत्क्षण सीढ़ियों में कुछ आदमियों के ऊपर चढ़ने की पगध्वनि सुनाई दी। पुलिस वाले विद्युत् गति से वहां पहुंच गए।

रतन को तुरन्त पुलिस की हिरासत में ले लिया गया।

इस नाटकीय घटना को देखकर उर्मिला हैरत में पड़ गई थी। साहस करके उसने पूछा, "यह क्या माजरा है इन्सपैक्टर साहिब ?"

"हम इसे गिरफ्तार करने आए हैं।"

"क्यों...?"

"यह मुजरिम हैं।"

"क्या जुर्म किया है इन्होंने ?"

"कत्ल का दोष है इस पर।"

"कत्ल और यह ! यह ऐसा नहीं कर सकते। आपको महज धोखा हुआ है।"

"हमारे पास सबूत हैं।"

"सबूत झूठे होंगे सरासर।"

"झूठे हैं या सच्चे, यह फैसला तो अदालत ने करना है।"

"कहां कत्ल हुआ है ?"

"दिल्ली में।"

"किसका ?"

"सेठ विनोद कुमार का।" उर्मिला ठिठक सी गई थी।"

"विनोद कुमार कौन ?"

"K. L. Enterprise के मालिक, मिल ऑनर स्वर्गीय सेठ किशोरी लाल के एकमात्र पुत्र।"

उर्मिला को जैसे काठ मार गया हो। उसकी आँखें पथरा गईं। उसके सामने अन्धेरा छा गया। सिर घूम गया उसका। वह वहीं बैठ गई। उसने अपनी कलाइयों को धरती पर मारा तो तड़ाक से कांच की चूड़ियां टुकड़े-टुकड़े हो गईं।

उर्मिला के इस व्यवहार को देखकर वहां पर उपस्थित लोग स्तब्ध रह गए कि यह क्या माजरा है।

"यह क्या ! आपका मृतक से कोई सम्बन्ध था ?

उर्मिला हिली-जुली नहीं। शोक और सन्नाटे में डूबी हुई वह पाषाण प्रतिमा सी बनी बैठी थी।

"आपको भी हमारे साथ पुलिस स्टेशन चलना होगा। इस केस के सिलसिले में आपसे भी हम पूछताछ करने की जरूरत समझते हैं।" इन्सपैक्टर के इस आदेश पर वह वहां से उठी और पुलिस के साथ चल दी। उस की आँखों में गहरी वेदना छाई हुई थी।

कुछ ही फासले पर पुलिस वैन खड़ी थी। उसमें सवार हो वह लोग पुलिस स्टेशन को रवाना हो गए।

उर्मिला के व्यवहार ने रतन को गहरी सोच में डाल दिया था। चूड़ियां नारी के सुहाग की निशानी होती हैं। अपने आप नारी सुहाग के इस चिन्ह को तभी मिटाती है जबकि वह विधवा हो जाती है। कहीं उसके हाथों अंजाने में उर्मिला के

पति का खून तो नहीं हो गया। इस विचार से उस का रोम-रोम सिहर उठा। अगर यही बात है तो वह अपने आप को कभी मुआफ नहीं कर सकेगा।

पुलिस स्टेशन ज्यादा दूर नहीं था। थोड़ी ही देर में वैन वहां पहुंच गई।

सी० आई० डी० इन्सपैक्टर ज्ञान शंकर कौल दिल्ली के रहने वाले थे। अभियुक्त रतन और ज़ाहिरा बाई को पुलिस के हवाले करने के पश्चात् वह दिल्ली अपने परिवार से मिलने आए। वह आगरा में नियुक्त थे। हर रविवार को वह अपने घर चले आते थे। इस दफा वह दो हफ्तों के पश्चात् आए थे। अपनी नव-विवाहिता बहिन माधवी को देख कर वह गद्‌गद हो उठे।

"कैसी हो माधवी ?"

"तुम से कदापि नहीं बोलूंगी, भैया" रुठे हुए अंदाज में वह बोली।

"क्यों भला !"

"कितने दिनों से आई बैठी हूं ! तुम्हारा इन्तज़ार करते हुए आँखें भी थक गईं। आज भी न आते तो कल सुबह चली जाती।" "तुम्हारी शिकायत सही है, माधवी ! हमारी नौकरी ही कुछ ऐसी है। न जाने कब, कहां और किधर जाने का आदेश मिल जाए। जिस रोज़ तुम यहां आई थी मेरा अगले ही दिन आने का प्रोग्राम था। छुट्टी के लिए ऐप्लाई कर रखा था। सूचना मिली कि दिल्ली में रात को एक सेठ का खून हो गया है। हत्यारा भाग कर आगरा चला गया है। छुट्टी कैंसल कर दी गई और मुझे आदेश मिला कि हत्यारे की तालाश की जाए।"

"यह घटना दिल्ली में कहां हुई थी भैया ?"

इन्सपैक्टर ने जब कालोनी का नाम लिया तो माधवी के कान खड़े हो गए। उसकी उत्सुकता बढ़ने लगी। इस घटना में उसे गहरी दिलचस्पी हो गई।

"वह हत्यारा पकड़ा गया ?"

"हां।"

"कब ?"

"कल रात वह एक बाई जी के कोठे पर था। कोठे पर छापा मार कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया। ऐसे केस तो रोज़ ही होते रहते हैं। हमारे लिए तो यह सिर दर्द बनते ही हैं। पर तुम्हें इन बातों से क्या लेना देना।"

"इस केस से मेरा गहरा सम्बन्ध है, भैया।"

"क्या—।"

मेरी एक पुरानी सहेली उसी कालोनी में रहती है। कल वह अचानक मुझे मिल गई। यह घटना उसने मुझे सुनाई थी।

"क्या कह रही थी तुम्हारी सहेली ?" इन्सपैक्टर ज्ञान शंकर ने पूछा।

"वह बता रही थी कि जिस सेठ का कत्ल हुआ है वह लंपट, दुराचारी और बदमाश था। उसने गुंडे पाल रखे थे। शरीफ लड़कियों को फंसा कर उनकी असमत लूटा करता था।"

"तुम्हारी सहेली यह सब कैसे जानती है ?"

"उसकी घिनौनी हरकतें प्राय: सुनने में आती रहती थीं। एक दिन उसने मेरी सहेली के साथ भी ऐसी हरकत करने की कुचेष्टा की थी।" कुछ क्षण चुप रहने के पश्चात् उसने पुन: पूछा।

"जिस व्यक्ति को आपने कत्ल के इल्जाम में पकड़ा है वह कैसा लगा ?"

"उसकी शक्ल सूरत से तो शराफत टपकती थी।"

"सेठ की हत्या के कारण का पता चला ?"

"अभी तक तो कुछ कहा नहीं जा सकता। हां, इस कत्ल में कोई भेद जरूर है।"

"वह कैसे ?"

"जिस कोठे से हत्यारे को पकड़ा गया है एक बाई जी का है। लगता है वह नर्तकी मृतक की पत्नी और हत्यारे की प्रेमिका है।"

"यह कैसे पता चला ?"

इन्सपैक्टर ने माधवी को चूड़ियां तोड़ने की बात कह सुनाई। घटना से सम्बन्धित कई बातें माधवी की समझ से परे थीं। वह सोच में डूबी हुई थी। जो घटना उसके साथ घटी थी उस पर उसने पूरी तरह आवरण डाल रखा था। अपने भैया को तनिक भी आभास तक न होने दिया था। भोली और अनभिज्ञ सी बनते हुए वह बोली, "भैया हो सकता है उस दिन भी मृतक किसी मासूम लड़की की इज्जत लूटने की कुचेष्टा कर रहा हो। गुत्थम-गुत्था होते समय यह घटना घट गई हो।"

पोस्टमार्टम की रिपोर्ट भी कुछ ऐसा ही कहती है। पर तुम यह कैसे कह सकती हो ?"

"मेरी सहेली है न, जो उसी कालोनी में रहती है। उसने बताया था। उस रात कोठी से किसी अबला की चीखें भी पास रहने वाले कुछ लोगों को सुनाई दी थीं।"

"कुछ भी हैं। कत्ल के केसों का फैसला तो गवाहियों और सबूतों पर ही निर्भर करता है।"

"गवाह और सबूत तो पैसे वालों के पक्ष में ही जाते हैं। इस देश में इन्साफ महंगा है। गरीब इससे वंचित रह जाते हैं।"

"तुम ठीक कहती हो माधवी। हमारे समाज की परिस्थितियां कुछ ऐसी हैं कि जिस लड़की के साथ बलात्कार इत्यादि की घटना हो जाती है वह अदालत में बयान देने की हिम्मत नहीं करती।"

"अब समय आ रहा है कि उसे हिम्मत करनी ही होगी।" कुछ क्षणों तक उन के बीच निस्तब्धता सी छा गई।

"भैया यह आदमी मुझे निर्दोष लगता है। इसकी तुम मदद जरूर करना।"

"हम तो कायदे कानून के गुलाम हैं। अपराधियों से हमदर्दी जताना हमारे प्रोफेशन की मर्यादा के विरुद्ध है।"

"वह अपराधी नहीं है, भैया।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो ?" उसने संदेह की नजर से माधवी को देखते हुए पूछा।

"मैं नहीं कर रही, हालात कह रहे हैं। मेरा मन गवाही दे रहा है।"

"हत्यारे से तुम्हें हमदर्दी क्यों ?"

"मेदा दिल कहता है वह निर्दोष है। उसने कुछ किया है तो मजबूर हो कर। किसी अबला की आबरु बचाने की खातिर।"

इन्सपैक्टर ज्ञान शंकर की पत्नी खाना लेकर वहां आई तो बहिन भाई की वार्तालाप रुक गई। बातचीत का रुख बदल गया। इन्सपैक्टर को भूख लगी हुई थी। होटलों पर खाना खाते हुए वह तंग आ गए थे। पत्नी द्वारा तैयार किये मन पसन्द खाने की थाली पर टूट पड़े। पत्नी बच्चों की पढ़ाई, उनकी सेहत तथा परिवार की समस्याएं लेकर बैठ गई।

माधवी अपने कमरे में चली गई। बिस्तर में लेटी हुई वह गहरी सोच में डूब गई। उसे पूर्ण विश्वास हो गया था कि मृतक वही सेठ है जिसने उस रात उसके सतीत्व को लूटने की कुचेष्टा की थी और उसके भैया द्वारा पकड़ा गया वही युवक है जिसने उसकी लुटती लाज की रक्षा की थी।

यह कैसी विडम्बना थी कि जिस देवता स्वरूप इन्सान ने अपनी जान पर खेल कर उसकी रक्षा की थी उसी के भाई ने पकड़ कर उस व्यक्ति को कानून के हवाले कर दिया है। कत्ल का केस चला कर उसे जेल में बन्द कर दिया है।

पर इसमें उसके भैया का तो कोई भी दोष नहीं। उसने तो केवल अपना कर्त्तव्य निभाया है। माधवी उस व्यक्ति की हर सम्भव सहायता करना चाहती थी। पर वह नारी थी। उसकी कुछ सीमाएं थीं। ऐसी सीमाएं जिन्हें साधारणतया नारी लांघ नहीं सकती। उसकी मदद वह हर हालत में करेगी—यह उसने पक्का इरादा कर लिया था। पर कैसे ? यह प्रश्न उसके समक्ष था। उसके हृदय सागर में विचारों की उताल तरंगें उठ रही थीं। अनेक योजनाएं उसके मस्तिष्क में उत्पन्न हो रही थीं। उन पर वह गम्भीर रूप से सोच रही थी। अन्नतः वह एक निष्कर्ष पर पहुंच गई।

रात गहरी और पूरी काली थी । वृक्षों की टहनियों में झींगरों की झंकार भरी हुई थी । पत्ते उसांसे छोड़ रहे थे । एक दूसरे से काना फूसी कर रहे थे । गोल चाँद जो पहले खूनी और लाल था, धरती से ऊंचा उठता हुआ अब अधिक उजला हो गया था । जेल के प्रांगण के छोर-छोर में उदाहरता के साथ अपनी नीली रोशनी बिखेर रहा था ।

रतन जेल की कोठड़ी में था । उसकी आंखों में इतना दु:ख, पश्चाताप और वेदना तैर रही थी कि समूची दुनियां उसमें डूब सकती थी । उसे अपनी गिरफ्तारी का तनिक भी ग़म नहीं था । दु:ख था तो इस बात का कि अन्जाने में उससे कितना घोर अपराध हो गया है । उर्मिला की मांग का सिन्दूर उसने अपने हाथों से पोंछ दिया है । उसी के ही कारण उसकी प्रियेसी विधवा हो गई है । आज तक उसके शरीर का रोम-रोम उर्मिला की भलाई, उसके कल्याण और उसके सुख सम्पन्नता के लिए मंगल-कामना करता रहा था । जब भी कभी प्रार्थना में उसके हाथ उठते थे रतन ने भगवान से यही मांग की थी कि उर्मिला सौभाग्यशालिनी हो, उसका विवाहित जीवन सुखमय और पुष्पित-पल्लवित हो । वह सदा सुहागन रहे । दु:ख की उसे गर्म हवा तक न लगे ।

अदालत उसे कत्ल के जुर्म की सज़ा दे सकती है । पर इस अक्षमय अपराध की सज़ा उसे कौन देगा । उसकी आत्मा उसे दुत्कार रही थी ।

उर्मिला भारतीय नारी है । भारतीय नारी के लिए पति ही सर्वस्व होता है । वह कैसा भी हो पत्नी उसे अपना इष्टदेव भाग्य विधाता और प्राणेश्वर समझती है । वह उसके साथ कैसा भी दुर्व्यवहार करे भारतीय नारी उसकी प्रसन्नता, उसकी दीर्घायु और उसके कल्याण के लिए सदा मनौतियां मानती रहती है । करवा चौथ तथा कुछ अन्य तीज त्योहारों के दिन वह उपवास इत्यादि इसीलिए रखती है ।

हवा की सायं-सायं में अजब वीरानगी महसूस हो रही थी । दूर कहीं कुत्ते भौंक रहे थे । जेल के प्रांगण में वृक्ष भूत-प्रेत से लग रहे थे । चमगादड़ के पंखों की खड़खड़ाहट कभी-कभी सुनाई दे रही थी । व्याकुलता और बेचैनी की हालत में रतन कोठड़ी में पायचारी कर रहा था ।

उर्मिला नज़रबन्द थी । हीराबाई को जब इस बात का पता चला तो गहरा दुख हुआ । उसने निश्चय कर लिया कि वह अपनी सारी पूंजी लगा कर उसे और रतन को छुड़वाने के यत्न करेगी । उसने नगर के मशहूर वकील को मुंह मांगे पैसे दे कर केस लड़ने के लिए इन्गेज कर लिया ।

अदालत के कमरे में न्यायमूर्ति महोदय पधारे । उन्होंने कुर्सी सम्भाली तो अदालत की कारवाई आरम्भ हो गई ।

सरकारी वकील ने बहस शुरु की। गहरी और वज़नदार आवाज़ में वह बोलने लगा, "मी लार्ड मरहूम विनोद कुमार का कत्ल एक सुनियोजित और सोचे विचारे षड्यन्त्र के तहत हुआ है।

This murder is preplanned premedituted and pre-thought.

ज़ाहिरा बाई को मुजरिम रतन से प्रेम था। यह इश्क मुजरिमा की शादी से पहले शुरु हो चुका था। मुजरिमा अपने महबूब की जुदाई को सहन न कर सकी। विवाहिता होते हुए भी अपने आशिक के साथ प्यार की पींघे चढ़ाती रही। इश्क के जनून में वह घर से पलायन कर गई। अपने आशिक के साथ मिल कर उन्होंने राह का कांटा निकालने का षडयन्त्र रचा और एक रात को रतन लाल ने वह कांटा निकाल दिया। वह रोड़ा परे फेंक दिया जो उन दोनों के मार्ग में रूकावट था।"

रोमांचक कहानी और अपनी ओर से ठोस दलीलें देते हुए वकील ने एक फिल्मी अदाकार की तरह हवा में अपनी नाक लहराते हुए कहा कि यह नारी, नारी नहीं, नागिन है। यह पापिष्ठा कलंकिनी, बदचलन और बेवफा है। इसने अपने पति को कत्ल करवाया है। यह औरत भारतीय नारी की मान-मर्यादा, महानता और गौरव पर बदनुमा धब्बा है। इसे और इसके आशिक को सजाए मौत न दी गई तो भारतीय जनता के इन्साफ के इस मन्दिर पर से विश्वास उठ जाएगा।

सरकारी वकील ने इस्लामी देशों का हवाला देते हुए अदालत को यह भी बताया कि किस तरह वहां ऐसी औरतों और आदमियों को कोड़े मार-मार कर और मौत के घाट उतार कर उदाहरणीय सजा दी जाती है।

मुजरिमा उर्मिला ने अपनी सफाई में अदालत को वह सारी घटनाएं कह सुनाई जो विवाह से लेकर हीरा बाई के कोठे तक आने में उसके साथ घटी थीं। उसने अदालत को बताया कि उसके पति के कत्ल के बारे में पहली दफा उसे उसी समय पता चला जबकि पुलिस ने उसके कोठे पर छापा मार कर रतन को गिरफ्तार किया था।

रतन ने अपने बयानात में वह सारी कहानी कह सुनाई कि किस तरह महरुम विनोद कुमार उसे गोली का निशाना बनाने की कुचेष्टा में ही रिवॉल्वर द्वारा जख्मी हो गया था।

इस पर वकील ने कहा कि यह सारी मनघड़त कहानी है। अभियुक्त कोई सबूत और चशमदीद गवाह पेश करे जिससे यह सिद्ध हो सके कि एक नारी की लाज रखने की खातिर उसने ऐसा कुछ किया था।

"तुम्हारे पास कोई सबूत या गवाह है?" न्यायमूर्ति महोदय ने पूछा।

"रतन कोई जबाव न दे सका। वह खामोश खड़ा था।

"बिना गवाहों और सबूतों के अदालत कोई बात मानने को तैयार नहीं।"

"गवाह हाज़िर है, जज साहिब। सबूत मेरे पास हैं।" एक युवती जो अदालत

के कमरे के एक कोने में बुर्का पहने अपना चेहरा छुपाये बैठी थी, एक झटके से खड़ी हुई और बोली।

कमरे में उपस्थित जन उसकी ओर देखते रह गए।

बुर्का उतार कर वह कटहरे की ओर बढ़ी।

"इस केस के सिलसिले में मैं कुछ कहना चाहती हूँ।"

"तुम ?"

"पहले मुझे कुछ कहने तो दीजिए। इस केस से मेरा गहरा सम्बन्ध है।"

"जो कुछ कहना चाहती हो इधर आ कर कहो।"

जज के इशारे पर वह कटहरे में आ खड़ी हुई।

इंसपैक्टर ज्ञान शंकर कौल की नजर जब उस युवती के चहरे पर पड़ी तो वह ठिठक सा गया। उसे लगा जैसे वह कोई स्वप्न देख रहा हो।

"मेरा नाम माधवी है।" पवित्र पुस्तक प्रस्तुत की गई। उन पर हाथ रख कर माधवी ने कहा कि वह जो कुछ कहेगी सच कहेगी। सच के सिवा कुछ नहीं कहेगी।

"इस केस से तुम्हारा क्या वास्ता है ?"

"सारा केस मेरे ही गिर्द घूमता है, जज साहिब," उसके चेहरे पर न तो भय का चिन्ह था और न ही संकोच के भाव।

"कैसे ?"

जिस अबला की लाज लूटने की कुचेष्टा उस रात मृतक द्वारा की गई थी वह आपके सामने है।"

"क्या s s !"

"जी हां, यकीन कीजिए। उस रात मेरे साथ जो कुछ हुआ वह एक कहानी है आज्ञा हो तो कह दूं।"

"तुम्हें इजाजत है।"

"उस रात मैं अपने ससुराल से दिल्ली आ रही थी। दिल्ली में मेरे भैया हैं। गाड़ी में एक प्रौढ़ा मेरे साथ यात्रा कर रही थी। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। चेहरे पर से सम्पन्नता और शालीनता टपकती थी। उसके बातचीत के सलीके और वेश-भूषा से लगता था कि वह किसी ऊंचे और नेक घराने से सम्बन्ध रखती है। उसकी सरलता, सादगी और मीठी-मोहक बातों ने मुझे मोह लिया। उसकी लच्छेदार और आत्मीयता भरी बातों के मैं वशीभूत हो गई। हम दोनों घुल-मिल कर एक हो गईं। जैसे हम पूर्व परिचित हों और हमारे बीच कोई गहरा सम्बन्ध हो। उम्र में वह मुझ से कहीं अधिक बड़ी थी पर हम दोनों सखियां बन बैठीं।

गाड़ी पीछे से दो घण्टे लेट आ रही थी और फिर दिल्ली के आऊटर सिगनल पर ऐसे रुक गई जैसे आगे जाना भूल हो गई हो। यात्री भूख प्यास के कारण दुःखी थे। वह रेलवे प्रशासन को कोस रहे थे। कर्मचारियों को बुरा भला कह रहे थे। अन्ततः जब वह दिल्ली मेन पर पहुंची तो आधी रात से अधिक समय हो चुका था।

प्लेटफार्म से बाहर आ कर मैंने टैक्सी इन्गेज करनी चाही । कोई टैक्सी स्टेशन के प्रांगण में दृष्टिगोचर न हुई । पता चला आज टैक्सी वालों ने हड़ताल कर रखी है । उनकी मांग थी कि किराए बढ़ाए जाएं क्योंकि पैट्रोल के भाव बढ़ गए हैं । मैं मुश्किल में पड़ गई । मुझे अपसेट और परेशान देख कर उस औरत ने सांत्वना और उत्साह वर्धक स्वर में कहा ।

"वाह, मेरे होते हुए तुम्हें किस बात की चिन्ता । मैंने घर फोन कर दिया है। गाड़ी आ रही है । पहले तुम्हें घर पहुंचा कर फिर मैं अपने घर जाऊंगी," अपना वरदहस्त मेरी पीठ पर रखते हुए उसने स्नेह सिक्त स्वर में कहा । उस कठिन घड़ी में वह नारी मुझे विधाता का वरदान लगी । आधे घण्टे में ही एक शानदार कार हमारे कदमों के पास आ कर खड़ी हो गई ।

ड्राईवर ने सलाम बजाते हुए बैक डोर खोल दिया । पहले उसने मुझे बैठने को कहा फिर वह मेरे साथ सट कर बैठ गई ।

पहिए सड़क पर घूमने लगे । उसमें बैठी हुई मैं आनन्द विभोर सी हुई जा रही थी । दिल की गहराईयों से मैं उसका शुक्रिया कर रही थी । मेरे रोम-रोम में अलौकिक पुलक की वेकली समा रही थी ।

"टैक्सी मिल भी जाती तो भी मैं तुम्हें यूं अकेली न जाने देती ।"

"क्यों आंटी ?"

"आंटी नहीं दीदी कहो मुझे" उसने एक अदा से कहा ।

"रात को इस समय तुम जैसी लड़की का अकेले में टैक्सी में जाना उचित नहीं । कुछ भी हो सकता है ।"

"मैं कैसी हूं, दीदी ?"

"यह तो तेरी उमर का लड़का ही बता सकता है ।"

"मेरे रूप-यौवन की प्रशंसा ने उसने दो चार ऐसे शब्द कहे जो मुझे अटपटे से लगे । पर मैं लज्जा कर रह गई ।

गन्तव्य स्थल की ओर भागती हुई गाड़ी एक आलीशान कोठी के सामने रुकी ।

"यह रहा मेरा स्थान पर चलो, पहले तुम्हें छोड़ आऊं ।"

"आप कष्ट न करें दीदी । मेरा घर ज्यादा दूर नहीं है यहां से केवल अपनी गाड़ी भेज दें ।"

"गाड़ी तो तुम्हें छोड़ कर आएगी ही पर एक शर्त पर ।"

"कहिए ?"

"एक प्याला चाय का पिये बिना नहीं जाने दूंगी ।" उसने एक अधिकार भरे स्वर में कहा ।

"यह चाय का समय नहीं है । दिन में जरूर पीने आऊंगी ।"

"तुम यूं चली जाओगी तो मैं समझूंगी कि तुम मुझे बेगानी समझ रही हो ।"

"यह बात तो नहीं ।"

"तो चलो मेरे साथ।"

उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे कार से नीचे उतार लिया। मैं जाना नहीं चाहती थी। उसके ज़िद्द भरे आग्रह को टाल भी न सकी। वह मुझे अपनी कोठी के भीतर ले गई। कोठी दिखाने के बहाने वह मुझे ऊपर ले गई। वहां का वातावरण मुझे रहस्यमय सा लगा। एक अलग कमरे में मुझे ले जा कर बिठा दिया गया।

"बैठो ज़रा मैं अभी आई। बस दो मिनटों में ही।"

न चाहते हुए भी मुझे वहां रुकना पड़ा। किसी अज्ञात भय के कारण मेरे हिल्लोलित हृदय की धड़कन तीव्र हो उठी।

आधी रात। अंजाने लोग! अनोखी जगह और रहस्यमय सा वातावरण। मैं पश्चाताप करने लगी कि मुझे यहां आना नहीं चाहिए था। कोठी के अन्दर आ कर रुकना मेरी मूर्खता थी। एक-एक क्षण काटना मेरे लिए भारी हो रहा था। उस स्त्री को गए कई मिनट बीत गए। मैंने इधर-उधर झांका। वह कहीं दिखाई न दी। जैसे वह कोठी के अंधकार में समा गई हो। व्याकुलता और बेचैनी से मैं उस कमरे में पायचारी करने लगी। मुझ से वहां ना बैठा जाता था और ना बाहर आया जाता था। फंस गई थी वहां बुरी तरह से। जाल में फंसी हिरणी की सी दशा थी मेरी। वहां दम घुटने लगा था। पक्षी की तरह पंख लगा कर उड़ जाना चाहती थी। पर सकपका कर रह गई। सहसा मेरे कानों में किसी के कदमों की आहट पड़ी। कोई आ रहा था कमरे की ओर। उत्सुकता वश मेरी आंखें द्वार पर लग गईं। आगन्तुक वह प्रौढ़ा नहीं थी। कोई युवक था। उसकी मुखमुद्रा को देखकर मैं ठिठक सी गई। उसकी आंखों में शैतानी थी। मैं भाप गई कि आगन्तुक का इरादा नेक नहीं है।

मेरा गला अवरुद्ध था। साहस बटोर कर मैंने पूछा,

"बहिन जी कहां हैं?"

"उसी ने मुझे भेजा है।" उसकी आंखें अजीब प्रकार की लोलुपता के आवेश से चमक रही थीं।

"कोई कष्ट तो नहीं यहां?"

मेरी ओर बढ़ते हुए वह बोला।

भय एवं क्रोध के मिश्रित भाव ने मेरे मस्तिष्क की नसों को बुरी तरह जकड़ लिया था।

"आपकी क्या सेवा की जाए?"

"मुझे जाने दीजिए।" मैं उठकर बाहर की ओर लपकी तो उसने मेरा रास्ता रोकते हुए कहा, "कहां जा रही हो इस वक्त! आज की रात तो तुम हमारी मेहमान हो। ऐसे हसीन मेहमान पर तो हम अपनी जान छिड़कते हैं। उसे सिर आंखों पर बिठाते हैं। उसके कदमों को चूमते हैं। आज की रात तो हमें आपकी सेवा का सुनहरी मौका मिलना चाहिए।" उसका हाथ मेरे कन्धे पर पड़ चुका था। उसकी सांसों से मदिरा की गन्ध आ रही थी। आंखों में वासना का शैतान झांक रहा था।

"जाने दो मुझे।" उसे परे धकेलने के लहज़े में मैंने कहा था।

"यह भला कैसे हो सकता है।" उसके हाथ की पकड़ मज़बूत होने लगी थी।

"मैं शोर मचा दूंगी।"

"यह व्यर्थ होगा। चिल्लाने से कोई लाभ नहीं होगा।"

उसके चेहरे पर कुटिल मुसकान थी। वह कमीना अपनी घिनौनी हरकतों पर उतर आया तो मैं चीख-चिल्ला उठी। उसके बाद जो कुछ हुआ अदालत उसे रतन भैया की जुबानी सुन चुकी है। जज साहिब, वह लोलुप और नीच व्यक्ति विनोद कुमार था। जाने वह कितनी निर्दोष अबलाओं को अपनी हवस का शिकार बना चुका था।"

"मी लार्ड, यह भी एक रोचक और रोमांचक कहानी रची हुई लगती है।"

"यह सच है, जज साहिब।"

"आप यह कैसे कह सकती हैं कि मृतक ने आपकी इज्ज़त पर हाथ डाला था?" सरकारी वकील ने माधवी को डराने और धमकाने के लहज़े में कहा।

"आप अपने दिल से पूछिए कि क्या आप को मेरी बात सच्ची नहीं लगती?"

"अदालत सबूत चाहती है। जज़बाती बातों की यहां कोई कीमत नहीं। मुझे तो यह सरासर झूठी कहानी लगती है।"

"वकील साहिब, मैं भी बा-इज्ज़त घराने की बहू बेटी हूं। क्या आपकी बहिन या बेटी इस तरह का झूठा ब्यान अदालत में आ कर दे सकती है?"

"फिजूल की बातें सुनने का अदालत के पास वक्त नहीं होता।"

"मेरी जगह यदि आपकी बहिन की इज्ज़त पर हाथ किसी ने डाला होता तो क्या फिर भी आपको यह बात फिज़ूल लगती?"

माधवी ने वकील को करारा जवाब दिया।

"इस घटना को सिद्ध करने के लिए माधवी देवी, आपके पास जो भी कोई सबूत है वह पेश किया जाए।" जज ने पूछा।

"सबूत भी है, जज साहिब, पोस्ट मॉर्टम की रिपोर्ट देखें। उसमें लिखा होगा कि मृतक के हाथ पर एक युवती के काट खाने के निशान हैं। मृतक का मनहूस चेहरा भी मैंने अपने नाखुनों द्वारा नोचने की चेष्टा की थी।"

न्यायमूर्ति महोदय ने रिपोर्ट को ध्यान से पढ़ा। माधवी द्वारा बताई गई बातों का रिपोर्ट में साफ ज़िक्र था।

"माधवी देवी के बयानात ने केस पर नई रोशनी डाली है। इन सारी बातों को मद्दे नज़र रखते हुए अदालत अपना फैसला सुनाएगी। जजमेंट कुछ दिनों के लिए रिज़र्व की जाती है।

इन्सपैक्टर ज्ञान शंकर कौल अपने बॉस डी० ऐस० पी० साहिब के सामने सावधान और गम्भीर मुद्रा में खड़े थे। उन्होंने एक प्रार्थना पत्र पेश किया था। जिसे

पढ़ते हुए डी० ऐस० पी० साहिब हैरत में पड़ते जा रहे थे। आश्चर्यविस्फारित नेत्रों से वह इन्सपैक्टर को निहारते हुए बोले,

"मैं यह क्या पढ़ रहा हूं? मि० कौल।"

"मेरा त्याग पत्र है, सर।"

"यह तो मैं देख रहा हूं, पर क्यों?"

"बात ही कुछ ऐसी हो गई है, सर।"

"मुझे नहीं बताओगे? ऐसी कौन सी बात हो गई है जो इतना सीरियस कदम उठाने पर तुम विवश हो गये हो? तुम्हारी प्रोमोशन भी तो होने वाली है।"

"सर, यह तो आपने अक्सर सुना होगा कि अमुक व्यक्ति ने अपनी बहिन की इज्ज़त की खातिर अपनी जान की बाज़ी तक लगा दी।"

"यह तो अक्सर होता रहता है। कोई भी गै़रतमन्द इन्सान अपने घर की इज़्ज़त की खातिर मर मिटता है।

"पर ऐसा तो आपने कभी नहीं सुना होगा कि कोई अपनी बहिन की लाज के रखवाले को ही मुजरिम बना कर कटहरे में खड़ा कर दे।"

"ऐसा तो कोई व्यक्ति नहीं हो सकता।"

"ऐसा व्यक्ति मैं हूं।" इन्सपैक्टर की गर्दन झुक गई थी।

"कैसे? मैं समझा नहीं यह बात।"

"कहिए ना।" उत्सुकता वश डी० ऐस० पी० साहिब कुर्सी से खड़े हो गए थे।

"अभियुक्त रतन लाल को जिसे मृतक सेठ विनोद कुमार के कत्ल के केस में गिरफ्तार करके मैंने कानून के हवाले किया है वास्तव में उसने मेरी बहिन की लुटती लाज को बचाया था। मृतक बदमाश, एय्याश, लम्पट, दुराचारी और विलासी था। उसने मेरी बहिन को धोखे में फुसला कर उसका धर्म बिगाड़ने की कुचेष्टा की। अचानक अभियुक्त रतन लाल वहां पहुंच गया। मृतक की घिनौनी हरकत को असफल बनाने के लिए रतन लाल अपनी जान पर खेल गया। हाथा पाई होने लगी। मृतक ने अपने रिवॉल्वर से उसे गोली का निशाना बनाना चाहा। पर बाज़ी उलटी पड़ गई। मृतक अपने ही रिवॉल्वर की गोली खा कर ढेर हो गया। वह वहीं ठण्डा हो गया। इस सारी घटना का मुझे बाद में पता चला," इन्सपैक्टर भराई हुई आवाज़ में बोल रहा था। वेदना उसके म्लान मुख पर नुमायां थी।

"ओह! वाकई यह तो बहुत बुरी बात हुई। तुम्हें यह सब कैसे पता चला?"

"मेरी बहिन माधवी बुर्का पहन कर अदालत में आई। बतौर गवाह के वह एकाएक कटहरे में आ खड़ी हुई। सारी कहानी उसने कह सुनाई जिससे केस का पासा ही पलट गया।"

घोर विस्मय से डी० ऐस० पी० साहिब इन्सपैक्टर को देखते रह गए। मन ही मन वह उस युवती की प्रशंसा करने लगे जिसने साहस और दिलेरी करके अदालत

के सामने सच्चाई पेश कर दी। कुछ लम्हों की खामोशी के पश्चात् सांत्वना भरे स्वर में बोले।

"जो कुछ हुआ, हुआ तो बहुत बुरा। इसमें कोई शक नहीं। पर इसमें तुम्हारा तनिक भी तो दोष नहीं। यह सब अनजाने में हो गया और तुम ने अपना कर्त्तव्य निभाने की खातिर किया। इस वक्त तुम भावुकता में बह रहे हो। ज़रा फिर से सोच लो।

"एक बात और है। अभियुक्त रतन लाल को जिस मदद की जरूरत है यह मदद तुम इस पद पर बने रह कर ज़्यादा कर सकते हो। मृतक की मौत महज़ एक दुर्घटना है। उसने अपने कुकर्मों का फल पाया है। रतन लाल का इसमें कोई मैलीशियस मोटिव (Malicious motive) नहीं था। उसे इस जुर्म से मुक्त करवाना हमारा भी कर्त्तव्य बनता है।"

"सर, मेरी बहिन क्या सोचती होगी मेरे बारे में।"

"मुझे विश्वास है कि वह तुम्हारी नीयत और स्थिति को सुगमता से और भली भान्ति समझती होगी। वह कदापि यह नहीं चाहेगी कि तुम त्याग पत्र दे दो। उस बदमाश को भगवान् की अदालत में सज़ा मिल चुकी है। एक निर्दोष की हम ने हर सम्भव सहायता करनी है।"

"इन्सपैक्टर ज्ञान शंकर खामोश थे। वह गहरी सोच में पड़ गए थे।"

"फिर से सोच लो। तुम्हारा त्याग पत्र मैं अपनी जेब में ही रखूंगा।"

तमाम बयानात और हालत पर गौर करते हुए न्यायाधीश महोदय ने अपना फैसला सुना दिया। रतन लाल को तीन महीने की साधारण जेल की सज़ा सुनाई गई। उर्मिला को बाइज्ज़त रिहा कर दिया गया।

रतन से मुलाकात करने के लिए आज माधवी अपने भैया इन्सपैक्टर ज्ञान शंकर के साथ आई थी। इन्सपैक्टर को आये देखकर रतन चकित सा हुआ जा रहा था। माधवी ने जब यह बताया कि इन्सपैक्टर उसके सगे भाई हैं तो रतन को हैरत मिश्रित प्रसन्नता हुई।

"भाई तो वास्तव में वह होता है जो बहिन की रक्षा करे। इस लिहाज़ से माधवी के असल भाई तो तुम हो," ज्ञान शंकर कौल ने स्नेह सिक्त वाणी में रतन से कहा।

फिर उनके बीच आत्मीयता और स्नेह भरी बातें होने लगीं। सहसा वहां उर्मिला आ गई। उसके साथ एक और औरत थी।

उर्मिला और माधवी का साक्षात्कार जब अदालत में हुआ था संदेह तो उन्हें उसी समय हो गया था। पर वहां हालात कुछ ऐसे थे कि अपना संदेह दूर करने का उन्हें मौका नहीं मिल सका था। चाहते हुए भी वह कोई बात न कर सकी। और

आज जब वह दोनों एक दूसरे के सामने हुईं तो चुम्बक की भान्ति एक दूसरे की ओर खिंच कर रह गईं। हर्ष मिश्रित हैरत में पड़ीं वह एक दूसरी को दिलचस्पी से निहारने लगीं।

माधवी फुसफुसाती हुई सी बोली, "मैंने आपको कहीं देखा है।"

"सोच तो मैं भी यही रही हूं।"

"आपके पिता जी रिटायर्ड मिलिटरी इंजीनियर थे न ?"

"आपका अनुमान ठीक है।" उर्मिला ने पुष्टि की और कहा, "संदेह तो मुझे उसी वक्त हो गया था जबकि मैंने तुम्हें अदालत में बयान देते हुए सुना था।" वह 'आप' से तुरन्त 'तुम' पर उतर आई थी।

"अब तो पहचान गई हो न।"

"पूरी तरह। बचपन की सहेली को भला कैसे भुलाया जा सकता है। और वह जो अभिन्न सखी रह चुकी हो।"

"कितने वर्षों के पश्चात् मिल पाई हैं हम।"

"हां, यह कितने अजीब संयोग की बात है।"

फिर क्या था। बचपन की यादें ताज़ा हो गईं। यादों का अम्बार सा लग गया था उनके बीच। आत्मीयता और स्नेह से वह विभोर हो रही थीं।

प्राथमिक शिक्षा उन्होंने एक ही स्कूल में पाई थी। माधवी के डैडी मिलिटरी कैन्टीन के ठेकेदार थे। एक ही क्लास में वह पढ़ती थीं। एक साथ वह खाती पीतीं और खेलती थीं। लड़ती-झगड़ती थीं। लड़ झगड़ कर भी वह एक दूसरे से अलग नहीं रह सकती थीं। पहले से और ज़्यादा प्यार उनमें पैदा हो जाता था।

वह अभी चौथी श्रेणी भी पास नहीं कर पाई थीकि उन्हें एक दूसरे से जुदा होना पड़ गया था। उर्मिला के डैडी की अचानक बदली हो गई थी। माधवी को लगा था जैसे उसके शरीर का कोई महत्त्वपूर्ण अंग अलग हो कर रह गया हो। जुदाई के समय उर्मिला भी बहुत रोई थी। उस समय उन्होंने सोचा तक न था कि ज़िन्दगी के किसी नाज़ुक मोड़ पर वह इस तरह कभी मिल सकेंगी। अतीत की मीठी कड़वी यादों में वह उलझ कर रह गई थीं।

उर्मिला के साथ जो दूसरी औरत आई थी वह हीरा बाई थी। दोनों सखियां जब एक-दूसरे में मग्न हो कर बातों में खोई हुई थीं तो हीरा बाई का सारा ध्यान रतन पर केन्द्रित हो गया था। उस युवक में उसने एक अनोखा आकर्षण पाया था। ऐसा आकर्षण जो उसने जीवन में पहली दफा अनुभव किया था। उसके हृदय में ममता और आंखों में वात्सल्य प्रेम उमड़ रहा था। रतन के चेहरे पर एक विशेष चिन्ह था जिसे वह बार-बार देख रही थी।

मुलाकात का समय समाप्त होने को था। उर्मिला और माधवी रतन से कुछ बातें करने लगीं। रतन के मन में क्षोभ था और दुःख का भारी बोझ था क्योंकि उसके ही कारण उसकी प्रेयसी विधवा हो गई है। उसने तो उसकी सदा मंगल

कामना की थी और चाहा था कि उसकी मीठी यादों और प्यार के सहारे ही वह जीवन गुज़ार लेगा। वह उर्मिला के समक्ष आने से झिझक रहा था। पर उर्मिला की दृष्टि में वह वही था जो वह पहले था। उसके मन में रतन के प्रति लेशमात्र भी रोष नहीं था। उसने उसके साथ कुछ इस तरह का व्यवहार किया और कुछ ऐसी बातें की कि रतन के मन से पाप का बोझ उतर गया। उसके मन की सारी व्यथा-वेदना घुल गई।

हीरा बाई भी रतन से बातें करने के लिए उत्सुक थी। इस समय का अभाव होने के कारण वह ऐसा न कर सकी। मन की बातें मन में ही रह गईं। उर्मिला को आज वह अपने साथ ले गई थी। रतन के सम्बन्ध में उसने उससे अनेक प्रश्न पूछे।

उनकी मुलाकात कहां हुई ? कैसे हुई ? इस तरह रतन के सम्बन्ध में जो भी जानकारी उर्मिला को थी वह उसने हीरा बाई को दे दी। वह उसे कुरेद-कुरेद कर प्रश्न पूछने लगी और रतन में इतनी गहरी दिलचस्पी दिखाने लगी तो उर्मिला को बात अजीब सी लगी। झिझकते हुए से उसने पूछा तो हीराबाई ने बताया कि उसका अन्तर्मन कहता है कि इस युवक के साथ उस का कोई ऐसा सम्बन्ध है जो उसे बरबस ही उसकी ओर खींचे लिए जा रहा है।

"कैसा सम्बन्ध !" उर्मिला ने जिज्ञासा प्रकट की।

"मुझे वह मेरा खोया हुआ बेटा लगता है", हीरा बाई ने भावातिरेक में बहते हुए बताया।

विस्मय एवं जिज्ञासा भरी मुद्रा में वह हीरा बाई के चेहरे को निहारने लगी।

"मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह मेरा बेटा है। वह दो ही वर्ष का था कि क्रूर परिस्थितियों ने उसे मुझ से छीन लिया। अपने लख्ते-ज़िगर से बिछुड़ते समय उसके हृदय में हाहाकार मचा था और वह टुकड़े-टुकड़े हो कर रह गया था।"

"यह सब कैसे हुआ, मां ?"

"यह लम्बी कहानी है, बेटी।"

"अपनी बेटी को भी नहीं बताओगी ?" उर्मिला अपने प्रियतम के शैशव काल और उसकी जननी की करुण गाथा सुनने को उत्सुक हो उठी।

"तुम ही तो एक मात्र मेरी अपनी हो जिसके साथ मैं अपना दु:ख दर्द बांट सकती हूं।"

दु:ख-दर्द और दारिद्रय की प्रगाढ़ छायाओं में घिरी यादें हीरा बाई के मानस पटल पर उभर आईं। वह जानती थी कि उर्मिला को इस कहानी में गहरी और विशेष रुचि है। उसके आग्रह पर हीरा बाई अपने जीवन के कड़वे-कसैले अनुभवों के टुकड़े उसके सामने बिछाने लगी।

कोठे पर आने से पूर्व हीरा बाई का नाम रुकमणी था। वह एक छोटे से पर्वतीय गांव की रहने वाली थी। गांव के उस आंचल में सौन्दर्य था। यह सौन्दर्य

स्थल अमीरों के लिए चाहे आकर्षण का स्थान बना हुआ था पर वहां प्रकृति की कठोर दया पर पलने वालों का जीवन कभी सुखी नहीं था। वहां मनुष्य केवल जीवित थे। वृद्ध जिन्दगी से तंग और बेज़ार थे। युवकों की भूख और उनकी वासनाएं घुट-घुट कर रह जाती थीं। युवतियों के वक्षों के उभार नाज़ करने से पहले ही ढीले पड़ जाते थे। दरिद्रता के दामन में पलने वाले बच्चे गन्दे कुत्तों और पशुओं के साथ खेला करते थे।

बचपन को पछाड़ कर जब रुक्मणी ने यौवन की सीढ़ियों पर पांव रखा तो विधाता ने उसके प्रति बड़ी उदारता से काम लिया। उसे बेपनाह रूपराशि से मालामाल कर दिया। वह शायद उस रुक्मणी से कम सुन्दर नहीं थी जिस पर महाभारत के वीर अर्जुन पहली ही नज़र से देखते हुए फिदा हो गए थे। उसके अंग-अंग पर निखार छा गया था और उसके गालों पर यौवन ऊधम मचाने लगा था। खुमार भरी उसकी सीपी सी आंखों में गज़ब की कशिश थी। मोतियों के से दांतों की आभा बिजली की चमक लिए हुए थी। देखने वालों की नज़र उसके चेहरे पर फिसल कर रह जाती थी। दिल बेकाबू हो कर पहलू में धड़कने लग जाता था।

आकाश में घनघोर घटाएं छाई हुई थीं। छोटी-छोटी बूंदें गिर रही थीं। सन्ध्या का समय था। पर काली घटाओं के कारण रात हुई प्रतीत हो रही थी।

"रुक्मणी, ओ रुक्मणी...!"

"क्या है मां ?"

"घर में तो आटे की एक मुट्ठी भी नहीं है। चूल्हा जला कर क्या करुंगी ?"

"तो क्या किया जाए, मां ?"

"आटे का प्रबन्ध तो करना ही पड़ेगा। पेट में दो रोटियां भी न गईं तो रात को वहां चूहे कूदेंगे। नींद नहीं आएगी।"

"आटे का कहां से प्रबन्ध किया जाए ?"

"मैं क्या बताऊं ? जिसने प्रबन्ध करना है वह तो हमारे लिए हुआ न हुआ एक बराबर है। तेरे बापू को तो किसी बात की परवाह ही नहीं। जाने कहां-कहां धक्के खाता फिरता रहता है। हम मरें या जीएं अपनी बला से। जब से इस घर में आई हूं एक दिन भी सुख का नहीं देखा। पेट भर कर खाने को भी नहीं मिला", रुक्मणी की मां अपने पति को कोसने लगी थी। खामोश बैठी रुक्मणी यह सब सुन रही थी। वह जानती थी कि मां और बापू में बनती नहीं। उनके बीच तनाव और खींचातानी के कारण घर में कलह रहता था।

रुक्मणी की मां का चाल-चलन ठीक नहीं था। उसकी घिनौनी हरकतों से तंग आ कर ही उसका बापू आम तौर पर घर से बाहर रहने का यत्न करता था। वह गम्भीर और सन्न सी हुई बैठी थी।

"इस तरह बैठने से तो काम नहीं चलेगा।"

"तो क्या किया जाए, मां ?"

"ज़रा उठ, किसी बनिए की दुकान पर जा ।"

"इस मौसम में ! मुझे तो डर लगता है ।"

"तू अब बच्ची तो है नहीं । इतनी बड़ी होकर भी डरती है ?"

"कुछ भय और खौफ ऐसे होते हैं जो बचपन में नहीं, इस उमर में ही पैदा होते हैं ।" रुक्मणी यह कहना चाहती थी । पर उसने चुप रहना ही श्रेयस्कर समझा ।

"तुझे मैं खेतों में तो नहीं भेज रही । पास ही किसी दुकान पर ही तो जाना है ।"

"किसकी दुकान पर जाऊं ?" मां से डरती हुई और विवशता की हालत में उठती हुई वह बोली ।

"चन्दू बनिए की दुकान बड़ी देर तक खुली रहती है ।"

"उसके पास मैं नहीं जाऊंगी ।"

"क्यों ?"

"पहले ही उसके इतने रुपए देने हैं वह और उधार नहीं देगा ।"

"जैसे भी हो मिन्नत-खुशामद कर लेना ।"

"   "

रुक्मणी कुछ न बोल सकी । वह वहां जाने से झिझक रही थी ।

"जा मेरी बेटी ! तू नहीं जाएगी तो और किस को भेजूं !" रुक्मणी की मां ने उसे स्नेहपूर्ण स्वर में कहा । पर जैसे वह उसे धकेल रही थी । बेटी को वह गली के मोड़ तक छोड़ने आई । तीव्र गति से गलियों के मोड़ मुड़ती हुई वह गन्तव्य स्थल पर पहुंच गई । सहमी हुई और सकुचाती सी वह दुकान के बाहर ही खड़ी हो गई ।

सर्दी के कारण चन्दू बनिया उकड़ूं हुआ बैठा था । अपने घुटनों को वह छाती से लगाए हुए था । लालटेन का पीला मरियल सा प्रकाश दुकान के थोड़े से हिस्से में फैला हुआ था । कोनों में अंधेरा पालथी मारे बैठा था । बनिया मैली और छोटी सी गद्दी पर बैठा ऊंघ रहा था । ऐसे मौके पर फंसे हुए ग्राहक की तो वह एक तरह से चमड़ी उधेड़ लेता था । उधार वाले ग्राहक के नाम तो वह अपनी बही में दोगुने दाम लिख लेता था ।

किसी की पदचाप सुन कर वह चौंक उठा । बाहर खड़ी नारी मूर्ति को देख कर उसके तन बदन में स्फूर्ति आ गई ।

"कौन है ?" चन्दू शाह बोला । अन्धेरे में वह आगन्तुका को पहचान न सका था ।

"मैं हूं चाचा !" झिझकती और सकुचाती हुई सी रुक्मणी बोली थी ।

बनिए के शरीर में रक्त संचार तेज़ हो गया था।

"मैं कौन ?" उसने आंखें उघाड़ते हुए अन्धकार में आगन्तुका को पहचानने का यत्न करते हुए पूछा।

"रुक्मणी !"

"अच्छा...!" चन्दू की धमनियों में करैंट दौड़ गया। स्नेह सने स्वर में वह बोला, "बेगानों की तरह बाहर क्यों रुक गई, सर्दी लग जाएगी।"

रुक्मणी ने झिझक समेटी। वह कुछ अन्दर चली आई।

"इस वक्त !"

"कुछ आटा चाहिए था", उसने नीची नज़र से कहा। भीग जाने के कारण घिसे हुए वस्त्र उसके शरीर से चिपक गए थे। यौवन भार से गदराई देह के उभार झांकने लगे थे। धूमिल प्रकाश में भी वह उभार स्पष्ट दिख रहे थे। चन्दू बनिया था तो प्रौढ़ावस्था में। पर रूप का वह रसिया था। इस नायाब हुस्न को देख कर उसकी लार टपकने लगी। जाने इस बनिए में ऐसी कौन सी बात थी कि गांव की कई औरतों की उसके साथ बात थी। शक्ल-सूरत तो उस की भद्दी थी। रंग का काला और आंख का काना था वह। शायद वह उसके पैसे पर मरती थीं। उधार की शक्ल में यह बनिया उन्हें खिलाता-पिलाता था। जो औरत एक दफा उस के साथ फंस जाती थी, वह उस के चंगुल से छूट नहीं पाती थी। बनिए की ऊंगली पर उन्हें नाचना होता था। रुक्मणी की मां भी ऐसी औरतों में से एक थी।

लोलुप दृष्टि से वह उसके शरीर के भूगोल को पढ़ने लगा। उसके यौवन के उभारों को कुरेदने लगा। उसके प्यासे नेत्र रुक्मणी के अंगों को चूमने लगे थे।

सामने खड़ी वह युवती अपने आंचल से सिर और सीने को ढांपने का असफल यत्न कर रही थी।

"मां ने मुझे आटे के लिए भेजा है", रुक्मणी ने दबी सी आवाज़ में फिर कहा—

"आटा···आटा तो है पर···!"

"मैं पैसे कल दे जाऊंगी।"

"कल कहां से आ जाएंगे ?"

"बापू शहर से लेने गया है।"

"शहर में पैसे पौधों पर तो उगते नहीं। तेरा बापू दिहाड़ी करके चार पैसे कमा लेगा तो वह ताड़ी पर उड़ा देगा। शराबी का कोई भरोसा नहीं।"

लज्जा और ग्लानि से उसकी गर्दन झुकी हुई थी। पांव के अंगूठे से वह धरती कुरेदने लगी।

चन्दू बनिया उसके पास चला आया था।

"आटा बिल्कुल खत्म है क्या ?"

"हां चूल्हा ठण्डा पड़ा है।"

"ओह ! मेरे होते हुए यह कैसे हो सकता है ? अड़े-थुड़े मौके पर भी काम न आऊं तो धिक्कार है मुझ पर। तू जितना चाहे ले जा।"

बनिए में आए इस अप्रत्याशित परिवर्तन को देख कर रुक्मणी दंग रह गई। वह कुछ डर भी गई। क्योंकि वह जानती थी कि जब भी यह बनिया मीठा बोलता है तो उसके मन में कोई खोट होता है। उसने ज़रूर कोई ठगी सोची होगी। उसने नज़रें उठाईं तो देखा कि वह बनिया उसे ललचाई नज़रों से देख रहा है। वह सिहर सी उठी। "देख, तेरे दारू पीते बाप पर तो मुझे एक पैसे का भी भरोसा नहीं। तेरी मां के बारे में चुप ही रहना ठीक है। हां, तेरी लिहाज़ शर्म मुझे है। जिस चीज़ की ज़रूरत हो ले जा। बोल कितना आटा चाहिए ?" बनिया उसके कपड़े में आटा डालने लगा।

"तोल तो लो, चाचा।"

"घर की बात है। तेरे साथ क्या तोल-मोल करना।'

गुड़ का एक बड़ा सा डला भी उसने आटे में रख दिया।

"सिर्फ आटा ही चाहिए था।"

"यह भी ले जा। मीठी रोटियां बना लेना। भीगे मौसम में बहुत स्वाद लगती हैं।"

रुक्मणी चुप खड़ी थी। बारिश ज़रा तेज़ हो गई थी।

"इधर बैठ जा। मेंह तेज़ हो गया है। जरा थम लेने दे। फिर जाना।"

रुक्मणी किसी सोच में पड़ी हुई थी।

"क्या सोच रही है ? पैसों की चिन्ता न कर। जब हों दे देना। न हों तो न सही।" बनिया उसके पास आकर उस पर झुक सा गया। उसकी तेज़ सांस रुक्मणी को अपने चेहरे पर चुभती सी महसूस हुई। बनिए के मुंह पर वासना की घिनौनी हिलोर थी। शरीर जैसे ताप से फुंक रहा था। वह उसे निरन्तर पलक डाले बिना देख रहा था। बाहर आ कर उसने इधर-उधर गली में नज़र दौड़ाई। गली निर्जन थी। कोई आ जा नहीं रहा था। वर्षा की बूंदों का स्वर वातावरण की निस्तब्धता को और भी गम्भीर बना रहा था।

रुक्मणी, बनिए के नापाक और बदनाम इरादे को भांप गई थी। वह वहां से सरकने लगी तो बनिया उसका रास्ता रोक कर खड़ा हो गया।

"मुझे जाने दो, चाचा।"

'चाचा' शब्द का सम्बोधन उस वक्त उसके दिल को तीखा चुभ गया। उसने उसकी कलाई पकड़ ली।

"यह क्या कर रहे हो", रुक्मणी ने बनिए के बाजू को झटका देते हुए कहा, "मां मेरे इन्तज़ार में बैठी है। वह लड़ेगी कि इतनी देर क्यों लगा दी।"

"अपनी मां की चिन्ता न कर। वह तुझे कुछ नहीं कहेगी। बल्कि तुझ पर खुश होगी।"

"खुश होगी ! क्या कह रहे हो ?"

"ठीक कह रहा हूं। मुझ पर यकीन तो कर। वह मेरी नाराज़गी मोल नहीं ले सकती।" बनिए की पकड़ और मजबूत हो गई। वह उसे अन्दर ले जाने लगा।

"मैं तो तेरी बेटियों जैसी हूं।"

"ऐसा मत कह इस वक्त। मैं तुझे खुश कर दूंगा। पैसों से तेरी झोली भर दूंगा। मुझे निराश न कर", वह गिड़गिड़ाया-सा। रुक्मणी जब राज़ी न हुई तो वह उसे ज़बरदस्ती अन्दर ले जाने लगा। जाल में फंसी कबूतरी की तरह वह फड़फड़ाने लगी। कोई और रास्ता न देख कर उसने बनिए के हाथ को इतना ज़ोर से काटा कि उसकी 'हाय' निकल गई। उसका सारा जोश काफूर हो गया। रुक्मणी ने उसे धक्का दिया कि वह धक्के की ताव न ला सका और लुढ़क गया। उसने सिद्ध कर दिया कि नारी में एक तेज़ होता है। वह आत्मरक्षा करने में समर्थ है। वास्तव में चन्दू बनिए को भी यह उम्मीद न थी। आज तक जितनी भी नारियां उसके सम्पर्क में आई थीं वह उस फूल की तरह थीं जो रुपयों की खनक सुन कर झूम उठी थीं और धन की किरण पा कर खिल उठती थीं। रुक्मणी इन सबसे भिन्न सिद्ध हुई थी।

बनिए का ख्याल था कि आदमी का सुख धन में है और औरत का सुख धनी पुरुष में।

रुक्मणी को जाती देखकर बनिया चीख उठा, "रख दे। सारे का सारा रख दे। तेरे बाप का माल है जो गठड़ी बांध कर चलती बनी।" बनिए को एक तरह से सुकून मिला कि उसका माल मुफ्त में जाने से बच गया है।

वह वहां से खाली हाथ चल दी।

"आ गई बेटी, उसकी मां द्वार खोलते हुए फुसफुसाई सी। पर जब उसने बेटी को खाली हाथ देखा तो उस के चेहरे से आशा की किरण लुप्त हो गई। गम्भीर और निराशा की मुद्रा में रुक्मणी को निहारते हुए वह पूछने जगी, "यह क्या ! आटा नहीं लाई ?" रुक्मणी क्षुब्ध सी हो खामोश खड़ी थी। म्लान मुख, बिखरे बाल और अस्त-व्यस्त सी दशा सारी बात कह रही थी जो कुछ उसके साथ बीती थी।

"बनिए से झगड़ा करके आई है ?"

"मैं झगड़ा करने तो नहीं गई थी।"

"तो क्या हुआ ?"

"ऊं...।"

"बता ? बोलती क्यों नहीं ? मुंह में दही जम गई है या तुझे सांप ही सूंघ गया है।"

"बनिए ने मुझ से दुर्व्यवहार किया।"

"कैसे ?"

"उसने मुझे बुरी नज़र से देखा। मुझ पर हाथ डालना चाहा।"

"मैं ने उसे—।"

"क्या किया तू ने ?"

"उसे धक्का दिया। अपनी इज्ज़त बचा कर भाग आई।"

रुकमणी ने सोचा था कि मां उसकी प्रशंसा करेगी। पर जब उसने उसकी मुखमुद्रा को देखा तो वह हताष सी हो कर रह गई।

"कुछ तो समझ से काम लिया होता। उससे झगड़ा करके तुझे क्या मिला। नासपिटी मर भूखी। तुझे अपना कलेजा खिलाऊं या सिर। बड़ी आई है इज्ज़त वाली। राजे घर की है ना। अरी, तेरा बाप तो दो पैसे का भी नहीं। जगह-जगह जूतियां खाता फिरता है। तू राजकुमारी बनी फिरती है। अपने आप को बहुत कुछ समझती है। बनिया तेरी कौन-सी नत्थ उतारने लगा था। दो बातें कर लेती तो तेरा क्या घिसता था। उसके हम पर कितने अहसान हैं। मतलब निकालने के लिए लोग गधे को भी बाप बना लेते हैं। आग लगे तेरी इस देह को। सरू के वृक्ष की तरह दिनों-दिन बढ़ती जाती है। चन्दरी को रोज़ सेर पक्का अन्न चाहिए। कहां से खिलाऊं तुझे ? सारे गांव को तो तेरे मुश्टण्डे बापू ने दुश्मन बना रखा है। बस यही एक बनिया था जो कुछ थोड़ी बहुत हमदर्दी रखता था। अड़े-थुड़े वक्त पर सहायता करता था। अब उसके मुंह भी लगने से रहे। उसके हम पर बहुत अहसान हैं। वह चाहे तो आज इस घर की कुर्की करवा ले। हमें बेदखल करके सड़क पर फेंक दे। खेत और ढोर-डंगर सब निलाम करवा दे।"

विमाता के कटु वचन और व्यंग्य वाण उसके हृदय को छलनी कर रहे थे। रुक्मणी उसके आशय को समझ गई थी। वह भांप गई थी कि उसकी विमाता और बनिये द्वारा साज़िश रची गई थी। उसे जान बूझ कर इस समय बनिये के पास भेजा गया था। 'आटा' तो एक बहाना था। उसे तो पहले ही संदेह था कि उसकी विमाता और बनिये के बीच अनुचित सम्बन्ध हैं। उसे भी इस कार्य में वह लिप्त करना चाहती थी। मां के इस व्यवहार पर वह सकपका कर रह गई। अपमान से आहत हो वह कोठड़ी में गई।

औंधे मुंह वह अपनी चारपाई में जा गिरी। उस रात उसे कुछ भी खाने को न दिया गया। रात भर वह दुखातिरेक में बहती रही। अगले दिन रुक्मणी की मां पहले चन्दू बनिये के पास गई फिर वह अपनी बेटी से आग्रह करने लगी कि अगर वह बनिये के पास एक दफा सिर्फ जा ही आए तो सारी बात वहीं खत्म हो जाएगी। पर रुक्मणी ने साफ कह दिया कि वह उस बदमाश की परछाईं तक अपनी देह पर पड़ने नहीं देगी। चाहे कुछ भी हो जाए। उसका उससे कोई सरोकार नहीं।

रुक्मणी की विमाता 'भोली' नाम की ही भोली थी। उसने तमाम दुनियां

देखी हुई थी। घाट-घाट का उसने पानी पिया था। रुक्मणी की ज़िद्द का उसने बुरा नहीं मनाया बल्कि वह उससे स्नेह सिक्त व्यवहार करने लगी। भोली ने अपने मन में एक नया षड्यन्त्र रच लिया था। रुक्मणी की यौवन मद से मस्त देह द्वारा वह अपने हाथ रंगने के रंगीन स्वप्न देख रही थी। उसे वह ऐसी मुर्गी समझती थी जो उसके लिए सोने के अण्डे देगी। पर जब रुक्मणी ने उसके इशारे पर चलने से इन्कार कर दिया तो उसने उसके साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार करना शुरू कर दिया। उसका जीवन नर्क तुल्य होकर रह गया।

निराशांधकार में सुधीर उसे आशा की किरण के रूप में दिखाई दिया। सुधीर उसके बचपन का सखा था। एक साथ वह भेड़ बकरियां चराने जाया करते थे। पर्वतों की ढलान पर और ऊंचे पेड़ों की लम्बी परछाइयों में वह अपने पशु चराते घूमा करते थे। और भी उनके साथी थे पर जो बात उनके बीच थी, जिस स्नेह और प्रेम के बन्धन में वह बंधे थे वह दूसरों से निराला था। यौवन के आगमन पर सुधीर उसके मन का मीत बन बैठा। लज्जा और शर्म के कारण वह खुले आम मिलने से अब संकोच करने लगे थे। समाज ने भी उनके मिलन पर बन्दिशें लगा दी थीं।

फिर भी चोरी छिपे उनकी प्यार भरी मुलाकातें अकसर होती रहती थीं। कितने आनन्ददायक होते थे वे संकोच जनक क्षण, जब कई दिनों की प्रतीक्षा और तड़प के पश्चात वह एक दूसरे को अपने सामने पाते। इतने करीब कि दोनों की सुगन्धमय सांसे एक दूसरे में समा कर एक हो जाती थीं। सुधीर को एक शहर में किसी कारखाने में छोटी सी नौकरी मिल गई थी। वेतन थोड़ा था। फिर भी गांव वालों की नज़र में वह बड़ा आदमी बन कर जा रहा था। जाने से पहले बड़ी कठिनता से अपनी प्रियतमा से मिलने के लिए वह आया था। कितने मधुर थे वह मिलन के क्षण ?

"मैं कल जा रहा हूं रुक्मणी। यह रहा मेरा पता। पत्र लिखोगी ?

रुकमणी ने नाकारत्मक ढंग में सिर हिला दिया था।

"क्यों ?"

"पहले तुम लिखना।"

"ज़रूर लिखूंगा। जवाब तो दोगी ना ?"

"क्यों नहीं।" उदास चेहरे पर फीकी चंचल मुस्कान की क्षीण रेखा खींचते हुए कहा था उसने।

कितनी गमगीन थी वह जुदाई, कितने दर्द भरे थे वह क्षण। सुधीर उसके उदास चेहरे को देखने लगा। अधिक देर न देख पाने की मजबूरी में आंखें झुक जातीं। बाहर न निकल पाने की वजह से 'आह' रुक्मणी के कलेजे में तेजी से धंस रही थीं। जाते समय सुधीर ने उससे कई वायदे किये थे।

कुछ वायदे, कुछ यादें और प्यार भरी कुछ बातें ही रुक्मणी के लिए इस दुखी जीवन का सहारा बनी हुई थीं। वहां के जीवन, विशेष कर विमाता के व्यवहार से वह अत्याधिक तंग आ गई थी। वहां संकीर्णता थी। रूढ़ीवादी विचारों वाले लोगों के बीच घिर जाने से वातावरण दम घोट देने वाला बना हुआ था। वहां ईर्ष्या थी, द्वेष था। छोटी-छोटी बातों पर परस्पर नित्य प्रति झगड़े होते रहते थे। वह इस महौल से छुटकारा पाना चाहती थी।

सुधीर उसके लिए आशा की एकमात्र किरण थी। उसे विश्वास था कि वह उसे इस महौल से निकाल लेगा।

घर में उसका जीना दुश्वार था। उसके कानों में इस खबर की भनक पड़ चुकी थी कि उसका सौदा हो चुका है। किसी वक्त भी षड्यन्त्र द्वारा उसका अपहरण करवा दिया जाएगा।

असहायक सी वह तड़प उठी। एक पत्र उसने सुधीर के नाम लिखा।

प्रियतम,

कुछ दिनों से तुम्हें पत्र लिखने की सोच रही थी। मां के भय के कारण ऐसा कर पाना सम्भव नहीं था। आधी रात की इस बेला में यह कुछ शब्द लिखने बैठी हूं।

अकेली होती हूं तो ख्यालों में परछाईं सी बन कर आ जाते हो। आंखें बन्द करके लेटती हूं तो पलकों में तुम्हारी छवि समा जाती है। बचपन की वह यादें ताज़ा हो जाती हैं। वह नीला आकाश चितकवरी बदलियां, काली घटाएं, अनेक प्रकार के फूल, देवताओं की स्तुति में मन्दिर में मूर्तियों के समक्ष गाए जाने वाले गीत तुम जब थे तो यह सब कुछ लुभावना लगता था। अब तो यह जिन्दगी एक अन्धेरी रात के समान है। बिल्कुल ऐसी ही जैसी कि आज की यह रात। इन दिनों ऐसे भयानक बीहड़ में फंस गई हूं जिसमें अन्धेरे खड्डे हैं। गहरी और भयावह घाटियां हैं। तुम्हारा सहारा न मिला तो तबाह हो कर रह जाऊंगी या विवशता की हालत में जीवन लीला समाप्त कर बैठूंगी।

तुम्हारी प्रतीक्षा में
रुक्मणी

बाहिर घना और गहरा अंधकार था। गांव की दुनियां नींद की आगोश में समाई हुई थी। सर्द सन्नाटा सायं-सायं कर रहा था। सर्वत्र नीरवता का राज्य था। आंगन के वृक्ष भूत-प्रेत से लग रहे थे। पहाड़ियां दम साधे लेटी हुई थीं।

पत्रोत्तर में सुधीर ने उसे लिखा था कि वह तुरन्त गांव छोड़ कर उसके पास चली आए। उसका दिल उसके लिए ही सदा धड़कता रहता है। वह उसकी राह में अपनी पलकें बिछाए हुए है। सुधीर ने सारा प्रोग्राम लिख दिया था। जिससे वह, आसानी से उसके पास पहुंच सकती थी। सुधीर जान बूझ कर स्वयं गांव नहीं आना

चाहता था ताकि रुक्मणी के गांव से पलायन का भेद न खुल जाए । लोगें को संदेह न हो जाए ।

रुक्मणी को पत्र अत्यन्त प्यारा लगा । उसने इसे बार-बार पढ़ा । उसके दिल की धड़कन बेकाबू हुए जा रही थी । उसके अंग-अंग में रोमांच समाया हुआ था। उसने चाहा कि उसके पंख लग जाएं और वह उड़ कर सुधीर के आगोश में चली जाए। उसे पूर्ण विश्वास था कि उसका प्रियतम यन्त्र कक्ष की तरह उसकी रक्षा करेगा । शादी करके वह अपना एक छोटा सा घर बसा लेंगे । उसके सम्बन्धों का मूल क्या होगा । परस्पर का स्वार्थ नहीं, बल्कि प्यार ।

रुक्मणी सुधीर को जीवन में सुखी देखना चाहती थी। वह उसे भरपूर प्यार करेगी ।

इन दिनों परिस्थितियों ने भी कुछ हद तक करवट बदली थी । उसकी विमाता ने पड़ौस के गांव में अपना एक नया यार बना लिया था । उसकी हवस और पैसे की ललक अब पूरी होने लगी थी । वह उसके साथ रंगरलियों में रंगी हुई थी । रुक्मणी से व्यवहार नर्म पड़ गया था । कड़ी नज़र भी ढीली पड़ गई थी ।

उसने अपने आने के प्रोग्राम के बारे में सुधीर को सूचित कर दिया था । गांव से पलायन करने का समय ज्यों-ज्यों निकट आ रहा था एक एक पल उसके लिए भारी हुआ जा रहा था । वह मनौतियां मानने लगी थी । अपने इष्ट देवों की उपासना में लगी रहती थी ताकि उसकी मनोकामना पूरी हो सके । भगवान से प्रार्थना करने एक दिन वह मन्दिर गई । उसके मन में अनोखी सी तन्मयता भरी हुई थी । पुनीत कामनाओं से उसका मन पुलकित हो रहा था । मन्दिर में उसे लग रहा था जैसे भगवान के इस घर के हर कोने से शान्तपूर्ण सुन्दरता की आभा फूट रही हो । सुन्दर भाल पर हलदी की चमक के बीच उज्जवल कुंकुम टीके ने उसके चेहरे की सौम्य शोभा को और भी सुरम्य बना दिया था ।

उसके कर कमल का स्पर्श पाते ही मन्दिर का भारी घण्टा गम्भीर आवाज करते हुए बज उठा । भगवान की मूर्ति के समक्ष सिर झुकाए कर वह अभिवादन की मुद्रा में खड़ी हो गई । अपार सौंदर्य की स्वामिनी वह उस मुद्रा में देव कन्या सी लग रही थी। उसका चेहरा झील में खिले कमल की तरह प्रदीप्त था । उसकी सपलक आंखें भगवान में लीन थीं । पूजा कक्ष का वातावरण पावन और पवित्र था । उसके शान्त सौम्य चेहरे का प्रभाव सारे वातावरण पर छाया हुआ था । धूपदानों से उठ रही धुएं की लम्बी लकीरें कक्ष के वायुमण्डल में हिल मिल रही थीं । रुक्मणी मौन, शान्त और बन्द आंखों से ईश्वर की अराधना में लीन थी ।

कुछ देर बाद घण्टे की भारी गम्भीर आवाज़ मौन हो गई । अपने हाथों में दीप पात्र ले कर वह भगवान् की आरती उतारने लगी । उसके पवित्र चरणों में फूल और प्रसाद चढ़ा कर वह दो कदम पीछे हटी ।

धृत दीपों के आलोक में कक्ष शान्त था। वायु भी चलती तो आवाज़ होती। ऐसी नीरवता और पावनता वहां उस समय छाई हुई थी। इतने शान्त और पुरसुकून वातावरण में भी रुक्मणी का मन इतना शान्त नहीं था। उसके अस्थिर मन की व्याकुलता उसके चेहरे पर अपनी झलक दिखा रही थी। भगवान की अविचल, शान्त, प्रसन्न और प्रस्तर मूर्ति को कुछ क्षणों तक यूं ही बिना हिले-डुले वह निहारती रही, मानो उस मूर्ति के सम्मुख मूक भाषा में उसने अपने दिल की सारी बात कह देने का निश्चय किया हुआ हो। आशीर्वाद पाने के लिए वह पुनः आराधना की मुद्रा में झुकी। मूर्ति उसी तरह मुस्कराती रही। न हिली-डुली और न बोली।

मन्दिर के भक्तों की नज़र से बचती हुई वह वहां से निकली और आंचल के छोर से सिर ढांपते हुए घर को चल दी। और एक दिन, घर और गांव वालों की नज़रों से बच कर वह वहां से निकल गई। गांव छोड़ते समय उसकी आंखें छलक उठीं। अपना गांव, अपनी गली और पास पड़ोस की हमजोलियां, आंगन के पेड़ और पशु उस वक्त उसका किशोर मन में वियोग की पीड़ा से व्याकुल हुआ जा रहा था।

उमड़ते हुए आंसुओं को अन्दर ही अन्दर पीते हुए वह आगे बढ़ने लगी। कुछ फासला पैदल तय करके उसने पास वाले बड़े गांव से बस पकड़ी। बस उसे काफी दूर ले गई तो आगे जा कर उसने गाड़ी पकड़ ली।

गांव से वह इतनी दूर निकल आई थी कि कोई परिचित आंख अब उसे देख नहीं पा रही थी। जैसे ही वह दूर जा रही थी घर से भाग निकलने के भय का बोझ हल्का होता जा रहा था। प्रियतम से मिलने की चाह और उमंग ने उस भय के स्थान ले लिया था। जैसे ही वह मंज़िल की ओर बढ़ रही थी और उसकी मंज़िल निकट होती जा रही थी एक शंका की परछाईं उसके हृदय पर पड़ने लगी और उसे चिन्ता में डालने लगी कि यदि सुधीर किसी कारण उसे स्टेशन पर लेने न आ सका तो इतने बड़े और अनजाने शहर में वह उसे कैसे ढूंढ पाएगी ? शहरों में तो हर प्रकार की ठगियां, धोखे और अपहरण के केस होते रहते हैं। जिस भोली-भाली ग्रामीण किशोरी ने कभी शहर का मुंह तक न देखा हो जिसे यह न पता हो कि गांव की दुनिया के इलावा और भी दुनिया है उसके मन में ऐसे भय का उत्पन्न हो जाना गैर कुदरती बात नहीं थी। गाड़ी में कोई मनचला उसे घूर कर देखता तो वह सिहर सी उठती थी।

रुक्मणी का यह भय कोरा काल्पनिक निकला। वह स्टेशन आखिर आ ही गया जहां उसने उतरना था। तीव्र गति से वह स्टेशन से बाहर आई। सामने खड़े अपने प्रियतम को देखकर मारे खुशी के उसका हृदय ज़ोर से धड़कने लगा। वह उसकी ओर लपक कर गई जैसे प्यासे को जल प्रपात दिख गया हो। सुधीर ने उसने अपने आलिंगन में बांध लेना चाहा। रुक्मणी ने भी चाहा कि वह चिरकाल से बिछुड़े हुए प्रेमी की बाहों में समा जाए। पर संकोचवश वह ऐसा न कर सके। एक दूसरे को पा कर वह प्यार के सागर में उतरने डूबते लगे।

"यात्रा में कठिनाइयां तो नहीं आईं ?"

"कई आईं पर मेरा मार्ग न रोक सकीं।"

"क्यों ?"

"प्यार में शक्ति ही कुछ ऐसी होती है।"

विभोर सा होते हुए सुधीर ने रुक्मणी का हाथ चूम लिया था। रिक्शा भीड़ भरे बाज़ार में से गुज़र रही थी। इस नई और निराली दुनियां को देखने का यह उसका पहला मौका था। नगर के विहंगम दृश्यों को देखकर वह चकित सी हुई जा रही थी। चारों ओर मनुष्यों के दल, बसों, कारों, ट्रकों और दुकानों पर ग्राहकों की भीड़। आकर्षक परिधान पहने युवतियां, गर्वीली चाल से चलने वाली गोरियां, अनोखी अदाएं दिखाने वाली चढ़ती उमर की लड़कियां चारों ओर मनुष्यों के झुण्ड उड़ते फिर रहे थे। इतनी भीड़ होते हुए भी मनुष्य एक दम अकेला है। इस भीड़ में अगर वह मर जाए तो कोई पास नहीं आता। लाश को लावारिस घोषित करके किसी पुलिस थाने में फेंक दिया जाता है।

लम्बा फासला तय करने के पश्चात् वह कोठी के एक कोने में बने क्वार्टर में पहुंच गए। यही उनका घर था। क्वार्टर छोटा और पुराना था। पर इतने बड़े शहर में यही जगह गनीमत थी। अपने प्रियतम के सान्निध्य में रुक्मणी को गहरे आनन्द की अनुभूति होने लगी।

कुछ देर आराम और बातें करने के पश्चात् सुधीर ने खाना तैयार करना चाहा। चाकू उठा कर वह सब्ज़ी काटने लगा ही था कि रुक्मणी ने चाकू उसके हाथ से पकड़ लिया, "मुझे दीजिए। यह काम तो मेरा है।"

"अभी नहीं है।"

"क्यों ?"

"अभी तो तुम मेहमान हो मेरी।"

"मेहमान से मालकिन बनने में अब ज्यादा समय नहीं लगेगा।" रुकमणी ने उसे तिरछी निगाहों से देखा।

"तुम तो पहले ही हमारे दिलो दिमाग की मालकिन हो।"

सुधीर ने अपने प्यासे होंठ उसके मधुर होंठों की ओर ले जाते हुए कहा।

"हटो। हटो। ऐसी शरारत अभी नहीं चलेगी। सब्र और संयम से रहना होगा।"

सुधीर ने एक तरह से अपनी ग़लती का अहसास किया। रुक्मणी सब्ज़ी काटने लग गई। उसने छोटे-छोटे टुकड़े काटने शुरू कर दिए। थोड़ी ही देर में भोजन तैयार हो गया। सुधीर को जितना मज़ा इस खाने में आया पहले उसे कभी नहीं आया था। आज उसने जाना कि श्रद्धा और स्नेह से तैयार किए हुए भोजन में कितना आनन्द आता है। उसे लगा जैसे भोजन तैयार करने वाली उसकी प्रणयी ही नहीं परिणीता भी है।

कुछ ही दिनों में उन दोनों ने आर्य समाज मन्दिर में जा कर शादी कर ली। यह रस्म अत्यन्त सादगी से सम्पन्न हुई। उसने दुल्हन की मांग में सिन्दूर भरा। वह उसे बचपन से ही देखता चला आया था। पर आज जिस भावना में, जिस मुद्रा में और जितने करीब से वह उसे देख रहा था वह पहली बार था। सुधीर उसकी मांग में से फव्वारे की भान्ति निकल रहे कोमल और लम्बे काले केशों को देख रहा था। उसकी धनुषाकार भवरों के नीचे सीप के से पपोटे, आगे को मुड़ी हुई बरौनियां, पीलाहट लिए हुए गेहुंएं गालों के उभारों पर पड़ती हुई पलकों की छाया और उभारों के नीचे तराशे हुए पतले होंठ सौंदर्य की उस छुई-मुई सी गठड़ी को सुधीर प्यार और हसरत भरी निगाहों से देखता रह गया।

आज उनकी सुहाग रात थी। कोठड़ी की खिड़की में से आ रही धवल चन्द्रिका को निहारती हुई रुक्मणी चारपाई पर बैठी थी। उमंग के साथ सुधीर दुल्हन की ओर बढ़ा तो वह सिमट कर चारपाई के एक किनारे पर हो गई। वह चेहरे एक दूसरे के लिए नये नहीं थे। लाज के अनोखे अवगुण्ठन में वह चेहरा उसे मेघावृत चांद सा लग रहा था। हसरत भरी निगाहों से उस चांद से सुन्दर चेहरे को निहारता रह गया।

"आज तो मैं दो चांद देख रहा हूं। एक आकाश का और दूसरा इस धरती का," सुधीर ने उस चेहरे को अपनी उंगलियों से ऊपर उभारते हुए कहा।

रुक्मणी का हृदय धक-धक कर रहा था। लज्जा की आभा उसके चेहरे को गुलाबी बना रही थी।

"मैं इस खिड़की को बन्द भी कर दूं तो भी कोई अन्दर नहीं आएगा। क्योंकि इस कोठड़ी के अन्दर चांद से इस चेहरे का नूर बाहर की चन्द्र ज्योत्सना से कहीं ज्यादा होगा," दुलहन को उसने अपनी आगोश में ले लिया था।

पति द्वारा इतनी प्रशंसा पा कर वह हर्षातिरेक में बहने लगी। सुधीर अपने ही ख्यालों में खो सा गया था। रुक्मणी को यह मौन खलने लगा।

"किस सोच में पड़ गए ?"

"सोचता हूं पूर्व जन्म में ज़रूर कोई पुण्य कार्य किया होगा। जिसके फलस्वरूप तुम मुझे मिल गई।"

"मुझ में ऐसा क्या है भला।"

"प्रिय, पुण्य की मादकता एवं माधुर्य, पुष्प स्वयं नहीं भंवरा ही जान सकता है।"

मतवाला सा होते हुए सुधीर ने उसे अपने प्रेम पाश में बांध लिया। दुल्हन भी अपनी सुध-बुध खो बैठी। आनन्द की सरिता में दो बदन बहने लगे।

यह समय उसके जीवन का सबसे हसीन समय था। अपने आप में वह खोई रहती। घर का काम करते समय उसके चेहरे पर मुस्कराहट खेलती रहती। ऐसा

लगता जैसे उसके ख्वाबों में हुस्न ही हुस्न है। बहारें ही बहारें हैं। वह चलती तो लगता खूबसूरत फिज़ाएं आपस में गले मिल रही हों। बातें करती तो लगने लगता जैसे आबशार मीठी आवाज़ में गीत गा रही है।

रुकमणी ने छोटी सी दुनिया बसा ली थी। कुछ ही समय में उसने अपने आप को हालात के अनुसार बना लिया था। पास वालों के साथ घुल मिल सी गई थी। देहात की अनपढ़ लड़की इतनी जल्दी शहरी महौल में ढल जाएगी, देखने वाले हैरत में पड़ गए थे। वह पढ़ना लिखना भी सीख गई थी। उसे यूं लग रहा था जैसे वह तपते हुए मरुस्थल को पार करके नखलिस्तान में आ गई हो। उसका विवाहित जीवन सुखमय था। सुधीर उसकी अंधेरी रात में दीपक बन कर चमक उठा था। शाम को घर आता तो पत्नी के प्यार और स्नेह की बौछार से उसके तन मन की सारी थकान दूर हो जाती। सुधीर के गिर्द मण्डराती हुई वह मुस्कान के फूल बिखेरती रहती। उसकी चूड़ियों की खनक में वह प्यार का मादक संगीत पाता।

स्वर्ग भी इससे बढ़ कर शायद न हो, उन दोनों का मन यही गवाही देता। दिन इसी तरह गुज़रते गए। एक रात को जब सुधीर ने प्यार करने की इच्छा से पत्नी से छड़-छाड़ करनी चाही तो उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया।

"क्यों ?"

"है एक रुकावट !" उसने शरारत भरी नज़र से देखते हुए कहा।

"बीमार हो ?"

"यह बात तो नहीं।"

"फिर ?"

"और बात है।"

"मुझ से छुपाओ गी।"

"बूझने की कोशिश तो करो," उसने लुभावनी अदा से नेत्र तरेरते हुए कहा।

"मैं अपनी हार मानता हू।"

"बताऊं ?"

उत्सुक निगाहों से सुधीर पत्नी की ओर देखने लगा। उसके अत्यन्त सुन्दर और सुडौल चेहरे पर आनन्द और उल्लास थिरक रहा था।

"मैं···मैं···मां···बनने की उम्मीद से हूं।" लज्जायुक्त वाणी थी उसकी।

"सच।" सुधीर हर्ष नाद सा कर उठा। उसने उसे हर्ष और उत्तेजना के कारण अपनी बाहों में लेना चाहा।

"छोड़िए, छोड़िए।" उसने पति को बड़े प्यार और लुभावने ढंग से दुत्कारा।

अवश सा होते हुए उसने पूछा, "कितने दिन लग जाएंगे ?"

"अनाड़ी कहीं के।"

"क्यों ऽ—!" वह जैसे असमंजस में पड़ गया था।

"छोटा सा हिसाब भी नहीं आता।"

"तो तुम ही सिखा दो।"

"तीस को नौ से गुना करो।"

"30 × 9 यह तो 270 हुए।"

"इनमें से 30 दिन घटा दो।"

"घटा दिए।"

"इतने दिनों तक हमें उपवास रखना होगा।"

"इतना लम्बा समय सब्र रखना तो बड़ी कठिन बात है।"

"मैंने तो सुना था कि अंतिम दो तीन महीने ही परहेज़ करने की खास ज़रूरत होती है।

"मैं तो अभी से ही परहेज़ रखूंगी। वह भी पूरा।"

"इतना जुल्म न ढाओ, मेरी जान।"

"अब तो मेरी मर्ज़ी चले गी।"

"तुम जो भी हुक्म दोगी, बजा लाऊंगा। तुम्हारे आगे पानी भरूंगा। पर इस क्षेत्र में मेरी भी थोड़ी सी मर्ज़ी चल लेने दी जाया करे मेरी मल्लिका, उसने अदाब बजाने की अदा से कहा।

"अच्छा! सोचूंगी इस बात पर।"

"इस रहम दिली का शुक्रिया। पर एक बात पूछूं ?"

"क्या है ?"

"अभी से इतनी बेरुखी। जब तीसरा हमारे बीच आ गया तब जाने क्या होगा ? मुझे कहीं, भुला न देना। मां बन कर स्त्रियां पति को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लग जाती हैं। तुम्हारी यह लापरवाही मुझे कदापि सहन न होगी। कहे देता हूं।"

"हटो जी, तुम्हें तो अभी से डाह होने लगी है," पत्नी रूठ जाने के अंदाज़ से बोली।

प्यार की नोक-झोंक और छेड़-छाड़ के पश्चात् वह सोने लगे। रुक्मणी को तो शीघ्र ही नींद आ गई। उसे नींद बहुत प्यारी थी। बातें करते करते वह सो जाती थी। सुधीर जाग रहा था। उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा था। वह किसी और दुनिया में पहुंच गया। उसके हृदय रूपी सागर में आनन्द की लहरियां उठने लगा जैसे सागर में ज्वार आ गया हो। पास लेटी रुक्मणी ने करवट ली। चारपाई चरमराई। सुधीर का ध्यान उधर चला गया। नींद में मग्न वह अपनी पत्नी को निहारने लगा। वह वीनस की मूर्ति लग रही थी। सुधीर उसके यौवन रस से भरपूर एक एक अंग को तृष्ण नेत्रों से निहारने लगा। जैसे वह उन्हें पहली बार देख रहा हो।

स्तब्ध कमरा और गहरा सन्नाटा। भरपूर यौवन की गागर और अपूर्व सौन्दर्य की धनराशि उसके सामने अचेत पड़ी थी।

स्लीपिंग ब्यूटी में कितनी कशिश है, यह आज उसने जाना था। उस समूची देह को वह अपने हाथ से सहलाने लगा। उसके अंगों पर वह प्रेम-चिन्ह अंकित करने लगा। उसने चाहा कि वह उसे अपनी बांहों में भर कर उससे खूब प्यार करे। पर उसने उसकी प्यारी-प्यारी नींद में खलल डालना मुनासिब न समझा।

अपने आप को संयम में करते हुए वह लेट गया और सोने का यत्न करने लगा।

मातृत्व के भाव ने रुक्मणी में अद्भुत परिवर्तन ला दिया था। बसन्त के पतझड़ के बाद जैसे वह नई कोंपलों से भरने लगी थी। उसके अंगों में भराव आने लगा था। वह पूर्ण नारीत्व प्राप्त करने की ओर अग्रसर थी। उस में कुछ धार्मिक भावनाएं आ गई थीं। सुधीर के साथ वह शाम को घूमने जाती। उसे घूमने का शौक हो गया था। पीर की दरगाह में जा कर वह मनौती मानती। मंदिर में बड़ी श्रद्धा के साथ वह भगवान की मूर्ति पर फूलमालाएं चढ़ाती, प्रसाद बांटती। दम्पति में प्यार और बढ़ता गया।

एक दिन वह पति से सम्बोधित हुई, "देखिए!"

"क्या बात है?"

"यह थोड़ी सी जगह है न?"

"है तो।"

"यहां क्यों न गुलाब के पौधे लगा लूं।"

"ज़रूर। फूल जब खिलेंगे तो उन्हें मैं तुम्हारे जूड़े में गूंथा करूंगा।"

"यह नहीं।"

"तो क्या?"

"जब तुम बाहर जाया करोगे एक फूल मैं तुम्हारे कोट के कालर में लगा दिया करूंगी। ताकि उसकी भीनी-भीनी सुगन्ध तुम्हें मेरी याद दिलाती रहे।"

"और जब हम दो से तीन हो जाएंगे तब?" वह उसके करीब आ गया था। उसके गोल गुलाबी चेहरे को अपने हाथों में थामते हुए उसकी आंखों में आंखें डालते हुए कुछ कहने लगा।

"यह वक्त ऐसी शरारत का नहीं है।" पति को प्यार भरी ताड़ना करते हुए वह बोली।

समय बीतने लगा। उनके प्यार से महकती बगिया में एक ऐसा तूफान आया जिसने रुक्मणी के सुख-सौभाग्य को समाप्त कर दिया। बदनसीबी के एक ही झोंके ने उसके दाम्पत्य जीवन के चिराग को गुल कर दिया। सांझ की परछाईंयां ढल चुकी थी। रुक्मणी पति की प्रतीक्षा में बैठी हुई थी। सुधीर आज अत्याधिक लेट हो गया था। उसे गहरी चिन्ता खड़ी हो गई थी। न जाने आज उसका मन क्यों घबरा रहा था। उसे बुरे-बुरे से दृश्य दिखाई देने लगे थे। विचलित-सी कभी वह द्वार के अन्दर और कभी बाहर आती थी।

गत कुछ समय से नगर का माहौल बिगड़ा हुआ था। साम्प्रदायिक दंगों के कारण वातावरण में तनाव था। कुछ स्वार्थी नेताओं ने अपनी कुर्सी की खातिर एक आग-सी भड़का रखी थी। यह वह नेता लोग थे जिनके हाथों से सत्ता पिछले चुनावों में छिन चुकी थी। शान्ति भंग करने के वह ताबड़तोड़ यत्न कर रहे थे। धर्म युद्ध के नाम पर वह जनता को भड़का रहे थे। उग्रवादी तत्त्वों ने हत्याओं का.बाज़ार गर्म कर रखा था। कई मासूम और निर्दोष व्यक्ति मौत के घाट उतारे जा चुके थे। उन्हें गोलियों और बमों का निशाना बनाया जा रहा था। आज भी कुछ इस प्रकार की घटनाएं सुनने में आई थीं। रुक्मणी ज्यादा चिन्तित इसलिए थी क्योंकि यह घटनाएं उसी इलाके में घटी सुनाई दी थी जिसमें उसका पति अपने काम पर गया था।

पति की इन्तजार में वह द्वार पर खड़ी थी कि उसे एक पुलिसमैन आता दिखाई दिया। वह सीधा उधर को ही आ रहा था। व्यग्रता और उत्सुकतावश वह उसे निहारने लगी। पुलिस मैन उसी के सामने आ कर रुका।

"सुधीर नाम के नौजवान का घर यही है ?"

"जी हां, कहिए ?"

"आप उनकी...।"

"वह मेरे पति हैं। कहां हैं वे ?"

"यह पर्स और पता उसी का है ?" पुलिसमैन ने एक पर्स उसे पहचानने को दिया।

"उन्हीं का ही है।" पर्स रुक्मणी ने झट पहचान लिया था।

"मुझे आपको एक मनहूस खबर सुनानी है।"

"बताइए", व्यग्र भाव से पूछा उसने।

"जिस व्यक्ति की जेब से यह बटुआ निकला है वह अब इस दुनिया में नही है। बाज़ार में अचानक किसी सिरफिरे ने बम फैंक दिया। मरने वालों में यह युवक भी शामिल है।" पुलिस ने गम्भीर दुःख भरे शब्दों में सूचना दी।

रुकमणी की आंखें पथरा गईं। लुढ़क कर वह गिर जाती यदि पुलिसमैन ने उसे सहारा देकर न लिटाया होता। पास-पड़ौस के लोग आ गए।

उसे होश आया तो वह फूट-फूट कर रोने लगी। दहशत भरा सन्नाटा हाय, हाय करता हुआ मन को भींच कर मसल देना चाहता था। पड़ोसियों ने सांत्वना दी। घटना स्थल पर जाकर शव को घर लाया गया।

रुक्मणी के करुण क्रन्दन से दरो दीवार कांप रही थी। उसके काले चिकने बाल इस समय रूखे-सूखे से फैल गए थे। कोई नहीं था जो शब्दों में उसकी व्यथा को माप सकता।

यह किस जन्म का पाप है। कुछ समय पहले मांग में सिन्दूर था जो सदा के लिए मिट गया था। पति चला गया। भविष्य और वर्तमान को अपने कदमों के साथ मिटा कर चला गया।

सन्नाटे को गहराता हुआ रुक्मणी का हृदय-वेधी रुदन, जैसे करुणा स्वयं कराह रही हो। जाने वाले दूसरों को रोता हुआ छोड़ कर चले जाते हैं। वह कभी वापिस नहीं आते उनकी याद रह जाती है।

गरीब हो या अमीर, सबका यही अन्त है। सुधीर का हंसमुख चेहरा, वह चंचल गरिमा, उसके मधुर उष्ण आलिगन, उस की प्यार भरी आंखें और बातें— सब रह-रह कर याद आ रही थी। उसका जीवन दीपक बुझ गया था। जो इतने बड़े अन्धकार में एकमात्र आशा का प्रकाश था। अब चारों ओर हृदय को खा जाने वाला सूनापन छा रहा था।

अगले दिन दाह-क्रिया समाप्त होते-होते सांझ की छायाएं गिरने लगी थी। रुक्मणी का तन और मन थक कर चूर हो गए थे। उस का तो सब कुछ लुट चुका था।

पति की मृत्यु को कुछ दिन बीत गए थे। इस मौत ने रुकमणी की सज-धज छीन ली। देर तक वह बैठी रहती। चुपचाप कुछ सोचा करती। सांझ की उतरती धुंध में धीरे-धीरे उसकी दृष्टि जाकर लय हो जाती। तन-मन उस अन्धकार में डूब जाते।

इस दुनिया में वह अकेली रह गई। वह रोती रही, समय के पश्चात् उसका रोना रुक गया। इसलिए नहीं कि वह मृत्यु का शोक भूल गई, बल्कि इसलिए कि उसकी आंखों में आंसू न रहे थे। रोने से गम का बोझ चाहे हल्का हो जाए पर दिल के घाव नहीं भरते। वह हरे रहते हैं। रोने से लाभ भी क्या। इससे न तो जाने वाला कभी वापिस आता है और न तकदीर ही बदलती है।

जीवन निर्वाह उसके लिए भयंकर समस्या बन गई थी। उसे जीना था, अपने लिए नही तो होने वाले शिशु के लिए। अपने स्वर्गीय पति की निशानी के लिए।

रुकमणी की विमाता शोक संवेदना प्रकट करने उस के पास आई। घर से पलायन करने का बेटी का कसूर उसने भुला दिया था। वह बोली, क्या हुआ जो तू घर से बिना आज्ञा चली आई। चढ़ती उम्र में ऐसी सौ गल्तियां औलाद से हो जाती हैं। नाखूनों से मांस अलग नहीं किया जा सकता। मां-बाप को तो औलाद की गल्तियों को नज़रान्दाज़ करना ही पड़ता है। लोगों की हम क्यों परवाह करें। वह तो बोलते ही रहते हैं। किसी की उन्नति से उनके हृदय तो कुड़मुड़ाते रहते हैं। किसी के दु:ख में वह खुश होते हैं। किसी की मुसीबत में उन्हें सकून मिलता है। यह समाज स्वार्थी है। मुसीबत में कोई किसी की मदद को नहीं आता। अपने भी पहचानने से हट जाते हैं। फिर ऐसे समाज की क्यों परवाह की जाए।"

रुक्मणी शोक और गम की प्रतिमा बनी बैठी थी।

"बेटी, यह अनहोनी बात सुन कर मेरा कलेजा टूक-टूक हो गया। तेरा अब क्या होगा? किसके सहारे कटेगी इतनी लम्बी उम्र? औरत तो उस लता के समान होती है जिसे वृक्ष रूपी मर्द का सहारा चाहिए। सहारा न हो तो वह आधार विहीन लता की भान्ति डगमगा जाती है। इन बड़े-बड़े नगरों में कोई किसी का नहीं। कोई मदद करेगा भी तो पहले अपना स्वार्थ देखकर। इस कलियुग में तो औरत के गर्म-गोशत के भूखे नर तन धारी राक्षस तो तुम्हें कदम-कदम पर मिल जाएंगे। यह बड़े नगर तो नर्क बने हुए हैं। मन्दिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारों के पुजारी, अनाथाश्रम और और सेवा सम्मितियों के पदाधिकारी, धर्मशालाओं और विधवा आश्रमों के अध्यक्ष-समाज के यह बहुत से महानुभाव और श्रेष्ठ व्यक्ति अपनी कलुषित स्वार्थी और नीचतम इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। इन लोगों के रहम पर तुझे छोड़ कर मैं नहीं जा सकती। बेटी मेरे साथ चल। जैसी भी रूखी-सूखी होगी, गुज़ारा कर लेंगे। इतने बड़े शहर में तू अकेली कैसे रहेगी। यह बात बड़ी चिन्ता की है जो मुझे रह-रह कर परेशान कर रही है। शहर के भेड़िये तुझे दिन-दिहाड़े उठा कर ले जायेंगे। तू है भी सीधी-सादी। ज़रा सी हमदर्दी के कायल हो जाती है।

रुक्मणी मां के विचारों और उसकी बातों को सुनकर दंग हुई जा रही थी वह जानती थी कि उसकी मां चाहे ग्रामीण नारी है पर वह इतनी भोली भाली नहीं। उसने घाट-घाट का पानी पिया है। उसने दुनिया देखी है वह बड़ी घाघ है।

मां की बातों में वह आ गई। नगर में उसका निर्वाह होना भी कठिन था। वह अपनी मां के साथ वापिस गांव चली आई। गांव के लोग रूढ़ीवादी विचारों में जकड़े हुए थे। उनमें ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्य की भावनाए थीं। कुछ दिनों तक तो उन्होंने उस अभागिन के प्रति सहानुभूति दिखाई। पर शीघ्र ही वहां की बूढ़ी औरतें उस पर फबतियां कसने लगीं और व्यंग्य बाणी छोड़ने लगीं। रुकमणी का घायल हृदय हाहाकार कर उठा। उसका वहां रहना दुशवार हो गया।

उसकी विमाता रुक्मणी की देख रेख में रहती। मां का यह व्यवहार उसके

जख्मों पर मरहम का काम करता था। समय आने पर रुकमणी ने चांद से बच्चे को जन्म दिया। यह बच्चा अपने बाप का रूप था। उसकी प्रति मूर्ति था। रुक्मणी को अपने टूटे जीवन का सहारा मिल गया। जीने का उसे बहाना मिल गया। बच्चे की देख-रेख कर वह दिन काटने लगी।

बच्चा जब कुछ बड़ा हुआ तो रुक्मणी की मां ने उसके समक्ष पुर्नविवाह का प्रस्ताव रखा। उसे यह प्रस्ताव अच्छा न लगा। उसने इसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। उसकी मां ने आत्मीयता एवं प्यार से उसे कहा, "मैं तेरे दुख दर्द और तेरी भावनाओं को समझती हूं। पर बेटी अपने भविष्य का कुछ तो ख्याल कर। भावुकता से काम लेना छोड़। यह तो देख कि अभी तेरी उम्र क्या है।"

यह समाज क्या सोचेगा, यह लोग क्या कहेंगे, मां।

"यह लोग पहले क्या कुछ कम कहते हैं। इतना तो सता रखा है इन्होंने। इस तंग दिल और संकीर्ण विचारों वाले समाज, इन जाहिल और घटिया लोगों की परवाह करती है मेरी जूती। हमें जब भूख से तड़प कर रातें गुज़ारनी पड़ी हैं तो इन लोगों में से हम पर किसी ने भी जरा सी दया दिखाई है? किसी ने हमारी बात पूछी है? हमारी तनिक भी सहायता की है? किसी ने हमारा दुख-दर्द बांटा है?

हां, जख्मों पर नमक जरूर छिटका है। किसी ने थोड़ा, किसी ने ज़्यादा। अपना बुरा-भला तो हमने खुद सोचा है। मां-बाप सारी उम्र बैठे नहीं रहते। आज मुझे कुछ हो जाए तो यह सारे तेरी जान के दुश्मन बन जाएंगे। तुझे चैन से जीने नहीं देंगे। तू लाख सती-सावित्री बनी फिर। यह तुझे लांछित और कलंकित जरूर करेंगे। गरीब पर तो हर कोई ज़ोर चलाता है। हम लोगों की बात छोड़। मार इन्हें गोली। जमाने की रफ्तार देख। सारे महापुरुषों और समाज सुधारकों ने विधवा विवाह पर ज़ोर डाला है। हर कोई सुलझे विचारों वाला प्रगतिशील व्यक्ति विधवा विवाह, को उत्साहित करेगा। शहरों में तो पोते-पोतियां वाली भी पुर्नविवाह करवा लेती हैं। तेरी तो उम्र ही क्या है।

"मां, मुझे तो यह अच्छा नहीं लगता। घर के किसी कोने में पड़ी रह कर वक्त कटी कर लूंगी।"

"यह जीवन रो धो कर काट लेने को तो दिया नहीं है भगवान् ने हमें।'

"मेरी ओर से तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। पर लुच्चे, लफंगे हमें चैन से नहीं रहने देंगे। बुरा न मनाना, तुम्हारा पांव भी कहीं ऊंची-नीची जगह टिक सकता है?"

"मुझ पर विश्वास करो मां, ऐसा कदापि नहीं होगा।"

मैं जानती हूं तू ऐसी वैसी बात नहीं करेगी। कोई बदमाश गुंडा भी तुझे खराब कर सकता है। इस गांव के लफंगों ने तो शर्म हया ही बेच खाई हैं। कई तो तुझे भी बुरी नजर से देखते फिरते हैं। कोई इन्हें पूछने वाला भी तो नहीं। न कोई पंचायत है न पुलिस। अगर है तो पैसे वालों की।

रुक्मणी गहरी सोच में पड़ गई थी। मां की बातों में सच्चाई थी। वह जानती थी कि अगर उसने मां की बात न मानी तो वह ही उसकी बड़ी दुश्मन बन जाएगी। औरत-औरत की शत्रु होती है। जितना जुल्म औरत ने औरत पर ढाया है उतना शायद मर्द ने नहीं।

"मेरे बच्चे का क्या होगा।"

तू समझती है यह मेरा कुछ नहीं लगता। इसे मैं अपने कलेजे के साथ लगा कर रखूंगी। रुक्मणी की मां ने स्नेह सने स्वर में कहा। विवश हो कर उसे मां की बात माननी ही पड़ी।

रुक्मणी का पुनर्विवाह बड़ी सादगी के साथ कर दिया गया। पर विवाह नहीं था। विवाह का नाटक था। एक ढोंग था। उसकी मां बड़ी मक्कार थी। इस सौदे में उसने खूब हाथ रंगे थे। काफी पैसे बटोरे थे उसने। उसका यह पति रंडियों का दलाल था। विवाह के उसने पहले भी कई नाटक रचे थे। कई ऐसी अबलाओं को को वह या तो आगे बेच देता था या पेशा करने पर मजबूर करता था। उसे अमानवीय यातनाएं देकर इस बात पर विवश कर दिया गया था कि वह कोठे पर बैठ कर जिस्म फ़रोशी करे। गर्म-जोश्त के सौदागरों का मनोरंजन करके धन कमाएं। कोठे पर सज-धज कर बैठ कर वह दौलत को ही अपना धर्म समझे। उसे गाना और नृत्य सिखाया जाने लगा। उसका वहां दम घुटता था। उसने चाहा कि वह वहां से भाग निकले। पर वह ऐसे पिंजरे में बन्द थी कि चाहते हुए भी अपनी चेष्टाओं में सफल न हो सकी। दिन भर पांवों में घुंघरु बांध कर वह नाचने का अभ्यास करने लगी। हर किस्म के ग्राहक वहां आते थे। रुक्मणी से वह हीरा बाई बन गई थी।

अजरा और शकीला भी उसी कोठे पर रहती थीं। वह उस की हम उम्र थी। समय पा कर वह उसके पास चली आती थीं। उनको उससे हमदर्दी थी। वह उसे कहतीं कि अब तो परिस्थितियों से समझौता करना ही ठीक होगा। पर उसका मन वहां नहीं लगता था। नर-तन-धारी भेड़ियों से उसे डर लगता था। पर मार-पीट कर उसे वेश्या बना दिया गया। न चाहते हुए भी उसे वहां सब कुछ करना पड़ा। उसके संस्करण उससे छूट गए थे।

नित्य नए ग्राहक आते। उसकी देह का सौदा किया जाता। इस पेशे से उसे घृणा थी। पर जिस व्यक्ति ने मोल तोल करके इतने रुपए दिए हों उन पैसों का हक तो उसने लेना ही था। कोठे के भी असूल थे। ग्राहक से पूरे पैसे लेकर उसको हर तरह से खुश और संतुष्ट करना कोठे का सुनहरी असूल था। इससे कोठे का क्रेडिट बनता था। ग्राहकों की तृप्ति न होने की दशा में कोठे की साख गिर जाने का भय था।

रशीदा ने चाहा कि वह वहां से भाग निकले। पर भाग कर जाए कहां। उस मां के पास जिसने उसे यहां भेजा था। उसने चाहा कि ऊपर से छलांग लगा कर आत्महत्या कर ले। पर ऐसा कदम उठाना हर व्यक्ति के वश की बात नहीं होती। इसके लिए बड़े दुस्साहस की ज़रूरत होती है। उसने मन को मार लिया और उस महौल में ढल गई। हृदय को पत्थर बना कर वह ग्राहकों को समर्पण करने लगी। विवशता के बंधन को उसने अपने गले में डाल लिया।

उसके बदन और उसकी आत्मा पर से उसका अधिकार उठ गया था। उसकी इस देह का मालिक थे उसके कथित शौहर अथवा उसके ग्राहक।

उसके अनेक शौहर थे। एक, एक रात के कई पति। उसका घर नहीं था, बल्कि कोठा था जिसे नित्य प्रति बदल कर आने वाले मेहमानों के लिए सजाया जाता था। उस कोठे में दुल्हन एक ही थी जो वहीं रहती थी। दुल्हे नित्य प्रति बदलते थे। जो उसकी कीमत चुकाता था वही कुछ समय के लिए उसका पति बन जाता था। वह तो किराए की दुल्हन थी। कोठे पर धन की पूजा होती थी। कोठे वालियों को भी यही हिदायत थी कि वह धन को सर्वोपरि समझें। धन वालों को खूब फंसाएं। उनसे इश्क और प्यार करें। पर दिल को संभाल कर रखें। ऐसा न हो कि यह किसी के कदमों में चला जाए। वह अपना घर बसाने और बच्चों की कामना न करें।

कोठे पर न जात-पात थी, न छुताछात का सवाल। न कोई बड़ा था न छोटा। सब जवान थे, न कोई बूढ़ा, न बालक।

हर रात वह घुंघरु बांधती ग्राहकों के सामने नाचती। वह उस पर लट्टू हो, होकर नोट फेंकते। उसकी बलैयां लेते। तबलची तबले पर थाप देते। हारमोनियम बज उठता। और वह छमछमा उठती। मस्ती में झूमते हुए कोई उस पर शराब छिटकता। नाच जब समाप्त होता तो कोई खास मेहमान उसका हाथ पकड़ लेता। वह उसके लिए दुल्हन एक रात की ही बन कर रह जाती।

उस कोठे की बाई जो अधेड़ आयु की थी। इस उम्र में भी वह खूब सिंगार करती थी। गालों में पान के बीड़े दबाए रखती। उसका कोई पुराना ग्राहक आ जाता तो वह उसके गालों पर कचोटी काट लेता। बड़ी अदा के साथ वह शरमा जाती। उसके गाल डूबते सूर्य की भान्ति लाल हो जाते। उसकी यह अदा उसके पुराने यारों को पसन्द आती। ऐसी अदाएं दिखाते हुए उम्र में वह कई साल छोटी लगती।

समय बीतने पर हीरा बाई ने अपना अलग कोठा स्थापित कर लिया था।

रुक्मणी के विवाह के पश्चात् उसकी विमाता ने उसके बेटे को घर से निकाल फेंका था। किसी तरह अनाथालय में पहुंच कर उसने वहां परवरिश पाई थी।

रतन उसका बेटा था। उसके जिगर का टुकड़ा। अभी वह दो साल का भी नहीं

हुआ था कि वह अपनी मां से अलग कर दिया गया। पुत्र वियोग में तड़पती हुई मां भला अपने लख्ते-जिगर को कैसे पहचान न पाये।

उर्मिला ने रुक्मणी की सारी करुण गाथा सुनी। अगले दिन वह उसे पुनः उसके पुत्र के पास ले गई।

वात्सल्य प्रेम से ओत-प्रोत हो वह भावुक सी हो उठी थी। रतन को अपने सीने से लगाते हुए आनन्दाश्रुओं की धाराएं उसकी आंखों से बहने लगी थी। मां को पुत्र ही तो दुनियां में सब से प्यारी चीज़ होती हैं। वर्षों से तड़प रही मां की ममता को तृप्ति मिली थी। रतन को भी इस बात की आज अनुभूति हुई कि मां की महत्ता क्या है ? उसका प्यार कितना पवित्र और महान् है।

रतन को कुछ महीनों की साधारण कैद की सजा हो गई थी। रुक्मणी, उर्मिला और अन्य आत्मीयजनों को गहरा दुःख हुआ था पर रतन के लिए वह जेल, जेल न थी। अपने मैत्री पूर्ण सद्व्यवहार से उसने कई कैदियों को अपने साथी और उपासक बना लिया था उसके सम्पर्क में आकर कई कठोर मुजरिमों ने जुर्म का जीवन छोड़ कर सुमार्ग पर चलना सीख लिया था।

रुक्मणी तो हर रोज़ ही अपने बेटे से मुलाकात करने आती। उसके लिए नाना प्रकार के मिष्ठान और अन्य भोज्य पदार्थ लाती। बेटे को अपने हाथों से बनाई चीज़ें खिला कर उसे सुकून मिलता था।

माधवी एक दिन अपनी सखी उर्मिला और रुक्मणी से मिलने आई। उसने उन दोनों से अनुरोध किया कि वह उसके घर चलें। रुक्मणी ने झिझक दिखाई।

"आपको हमारे यहां चलने में एतराज है ?"

"नहीं बेटी, यह तो हमारे लिए परम प्रसन्नता की बात होगी। पर शरीफ घरानों में मेरा जाना क्या अच्छा लगेगा।"

"हमें तो न अच्छा लगने वाली कोई बात नहीं लगती।"

"यह अनुचित सा लगेगा।"

"क्यों ! आप हमारी मां हैं गंगा सी पावन और पवित्र। कीचड़ में भी कमल के समान हैं आपने हमारे लिए रतन भैया को आपकी कोख से जन्म लिया है। वह मेरे लिए सगे भाई से भी बढ़ कर है।

"रुक्मणी सोच में पड़ गई थी।"

"आप मुझे निराश कर देंगी तो मैं समझूंगी कि आप मुझे अपनी बेटी बनाने से इन्कार कर रही हैं।"

"यह बात तो नहीं। अपनी सहेली से तो पूछ ले।"

माधवी ने पास बैठी उर्मिला की ओर कनखियों से देखते हुए शरारत भरी मुस्कान से कहा, "सखी के इलावा अब तो यह मेरी और भी कुछ लगती है।"

"और क्या।"

"बहुत कुछ ! मौका आने पर बताऊंगी।"

"बता दे न।" उर्मिला ने आग्रह भाव से कहा।

"तू अपने दिल से ही पूछ ले।"

"मैं क्या जानूं।"

"उस वक्त सब कुछ जान जाएंगी जब चार दिन भी सख्त स्वभाव वाली ननद के साथ काटने पड़े।"

उर्मिला झेंप कर रह गई थी।

उर्मिला के पति द्वारा वह कानूनी तौर पर मृत घोषित कर दी गई थी। सब से पहले यह जरूरी था कि उसे अदालती कागजों में जिन्दा साबित किया जाए ताकि वह पति की जायदाद की मालकिन बन कर उसे प्राप्त कर सके।

पति की जायदाद की उत्तराधिकारी बनने की उर्मिला की कोई इच्छा नहीं थी। उसका पति अमीर था। ज्यादा पैसे ने ही तो उसे इतना लम्पट और दुराचारी बना दिया था। अमीरों की दुनियां और उनके एय्याशी भरे जीवन से उसे नफरत हो चुकी थी।

पैसा जब किसी के पास से जाता है तो वह भावुक हो जाता है और जब कोई ज्यादा अमीर बन जाता है तो उस मनुष्य का हृदय कठोर हो जाता है। दौलत के नशे में इन्सान अपनी इन्सानियत खो बैठता है। उसे घमण्ड हो जाता है। वह हवा में उड़ने लगता है। ऐसे विचार उर्मिला के मन में कटु अनुभवों के कारण बने हुए थे।

पर इन्सपैक्टर ज्ञान शंकर कौल ने उसे समझाया कि धन उसी हालत में बुरा होता है जबकि मनुष्य उसका गुलाम हो जाता है। निर्धनता तो इस युग में घोर पाप और अभिशाप है। धन के बिना तो आदमी की कोई हैसियत ही नहीं।

निर्धन व्यक्ति सदाचारी नेक शरीफ और ईमानदार हो, उसके इन गुणों की कोई कदर नहीं। निर्धन सहानुभूति दिखा सकता है, संवेदना प्रकट कर सकता है पर वह किसी की खास मदद नहीं कर सकता। परोपकार के कार्य भी धन से ही सम्पन्न किये जा सकते हैं।

उर्मिला उनकी बातों को मान गई। वह अपने पति की जायदाद की एकाधिकारिणी बन गई। बन्द पड़ा कारोबार पुनः आरम्भ कर दिया गया। उसके पति के अनुचित व्यवहार के कारण कर्मचारी जो कार्य छोड़ने पर विवश हो गए थे वह पुनः लौट आए। उसके सौम्य, गम्भीर और प्रभावशाली व्यक्तित्व से प्रेरित हो कर तमाम कर्मचारी ड्यूटी को कुशलतापूर्वक सरअंजाम देने लगे। व्यापार उन्नति करने लगा।

एक बड़ी फैक्ट्री व्यभिचार का अड्डा बनी हुई थी। वहां कई गन्दी औरतें थीं। वे उर्मिला के पति के समय की थीं जो उसने अपने मनोरंजन के लिए रखी हुई थीं। उनकी योग्यता उनका शारीरिक सौंदर्य ही था। कमाई भी वह इसी की खाती थीं।

'यथा राजा तथा प्रजा' वाली कहावत कई कर्मचारियों ने सिद्ध कर दी थी। फैक्ट्री का वातावरण दूषित था। बहुत से कर्मचारी अनुशासन में न रह कर बिगड़ गए थे।

उर्मिला के काम सम्भालते ही वह गन्दी युवतियां रातों-रात बदल गईं। कहने लगीं, "हमें तो मजबूर करके खराब किया जाता था। हमारी भी तो इज्ज़त है। हम ने भी तो अपना घर बसाना है। इस समाज में रहना है। हम क्यों नीच काम करें ? क्यों अपने कुल को बिगाड़ें।" वहां कुछ ऐसी युवतियां थीं जिन्हें घाट-घाट का पानी पीने का चसका पढ़ा हुआ था। मेहनत मज़दूरी करने से वह कतराती थीं। उन्हें अब अपनी दाल गलती दिखाई न दी। वह वहां से सरक गईं। फैक्ट्री में नुमाया सुधार आने लगा। उसका महौल स्वच्छ हो गया। उत्पादन बढ़ गया। उसकी आय बढ़ गई।

मज़दूरों की भलाई और कल्याण के कार्य किये जाने लगे। को-आपरेटिव बेसिज पर किचन खुलवा दी गई। कुछ मज़दूरों की घर वालियां जो अपने घरों में निठल्ली पड़ी रहती थीं और चाहते हुए भी कोई काम उन्हें नहीं मिल रहा था इस किचन में उनके लिए पार्ट टाईम नौकरी की व्यवस्था कर दी गई। मज़दूरों को सस्ता और स्वच्छ भोजन समय पर सुविधा से मिलने लगा। फैक्ट्री की ओर से कोई खास खर्चा किये बिना मज़दूरों को आराम हो गया। कार्य कुशलता बढ़ गई। अन्य सुविधाओं के इलावा यह घोषणा भी कर दी गई कि मिल को जो अतिरिक्त लाभ होगा उसका भाग उन्हें बोनस के रूप में नकद बांट दिया जाएगा। इस घोषणा ने कर्मचारियों में खुशी और नया जोश भर दिया था। उनका मनोबल और उत्साह बढ़ गया। जिस कार्य को वह बेगार और बोझ समझते थे, उसे ही वह अपना निजी काम समझ कर गम्भीरता और रुचि ले कर करने लगे। मिल को वह अपनी मां समझने लगे। काम की सम्भाल होने लगी। मिल मालकिन के प्रति मज़दूरों में अपार श्रद्धा भाव उत्पन्न हो गए।

मिल के प्रबन्ध की वह स्वयं देखभाल करने लगी। उसका निजी जीवन त्याग और सादगी सम्पन्न था। वह खुद खूब मेहनत करती थी। कर्मचारियों के दुख-सुख में शरीक होने लगी। पवित्रता की दिव्य ज्योति से वह उद्भासित दिखाई देती थी। उसके मुख पर वेदना मिश्रित सकरुण धैर्य छाया रहता था। उसके व्यक्तित्व में गाम्भीर्य था। सादी साड़ी में वह प्रेरणा की प्रतिमा दिखाई देती थी। अपने प्रियतम रतन का उसे सदा ख्याल रहता था। उसकी मां रुक्मणी उर्मिला के लिए पूजनीय थी। रुक्मणी ने ही उसे मुसीबत में और बुरे दिनों में सहारा दिया था। उसे मां का दुलार दिया था उसे उसका सहारा न मिलता तो जाने उसकी क्या दशा होती।

उर्मिला ने मजबूर करके उसे अपने पास रखा। वह स्वयं उसकी देखभाल और उसकी सेवा सुश्रूषा करती। उसकी भावनाओं का आदर और उसकी आज्ञा पालन करना वह अपना पावन कर्त्तव्य समझती थी।

अपने सद्व्यवहार उज्जवल चरित्र और जेल अधिकारियों पर अच्छे इम्प्रेशन के कारण रतन की कैद का समय घटा दिया गया। उसकी रिहाई के हुक्म जारी कर दिये गए। जेल के उसके साथियों ने उसे भाव-भीनी विदाई दी। किसी को भी विश्वास नहीं होता था ऐसा व्यक्ति कत्ल जैसा कोई जुर्म कर सकता है। उसके साथी सोचते थे कि अगर इससे ऐसा कुछ हो गया है तो ज़रूर कुछ परिस्थितियां ही ऐसी होंगी जिन्होंने इसे ऐसा कदम उठाने पर मजबूर कर दिया होगा। अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए अच्छाई को बुराई के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ता है।

राम कब चाहते थे कि युद्ध हो। उन्हें लड़ना पड़ा, रावण के विरुद्ध। उसका घमण्ड और उसका अहंकार तोड़ने के लिए। कुछ ऐसे ही हालात महाभारत के युद्ध का कारण बने। पांडव कब चाहते थे कि वह अपने ही सगे सम्बन्धियों के खून से अपने हाथ रंगे। इन्सान की आत्मा उसे जुल्म और अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए वंगारती है। समय आने पर सच्चाई के रास्ते पर चलता हुआ इन्सान कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। वह अपनी जान पर खेल जाता है।

जेल के थोड़े से समय में ही रतन के साथियों ने उससे काफी कुछ सीखा और अपने आप में सुधार लाने के यत्न किये थे। रिहाई के समय उर्मिला माधवी और रुक्मणी इत्यादि आत्मीयजन उसे लेने आए। फैक्ट्री के कार्यकर्ताओं ने जब रतन की कहानी सुनी तो उनके मन में उसके प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न हो गई। उसे वह अपना मुक्तिदाता समझने लगे। रतन के कारण ही तो उन्हें अपने अत्याचारी और व्यभिचारी मालिक से छुटकारा मिला था।

फैक्टरी में ही रतन रहने लगा। उसे वहां सम्मान पूर्ण स्थान दिया गया। प्रबन्ध का बोझ उर्मिला ने उसके कन्धों पर डाल दिया था। दोनों ओर के सम्बन्धियों ने उर्मिला और रतन को विवाह सूत्र में बंध जाने के लिए प्रेरित किया। इस कार्य में माधवी का महत्त्वपूर्ण रोल था। अन्ततः उनका प्रणय सम्बन्ध विवाह बंधन में बदल गया। उर्मिला की सूनी मांग में सिंदूर सजने लगा। विधवा से वह सधवा हो गई।

मिल के मज़दूरों की हालत में कुछ सुधार हुआ था। उर्मिला के प्रभाव में आ कर उन्होंने कई बुराइयों को तिलांजलि दे दी थी। मदिरा जैसे नशीले और नाशक पदार्थों का सेवन उन्होंने त्याग दिया था। पहले अनेक मज़दूर औरतें इसका सेवन करती थीं। मज़दूर नशे में अपनी पत्नियों को पीटते थे। उनके घर कलह का अड्डा

बने हुए थे। झगड़ा बढ़ जाता था। ताड़ी और हूच पी कर कई मज़दूर हर साल अपनी जानें गंवा बैठते थे। शैतान के इस पानी को उन्होंने त्याग दिया था।

रतन भी समझता था कि मज़दूरों की भलाई करके और उनके मनों को जीत कर, कार्य में और कुशलता लाई जा सकती है। उनकी सुविधा के लिए कुछ और कदम भी उठाए गए। पर उनके बुनियादी जीवन स्तर में सुधार नहीं आ रहा था।

गहरी सोच के पश्चात् रतन ने इसका सही कारण ढूंढ निकाला। मज़दूर अनपढ़ थे। रूढ़िवादी विचारों में वह जकड़े हुए थे। परिवार नियोजन का वह इस युग में महत्त्व को नहीं समझते थे।

मज़दूरों को उनके खाली समय में पढ़ाने की व्यवस्था की गई। साथ ही उनका ध्यान इस ओर दिलाया जाने लगा कि सीमित परिवार रखने में ही उनका और उनके बच्चों का कल्याण है। मज़दूर वर्ग को अपने नये मालिक में अथाह श्रद्धा थी। उसके विचारों से वह प्रभावित थे। उनके प्रत्येक कथन को वह वेद वाक्य समझते थे। उसकी ही बात पर अमल करने के लिए वह तत्पर थे। रतन के स्वभाव और चरित्र में कुछ ऐसे गुण थे और बात कहने का ढंग कुछ ऐसा था कि उसका उन पर नुमायां असर पड़ता था। मिल के कर्मचारी अपने आप को एक ही परिवार के सदस्य समझते थे। परिवार नियोजन अपनाने से उनके स्वास्थ्य और धीरे धीरे उनके जीवन के हर पहलू पर अच्छा और सुखद प्रभाव पड़ने लगा। परिवार को अच्छा और सुखी बनाने का उन्हें अचूक फार्मूला मिल गया। वह अपने नये मालिक के तह दिल से आभारी थे।

□□□